पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
७६	८	नवर्त्ते	निवर्त्ते
८४	१६	परमाण	परमाणु
८८	४	परमाण	परमाण
१०५	११	संजागे	संजोगे
१०७	१२	किल्विपीकाना	किल्विपीकानाम
१२२	१६	मज्जन	मंज्जन
१२३	३	गेरूं	गेरू
१३३	७	लड़की	लकड़ी
१३४	२	अनथदण्ड	अनर्थदण्ड
१३६	६	वर	संवर
१३६	६	कायसा	वायसा
१४४	१०	(१)	१
१५६	१	विवण	विवर्ण
१६३	१०	खली	खुली
१६५	११	उगणी-	उगणीम
१७३	३	आचार	आचा
१७४	हेडिंग	किया	क्रिया
१७५	११	माहित्थिया	माहत्थिया
१७६	१०	जीमका	जिमकी

श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥ अथ पच्चीस बोलको थोकड़ो लिख्यते ॥

✻ मङ्गलाचरण ✻

॥ श्लोक ॥

अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिता सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराःपूज्या उपाध्यायकाः
श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥

॥ गाथा ॥

गइ जाइ कायेंदिय पज्जय पाणा तणुजोग उवओग कम्मं च । ठाणं इंदिय विसयं मिच्छा-तत्तायाचेव दंडयखलु लेस्साज्झाणं च दिट्ठि ॥१॥ छयदव्व रासि गिहत्थवयाणि वणिणवयं चेव भंगं चरित्तं । पयाणि पणवीस पयाणि कहिओ सव्वगणुना भगवया नायपुत्ते ण ॥ २ ॥ चउ पञ्च छय पञ्च छय दसगहं पञ्च पन्नर बारसं अट्ठ

च । चउदस तेवीस दस नव अट्ठ चउवीसं छय चउ तिण्हि छय दो वि चेव ॥ ३ ॥ बारस वया समणोवासयाणं महव्वया पञ्च व तहा मुणिंदस्स । एगोणपन्नास भंग पञ्च चरियं णेयव्वा अस्सिं अणुकम्म भेया ॥ ४ ॥

गइ—गति चार
जाइ—जाति पांच
काय—छकाय
इन्द्रिय—इन्द्रिय पांच
पज्जय—पर्याप्ति छ
पाण—प्राण दश
तणु—शरीर पांच
जोग—जोग पन्नरह
उवयोग—उपयोग बारह
कम्म—कर्म आठ
ठाण—गुणठाण चउदह
इन्द्रियविसय-इन्द्रिय विषय तेवीस

मिच्छा—मिथ्यात्व दश
तत्त—तत्त्व नव,
आया—आत्मा आठ
दण्डय—दंडक चोवीस
लेस्सा—लेश्या छ
दिट्ठि—दृष्टि तीन
ज्झाण—ध्यान चार
दव्व—द्रव्य छ
रासि—राशि दो
गिहत्थवयाणि-श्रावक व्रत बारह
महव्वय—महाव्रत पांच
भङ्ग—भांगा एगोणपचास
चारित्त—चारित्र पांच

१ पेहलेवोले गति च्यार।
२ दुजे वोले जात पांच।
३ तीजे वोले काय छव।
४ चोथे वोले इन्द्रिय पांच।
५ पांचमें वोले पर्याय (पर्याप्ति) छव।
६ छठे वोले प्राण दश।
७ सातमें वोले शरीर पांच।
८ आठमें वोले योग (जोग) पन्नरह।
९ नवमें वोले उपयोग वारह।
१० दशमें वोले कर्म आठ।
११ इग्यारमें वोले गुणठाणा १४ (गुणस्थान चवदे)।
१२ वारमें वोले पांच इन्द्रियांकी तेवीस विषय।
१३ तेरमें वोले मिथ्यात्व दश और पनरह, कुल पच्चीस।
१४ चउदमें वोले नव तत्वको जाणपणो।
(छोटी नवतत्वका ११५ वोल, वड़ी नव-

तत्वका भेदानभेद घणा)

१५ पन्नरहमें बोले आत्मा आठ।

१६ सोलमें बोले दंडक चोवीस।

१७ सतरमें बोले लेश्या छव।

१८ अठारमें बोले दृष्टि तीन।

१९ उगणीशमें बोले ध्यान च्यार।

२० वीशमें बोले पट् (छव) द्रव्यका तीस भेद।

२१ एकवीशमें बोले राशि दोय—जीव राशि, अजीव राशि।

२२ बावीशमें बोले श्रावकरा बारह व्रत।

२३ तेवीशमें बोले पांच महाव्रत साधुजीका।

२४ चावीशमें बोले गुणपचास भांगाको जाणपणो

२५ पचीशमें बोले चारित्र पांच (पांच प्रकारका)

॥ विस्तार सहित ॥

१ पहिले बोले गति ४. गति किसको कहते हैं? गति नामा नामकर्मके उदयसे जीवकी पर्याय

विशेषको गति कहते हैं। गतिके कितने भेदहैं? च्यार हैं:—नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति।

२ दुजे बोले जाति ५, जाति किसको कहते हैं? अव्यभिचारी सदृशतासे एक रूप करनेवाले विशेषको जाति कहते हैं। अर्थात वह सदृश धर्मवाले पदार्थों को ही ग्रहण करता है। जातिके कितने भेद हैं? पांच हैं:—एकेन्द्रिय, वेन्द्रिय, तेन्द्रिय, चउरेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय।

३ तीजे बोले काय ६, काय किसको कहते हैं? त्रस, स्थावर नाम कर्मके उदयसे आत्माके प्रदेश प्रचयको काय कहते हैं। कायके कितने भेद हैं? छव हैं—गोत्र-पृथ्वीकाय. अपकाय. तेउकाय: वायुकाय. वनस्पतिकाय, त्रसकाय। नाम—इन्द्रीथावरकाय. वंबीथावर-काय. सुमितिथावर काय, पयावचथावर काय. जंघम काय।

पृथ्वी काय—

माटी, हींगलु, हड़ताल भोडल, भाठो, हींग, पन्ना आद देइने सात लाख जात है, एक कांकरेमें असंख्याता जीव श्रीभगवंत फरमाया है, पृथ्वी कायरो वर्ण पीलो है स्वभाव कठोर है, संठाण मसुरकी दालरे आकार है, पृथ्वीकायका कुल १२ लाख क्रोड़ है, एक परजापतकी नेसराय असंख्याता अपरजापत है।

अपकाय—

वरसाद-रोपाणी, ओसरो-पाणी, गड़ारो-पाणी, समुद्ररो-पाणी थयरो-पाणी, कुआ वावड़ीरो पाणी, आद देइने सात लाख जात है, एक पाणीरी बूंदमें असंख्याता जीव श्रीभगवंत फरमाया है एक परजापतकी नेश्राय असंख्याता अपरजापत है. अपकायरो वर्ण लाल है. स्वभाव ढीलो है. संठाण पाणीके परपोटे माफक है, उसका कुल ७ लाख क्रोड़ है।

तेउकाय—

अग्नि, झालको अगनि, बीजलीकी अग्नि; घांसरी अग्नि उल्कापात आददेइने सात लाख जात है, एक अग्निरे चीणक (पतंग) में असंख्यात जीव श्रीभगवंत फरमाया है, एक प्रजापतकी नेसराय असंख्यात अप्रजापत है, तेउकायरो वर्ण सफेद है; स्वभाव उष्ण (गरम) है, संठाण सुइके भारे माफक है, सुइरी तरह अग्निरी झाल नीचेसे मोटी उपरसे पतली, उसका कुल तीन लाख क्रोड़ है।

वाउ काय

उडणीया वाय, मंडणीया वाय, घण वाय, तण वाय. पूरव वाय. पश्चिम वाय आद देइने तीन लाख जात है. एक फउंकमांहि (फुंकमें) असंख्याता जीव श्री भगवान फरमाया है. एक प्रजापतकी नेसराय असंख्याता अप्रजा-

वा, मकोड़ा, कानखजुरा आदि देइने दोय लाख जात है, उसको कुल ८ लाख क्रोड़ है।

३ चौरेन्द्रिय-एक काया, दूजो मुख, तीजो नाक चौथी आंख ये च्यार इन्द्रीयां होवे उसको चौरिन्द्रिय कहिये जैसे—माखी डांस, मच्छर, भमरा, टीडी, पतंग्या, (पतंगीहा) कसारी आद देइने दोय लाख जात है। उसका कुल ९ नव लाख क्रोड़ है।

४ पञ्चेन्द्री—एक काय, दूजो मुख, तीजो नाक, चौथी आंख, पांचमो कान ये पांच इन्द्रियां होवे उसको पञ्चेन्द्री कहिये।

छकाय एक महूर्तमें एक जीव उत्कृष्टा कितना भव करे? पृथ्वीकाय, अप्पकाय, तेउकाय वाउकाय एक महूर्तमें उत्कृष्टा १२८२४ भव करे बादर वनस्पतिकाय एक महूर्तमें उत्कृष्टा ३२००० भव करे

सूक्ष्म वनस्पतिकाय एक महूर्तमें उत्कृष्टा

६५५३६ भवकरे

बेन्द्रिय एक मुहूर्त्तमें उत्कृष्टा ८० भव करे
तेन्द्री एक मुहूर्त्तमें " " ६० " "
चौरेन्द्री " " " " ४० " "
असन्नी पञ्चेन्द्रिय एक मुहूर्त्तमें २४ " "
सन्नी " " " " " १ " "

४ चोथे बोले इन्द्रिय ५ इन्द्रिय किसको कहते है? आत्माके लिङ्गको (चिन्हक) इन्द्रिय कहते है। इन्द्रियके कितने भेद हैं? पांच हैं—श्रोतेन्द्रिय चक्षुइन्द्रिय, घ्राणइन्द्रिय, रसइन्द्रिय, स्पर्श-इन्द्रिय (फरसइन्द्रिय) इनके नाम—गोचरी, अगोचरी, दुमोही, चरपरी, अचरपरी।

५ पांचमें बोले पर्याय छव पर्याय किसको कहते हैं? गुणके विकारको पर्याय कहते हैं। पर्यायके कितने भेद हैं? छव है आहार पर्याय, शरीर पर्याय, इन्द्रिय पर्याय, श्वासो-श्वास पर्याय, भाषा पर्याय (वचनपर्याय) मन

जहां तिर्थंकर महाराज या केवली महाराज होवे उठे भेज्यो उठेसे तिर्थंकर महाराज या केवली महाराज विहार कर गया तब वहांपर उस एक हाथके पुतलेमें से मुण्डे हाथका पुतला निकला जहां पर तिर्थंकर महाराज व केवली महाराज थे वहांपर जाकर प्रश्नका उत्तर लेकर मुण्डे हाथका पुतला एक हाथके पुतलेमें समा गया, एक हाथका पुतलो मुनिराजके शरीरमें समा गया, तब मुनिराजने प्रश्नका अन्तर मुहूर्तमें जवाब दिया, मुनिराज अहारिककी लब्धि फाड़ी (पुतलो निकाल्यो) उसकी आलोवणा किया विगर काल प्राप्त हो जाय तो विराधीक और आलावना कर ले तो आराधिक) तेजस शरीर किसका कहते हैं? अहारको ग्रहण करके पचावे उसको तेजस शरीर कहते हैं।

कारमाण शरीर किसको कहते हैं? ज्ञानावर-

आदि अष्ट कर्मों के समूहको कारमाण शरीर कहते हैं। संसारी जीवके तेजस, कारमाण शरीर हर वक्त साथ ही रहते हैं।

८ आठवें बोले योग (जोग) १५ : योग किसको कहते हैं ? पुद्गल विपाकी शरीर और अंगोपांग नाना नाम कर्मके उदयसे मनोवर्गणा वचनवर्गणा कायवर्गणा (आहारवर्गणा तथा कार्मण वर्गणा अवलम्बनसे कर्म नोकर्मको ग्रहण करनेकी जीवकी शक्ति विशेषको भावयोग कहते हैं। इस ही भावयोगके निमित्तसे आत्म प्रदेशके परिस्पंदको (चञ्चल होनेको) द्रव्य योग कहते हैं।

योगके कितने भेद हैं ? पन्नरह हैं—१ सत्यमनो योग, असत्यमनोयोग, ३ मिश्रमनोयोग, (उभयमनोयोग), ४ व्यवहार मनोयोग (अनुभयमनो योग), ५ सत्यभाषा, ६ असत्य भाषा, ७ मिश्रभाषा, ८ व्यवहार भाषा, ९ औदा-

रिक, १० औदारिकमिश्र, ११ वैक्रियक, १२ वैक्रियक मिश्र, १३ आहारक, १४ आहारक मिश्र, १५ कार्माण।

९ नवमें बोले उपयोग १२—पांच ज्ञान, तीन अज्ञान, च्यार दर्शन; १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनः पर्यवज्ञान, ५ केवलज्ञान, ६ मतिअज्ञान, ७ श्रुतअज्ञान, ८ विभंगज्ञान (कुअवधिज्ञान), ९ चक्षु दरसण, १० अचक्षु दरसण, ११ अवधि दरसण, १२ केवल दरसण।

१० दसमें बोले कर्म आठ, १ ज्ञानावर्णीय, २ दर्शनावर्णीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ आयु, ६ नाम, ७ गोत्र, ८ अंतराय। कर्म किसको कहते हैं? जीवके राग द्वेषादिक परिणामोंके निमित्तसे कार्माण वर्गणा रूप पुद्गलस्कंध जीवके साथ बंधको प्राप्त होते हैं, उनको कर्म कहते हैं।

११ इग्यारमें बोले गुणस्थान चवदे—१ मिथ्यात्व, २ सास्वादन, ३ मिश्र, ४ अविरतिसम्यक्दृष्टी ५ देशविरति, ६ प्रमतविरति, (प्रमादी), ७ अप्रमतविरति (अप्रमादी), ८ अपूर्वकर्ण (अनिवृत्तिबादर), ९ अनिवृत्तिबादर (निवृत्तिकरण), १० सूक्ष्मसम्पराय, ११ उपशांतमोहिनीय, १२ क्षीण मोहनीय, १३ संयोगीकेवली, १४ अयोगी केवली। गुणस्थान किसको कहते हैं? मोह और योगके निमित्तसे सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रुप आत्माके गुणोंको तारतम्यरूप अवस्था विशेषका गुणस्थान कहते हैं।

१२ बारमे बोले पांच इंद्रियोंका तेवीस विषय—२४० विकार।

इन्द्रियके विषय—

१ श्रोतेन्द्रियका तीन विपय- १ जीव शब्द, २ अजीव शब्द, ३ मिश्र शब्द।

रिक, १० औदारिकमिश्र, ११ वैक्रियक, १२ वैक्रियक मिश्र, १३ आहारक, १४ आहारक मिश्र, १५ कार्माण ।

नवमें बोले उपयोग १२—पांच ज्ञान, तीन अज्ञान, च्यार दर्शन, १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनः पर्यवज्ञान, ५ केवलज्ञान, ६ मतिअज्ञान, ७ श्रुतअज्ञान, ८ विभंगज्ञान (कुअवधिज्ञान), ९ चक्षु दरसण, १० अचक्षु दरसण, ११ अवधि दरसण, १२ केवल दरसण।

१० दसमें बोले कर्म आठ, १ ज्ञानावर्णीय, २ दर्शनावर्णीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ आयु, ६ नाम, ७ गोत्र, ८ अंतराय। कर्म किसको कहते हैं? जीवके राग, द्वेषादिक परिणामोंके निमित्तसे कार्माण वर्गणा रूप पुद्गलस्कंध जीवके साथ बंधको प्राप्त होते हैं, उनको कर्म कहते हैं।

११ इग्यारमें बोले गुणस्थान चवदे-१ मिथ्यात्व, २ सास्वादन, ३ मिश्र, ४ अविरतिसम्यक्दृष्टी ५ देशविरति, ६ प्रमतविरति, (प्रमादी), ७ अप्रमतविरति (अप्रमादी), ८ अपूर्वकर्ण (अनिवृत्तिबादर), ९ अनिवृत्तिबादर (निवृत्तिकर्ण), १० सूक्ष्मसम्पराय, ११ उपशांतमोहनीय, १२ क्षीण मोहनीय, १३ संयोगीकेवली, १४ अयोगी केवली। गुणस्थान किसको कहते हैं ? मोह और योगके निमित्तसे सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूप आत्माके गुणोंको तारतम्यरूप अवस्था विशेषको गुणस्थान कहते हैं।

१२ बारमे बोले पांच इंद्रियोंका तेवीस विषय—२४० विकार।

इन्द्रियके विषय—

१ श्रोतेन्द्रियका तीन विषय—१ जीव शब्द, २ अजीव शब्द, ३ मिश्र शब्द।

श्र, १० औदारिकमिश्र, ११ वैक्रियक, १२ वैक्रियक मिश्र, १३ आहारक, १४ आहारक मिश्र, १५ कार्माण।

९ नवमें बोले उपयोग १२—पांच ज्ञान, तीन अज्ञान, च्यार दर्शन; १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनः पर्यवज्ञान, ५ केवलज्ञान, ६ मतिअज्ञान, ७ श्रुतअज्ञान, ८ विभंगज्ञान (कुअवधिज्ञान), ९ चक्षु दरसण, १० अचक्षु दरसण, ११ अवधि दरसण, १२ केवल दरसण।

१० दसमें बोले कर्म आठ १ ज्ञानावर्णीय, २ दर्शनावर्णीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ आयु, ६ नाम, ७ गोत्र, ८ अंतराय। कर्म किसको कहते हैं? जीवके राग द्वेष रूपिक परिणामोंके निमित्तसे कार्माण वर्गणा रूप पुद्गलस्कन्ध जीवके साथ बंधको प्राप्त होते हैं उनको कर्म कहते हैं

११ इग्यारमें बोले गुणस्थान चवदे-१ मिथ्यात्व, २ सास्वादन, ३ मिश्र, ४ अविरतिसम्यक्दृष्टी ५ देशविरति, ६ प्रमतविरति, (प्रमादी), ७ अप्रमतविरति (अप्रमादी), ८ अपूर्वकर्ण (अनिवृत्तिबादर), ९ अनिवृत्तिबादर (निवृत्तिकर्ण), १० सूक्ष्मसम्पराय, ११ उपशांतमोहिनीय, १२ क्षीण मोहनीय, १३ संयोगीकेवली, १४ अयोगी केवली। गुणस्थान किसको कहते हैं? मोह और योगके निमित्तसे सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूप आत्माके गुणोंको तारतम्यरूप अवस्था विशेषको गुणस्थान कहते हैं।

१२ बारमे बोले पांच इंद्रियोंका तेवीस विषय—२४० विकार।

इन्द्रियके विषय—

१ श्रोतेन्द्रियका तीन विषय १ जीव शब्द, २ अजीव शब्द, ३ मिश्र शब्द।

२ चक्षुइन्द्रियका पांच विषय—१ कालो (वर्ण) २ नीलो, ३ रातो, ४ पीलो, ५ धोलो।

३ घ्राणेंद्रियका दोय विषय—१ सुरभी गंध, २ दुरभीगन्ध।

४ रसेंद्रियका पांच विषय—१ तीखो (रस), २ कड़्‌यो, ३ कसायलो, ४ खट्टो, ५ मीठो।

५ स्पर्शेन्द्रियका आठ विषय—१ खरखरो (करम), २ सुंहालो, ३ भारी, ४ हलको, ५ ठंढो ६ उनो, ७ चापड्यो, ८ लुखो।

प्रश्न—शरीरमें खरखरो क्या? उत्तर-पगरी पड़ो: सुंहालो क्या? गलेरा तालवो; भारी क्या? शरीरमें हाड़का; हलका क्या? केश; ठंढो क्या? कानको लाल: उनो क्या? कालजो; चापड्यो क्या? आंख: लुखो क्या? जीभ।

२४० विकार

२ विकार श्रोतेन्द्रियके १ जीव शब्द, २ अ-

जीव शब्द, २ मिश्र शब्द, ए २ शुभ २ अशुभ ए छव; ६ उपर राग ६ उपर द्वेष ए बारह ।

६० विकार चक्षुइन्द्रियके पांच विषयका-५ सचित्त, ५ अचित्त, ५ मिश्र, ए १५ शुभ १५ अशुभ, ये तीस ३० उपर राग, ३० उपर द्वेष ए साठ ।

१२ विकार घ्राणेन्द्रियके दोय विषयका—२ सचित्त, २ अचित्त, २ मिश्र, ए छव, ६ उपर राग ६ उपर द्वेष ए बारह ।

६० विकार रसेन्द्रियके पांच विषयका—५ सचित्त, ५ अचित्त, ५ मिश्र, ए पनरा, १५ शुभ १५ अशुभ १५ अशुभ ए तीस, ३० उपर राग ३० उपर द्वेष ए साठ ।

९६ विकार स्पर्शइन्द्रियके आठ विषयका—८ सचित्त, ८ अचित्त. ८ मिश्र, ए २४ शुभ २४ अशुभ, ए अडतालीस, ४८ उपर राग ४८ उपर द्वेष ए छनवे ।

२ चक्षुइन्द्रियका पांच विषय—१ कालो (वर्ण) २ नीलो, ३ रातो, ४ पीलो, ५ धोलो।

३ घ्राणेंद्रियका दोय विषय—१ सुरभी गंध, २ दुरभीगन्ध।

४ रसेंद्रियका पांच विषय—१ तीखो (रस), २ कड़वो, ३ कसायलो, ४ खट्टो, ५ मीठो।

५ स्पर्शेन्द्रियका आठ विषय—१ खरखरो (फरस), २ सुंहालो. ३ भारी, ४ हलको, ५ ठंढो ६ उनो, ७ चोपड्यो, ८ लुखो।

प्रश्न—शरीरमें खरखरी क्या? उत्तर-पगरी एडी; सुहालो क्या? गलेरो तालवो; भारी क्या? शरीरमें हाडका; हलका क्या? केश; ठंढी क्या? कानको लोल; उनो क्या? कालजो; चापड़ी क्या? आंख: लुखी क्या? जीभ।

२४० विकार—

१२ विकार श्रोतेन्द्रियके—१ जीव शब्द, २ अ-

जीव शब्द, ३ मिश्र शब्द, ए ३ शुभ ३ अशुभ ए छव; ६ उपर राग ६ उपर द्वेप ए वारह।

६० विकार चक्षुइन्द्रियके पांच विपयका-५ सचित्त, ५ अचित्त, ५ मिश्र, ए १५ शुभ १५ अशुभ, ये तीस ३० उपर राग, ३० उपर द्वेप ए साठ।

१२ विकार घ्राणेन्द्रियके दोय विपयका—२ सचित्त, २ अचित्त, २ मिश्र, ए छव, ६ उपर राग ६ उपर द्वेप ए वारह।

६० विकार रसेन्द्रियके पांच विपयका—५ सचित्त, ५ अचित्त, ५ मिश्र, ए पनरा, १५ शुभ १५ अशुभ १५ अशुभ ए तीस, ३० उपर राग ३० उपर द्वेप ए साठ।

९६ विकार स्पर्शइन्द्रियके आठ विपयका—८ सचित्त, ८ अचित्त, ८ मिश्र, ए २४ शुभ २४ अशुभ, ए अडतालीस, ४८ उपर राग ४८ उपर द्वेप ए छनवे।

१३ तेरमें बोले मिथ्यात्वरा १० और १५=२५ बोल (याने पचीस प्रकार)

१ अभिग्रह मिथ्यात्व ते अपने ध्यानमें आवे सो साचा, अर्थात् अपना ही मन मान्यां माने।

२ अनाभिग्रह मिथ्यात्व ते हठग्राही तो नहीं, परन्तु सत्य असत्यका निर्णय नहीं कर सके. एक ही नहीं माने।

३ अभिनिवेश मिथ्यात्व ते अपणी लीधी टेक छोड़े नहीं।

४ संशय मिथ्यात्व ते डामाडोल चित्त रागे, संशय करे, निश्चय नहीं लावे, धर्म अहिंसा लक्षण है कि नहीं इत्यादिक मनिर्ण विध्य को संशय मिथ्यात्व कहते हैं।

५ अणाभोग मिथ्यात्व अज्ञानपणा से लागे. उपयोग शून्य भाव (शुन्य उपयोगपणा)।

६ लौकिक मिथ्यात्वके ४ भेद—(१) देवगत

मिथ्यात्व भैरूं भवानी इत्यादि देव माने, (२) गुरुगत मिथ्यात्व गंगागुरु इत्यादि गुरु माने, (३) धर्म्मगत मिथ्यात्व नदी आदि स्नानमें धर्म्म माने, (४) पर्वगत मिथ्यात्व होली दशहेरादि पर्व माने।

७ लोकोत्तर मिथ्यात्वका ४ भेद—देव, गुरु, धर्म, पर्व। देव—अट्टारे दोष रहित, गुरु निग्रंथ, धर्म्म—दया मूल, पर्व—जिन कल्याणक दिन वा ज्ञान दर्शन, चारित्र, साधनके दिन, पज्जुसण इन उत्तम को इस लोकके सुखार्थे माने तो लोकोत्तर मिथ्यात्व।

८ कुप्रावचन मिथ्यात्व इसके ४ भेद—देव हरिहर ब्रह्मादि; गुरु-बाबा जोगी आदि; धर्म्म-स्नान, जप, होम आदि; पर्वलौकिक कार्य माने वो उनके शास्त्रोंको माने, सो कुप्रावचन मिथ्यात्व।

९ ऊणो मिथ्यात्व-श्रीवीतराग प्रभु परुपणा करी उनसे ओछा प्ररुपे वा ओछा श्रद्धे। जैसे कोइ कहे जीव अंगुठा मात्र है, तंदुल मात्र है, शामा मात्र है, दीपक मात्र है ऐसी ओछी परूपणा करे सो मिथ्यात्व।

१० अधिको मिथ्यात्व-श्री वीतरागके परुप्या सूत्रसे अधिक परुपणा करे सो। जैसे कि एक जीव सर्व लोक ब्रह्माण्ड मात्र में व्यापि रह्यो अधिक परूपणा करे सो मिथ्यात्व।

११ विपरीत मिथ्यात्व-श्री भगवंत भाख्या अर्थ से विपरीत श्रद्धे वा परुपे सात नीन्हवनी परे।

१२ धर्म्म को अधर्म समझे. जैसे सत्य, दया, मूल धर्म श्री भगवानने फरमाया उसको न माने सो मिथ्यात्व।

१३ अधर्मको धर्म्म समझे जैसे कन्या दान, यज्ञ होमादिकमें सो मिथ्यात्व।

१४ साधुको कुसाधु समझे सो मिथ्यात्व, जैसे

गुण संयुक्त ज्ञानी दानी तपस्वी क्षमावान्, वैरागी, जीतेन्द्रिय, ऐसे उत्तम गुणों के धारक कुं मत पक्ष करके द्वेष बुद्धि सुं असाधु समझे या श्रद्धे सो मिथ्यात्व।

१५ असाधु को साधु समझे सो मिथ्यात्व. जैसे-प्राणातिपातादि, अट्ठारे पापस्थानक सेवे, सेवावे, अनुमोदे, जिन आज्ञासे विरुद्ध वर्तने वालोंको साधु श्रद्धे सो मिथ्यात्व।

१६ जीव कुं अजीव समझे सो मिथ्यात्व, जैसे-पर्याय, प्राण, योग, उपयोगादि धारक, एकेन्द्रिय आदि जीव को अजीव समझे या श्रद्धे सो मिथ्यात्व।

१७ अजीव को जीव समझे सो मिथ्यात्व, जैसे सुका काष्ट निर्जीव पाषाण, वस्त्र इनको जीवका आकार बनायकर उसे जीव श्रद्धे सो मिथ्यात्व।

९ उणो मिथ्यात्व-श्रीवीतराग प्रभु परूपणा करी उनसे ओछा प्ररुपे वा ओछा श्रद्धे। जैसे कोइ कहे जीव अंगुठा मात्र है, तंदुल मात्र है, शामा मात्र है, दीपक मात्र है ऐसी ओछी परूपणा करे सो मिथ्यात्व।

१० अधिको मिथ्यात्व-श्री वीतरागके परुप्या सूत्रसे अधिक परुपणा करे सो। जैसे कि एक जीव सर्वलोक ब्रह्माण्ड मात्र में व्यापि रह्यो अधिक परूपणा करे सो मिथ्यात्व।

११ विपरीत मिथ्यात्व–श्री भगवंत भाप्या अर्थ से विपरीत श्रद्धे वा परुपे सात नीन्हवनी परे।

१२ धर्म्म को अधर्म समझे, जैसे सत्य, दया, मूल धर्म श्री भगवानने फरमाया उसको न माने सो मिथ्यात्व।

१३ अधर्मको धर्म्म समझे जैसे कन्या दान, यज्ञ होमादिकमें सो मिथ्यात्व।

१४ साधुको कुसाधु समझे सो मिथ्यात्व, जैसे

गुणे संयुक्त ज्ञानी दानी तपस्वी क्षमावान्, वैरागी, जीतेन्द्रिय, ऐसे उत्तम गुणो के धारक कुं मत पक्ष करके द्वेष बुद्धि सुं असाधु समझे या श्रद्धे सो मिथ्यात्व।

१५ असाधु को साधु समझे सो मिथ्यात्व. जैसे-प्राणातिपातादि, अट्ठारे पापस्थानक सेवे, सेवावे, अनुमोदे, जिन आज्ञासे विरुद्ध वर्तने वालोंको साधु श्रद्धे सो मिथ्यात्व।

१६ जीव कुं अजीव समझे सो मिथ्यात्व, जैसे-पर्याय, प्राण, योग, उपयोगादिधारक, एकेन्द्रिय आदि जीव को अजीव समझे या श्रद्धे सो मिथ्यात्व।

१७ अजीव को जीव समझे सो मिथ्यात्व, जैसे सुका काष्ट निर्जीव पाषाण, वस्त्र इनको जीवका आकार बनायकर उसे जीव श्रद्धे सो मिथ्यात्व।

१८ मार्गको उन्मार्ग समझे सो मिथ्यात्व, जैसे-शुद्ध निर्दोष, सरल, सत्य, मोक्षमार्ग, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, दया, शील, दान संतोष, क्षमा, इत्यादिक को कर्मबंधका, संसारमें रुलानेका मार्ग बतावे, दया दान उठावे सो मिथ्यात्व।

१९ उन्मार्गको मार्ग श्रद्धे, सो मिथ्यात्व; जैसे-सातकुव्यसन का सेवन, काम क्रीड़ा करना, स्नान इत्यादि संसारमें परिभ्रमण करानेका जो मार्ग है, उनको मोक्षका हेतु श्रद्धे सो मिथ्यात्व।

२० रूपी पदार्थको अरूपी श्रद्धे सो मिथ्यात्व, जैसे-वायुकायादि सूक्ष्म होनेसे दृष्टि न आवे उनको अरूपी श्रद्धे सो मिथ्यात्व।

२१ अरूपीको रूपी समझे सो मिथ्यात्व, जैसे-धर्मास्तिकायादि जो अरूपी है उनको रूपी श्रद्धे सो मिथ्यात्व।

२२ अविनय मिथ्यात्व–जिनेश्वर तथा गुरुका वचन उत्थापे, गुणवन्त, ज्ञानवन्त, तपस्वी, वैरागी इत्यादि उत्तम पुरुषोंसे कृतघ्नीपणो करे, छिद्र देखता रहे, निन्दादि अविनय करे सो मिथ्यात्व।

२३ आशातना मिथ्यात्व–गुरुकी ३३ आशातनाका काम करे सो मिथ्यात्व।

२४ अक्रिया मिथ्यात्व–जैसे प्रतिक्रमणादिक क्रिया न माने सो मिथ्यात्व।

२५ अज्ञान मिथ्यात्व–जैसे सत्य असत्यका विवेक न होनेसे संसारिक कार्य कर्म्मोका बंधन रूप जैसाका तैसा रहनेसे और सत्य ज्ञानका अभावसे अज्ञानको थापे सो मिथ्यात्व। जैसे पशुवध को धर्म समझे।

१४ चवदमें बोले नवतत्वका जाण पणो। नवतत्वका नाम—१ जीवतत्व, २ अजीव-

तत्व, ३ पुण्यतत्व, ४ पापतत्व, ५ आश्रवतत्व, ६ संवर तत्व, ७ निर्जरातत्व, ८ बंधतत्व, ९ मोक्षतत्व ।

जीवतत्व ।

१ जीवतत्व किसको कहिये ? जीव चेतना सहित, सुख दुखका वेदक, पर्याप्ति प्राणका धरता, आठ कर्मका कर्ता, आठ कर्मका भोक्ता, सदाकाल सास्वता रहे, कदेही विनसे नहीं, छायांका तावड़े जाय, तावड़ेसे छायां आवे, असंख्यात प्रदेशी, उसको जीव तत्व कहिये। जीवका दोय भेद १ सुक्ष्म २ बादर ।

सुक्ष्म जीव किसको कहिये ? लोक माहें काजली कुंपली समान भरथा छै, काट्या कटे नहीं, बाळ्या बळे नहीं, जाल्या जले नही, पानीमें डूबे नहीं आयुष आया मरे, विना आयुष्य मरे नही, केवल ज्ञानीके नजर आवे, छद्मस्थके नजर आवे नहीं, उसको सुक्ष्म एकेन्द्रिय कहिये ।

बादर जीव किसको कहिये? लोकके देशमें रह्या है। काट्या कटे, बाट्या बटे, जाल्या जले, पानीमें डुबे, आयुष्य आयां मरे, व्यवहारमें विना आयुष्य भी मरे, केवलज्ञानीके नजर आवे, छद्मस्थके नजर आवे, एकका दोय भाग होवे, उसको बादर जीव कहिये।

संसारी जीवका १४ भेद

सूक्ष्म एकेन्द्रियका २ भेद अप्रजापता, प्रजापता,
बादर एकेन्द्रियका „ „ „ „
बेइन्द्रियका „ „ „ „
तेइन्द्रियका „ „ „ „
चौरिन्द्रियका „ „ „ „
असन्नी पंचेन्द्रियका „ „ „ „
सन्नी पंचेन्द्रियका „ „ „ „

अजीव तत्व।

अजीव तत्व किसको कहिये? चेतना रहित, सुख दुखको वेदे नहीं, प्रज्ञा, प्राण, जोग, उप-

तत्व, ३ पुण्यतत्व, ४ पापतत्व, ५ आश्रवतत्व, ६ संवर तत्व, ७ निर्झरातत्व, ८ बंधतत्व, ९ मोक्षतत्व ।

जीवतत्व ।

१ जीवतत्व किसको कहिये ? जीव चेतना सहित, सुख दुखका वेदक, पर्याप्ति प्राणका धरता, आठ कर्मका कर्ता, आठ कर्मका भोक्ता, सदाकाल सास्वता रहे, कदेही विनसे नहीं, छायांका तावड़े जाय, वावड़ेसे छायां आवे, असंख्यात प्रदेशी, उसको जीव तत्व कहिये । जीवका दोय भेद १ सुक्षम २ वादर ।

सुक्षम जीव किसको कहिये ? लोक माहें काजली कुंपली समान भरया छे, काट्या कटे नहीं, बाळ्या बळे नहीं, जाल्या जले नहीं, पानीमें डूबे नहीं आयुप आया मरे, विना आयुष्य मरे नहीं, केवल ज्ञानीके नजर आवे, छदमस्थके नजर आवे नहीं, उसको सुक्षम एकेन्द्रिय कहिये ।

योग, आठ कर्म करके रहित, जड़ लक्षण उसको अजीव तत्व कहिये। अजीवका भेद चवदा। धर्मास्तिकायका तीन भेद—१ खन्ध, २ देश, ३ प्रदेश। अधर्मास्तिकायका तीन भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश। आकाशास्तिकायका तीन भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश ये नव, (१०) दशमो काल, ये दश अजीव अरूपी जाणना। रूपी पुद्गलका च्यार भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश, ४ प्रमाणु पोगला, ये च्यार पुद्गलास्तिकायका हुआ। एवं यह कुल चवदा भेद अजीवका हुआ।

पुण्य तत्व।

पुण्य तत्व किसका कहिये? पुण्यकी प्रकृति शुभ, पुण्य बांधता दोहिलो; भोगवतां सोहिलो, सुखे २ भोगवे, शुभ जोगसे बांधे, शुभ उज्वल पुद्गलां का बंध पड़े, पुण्य प्राणीने उजला करे, पुण्य सोनाकी बेड़ी, पुण्यका फल मीठा, उसको

पुण्य तत्त्व कहिये। पुण्य नव प्रकारे बांधे—

१ अन्न पुण्ये—अहार देनेसे।

२ पाण पुण्ये—पाणी देनेसे।

३ लयन पुण्ये-जगह स्थानक वगैरह देनेसे।

४ सयन पुण्ये—सज्या, पाट, पाटला, बाजोटा, वगैरह देनेसे।

५ वत्थ (वस्त्र) पुण्ये—वस्त्र, कपड़ा देनेसे।

६ मन पुण्ये—शुभमन राखनेसे, दानरूप, शीलरूप, तपरूप, भावनारूप, दयारूप, आद देईने शुभ मन राखनेसे।

७ वचन पुण्ये—मुखसे शुभ वचन बोलनेसे व अच्छा वचन निकलनेसे।

८ काय पुण्ये—कायासे दयापालनेसे, कायासे सेवा चाकरी, विनय, वैयावच्च करनेसे।

६ नमस्कार पुण्ये—उत्तम गुणवन्त को नमस्कार करनेसे।

च्यार कर्मके उदय ४२ प्रकारे भोगने (एक

योग, आठ कर्म करके रहित, जड़ लक्षण उसको अजीव तत्व कहिये। अजीवका भेद चवदा। धर्मास्तिकायका तीन भेद—१ खन्ध, २ देश, ३ प्रदेश। अधर्मास्तिकायका तीन भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश। आकाशास्तिकायका तीन भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश ये नव, (१०) दशमो काल, ये दश अजीव अरूपी जाणना। रूपी पुद्गलका च्यार भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश, ४ प्रमाणु पोगला, ये च्यार पुद्गलास्तिकायका हुआ। एवं यह कुल चवदा भेद अजीवका हुआ।

पुण्य तत्व।

पुण्य तत्व किसको कहिये? पुण्यकी प्रकृति शुभ, पुण्य बांधता दोहिलो; भोगवतां सोहिलो, सुखे २ भोगवे, शुभ जोगसे बांधे, शुभ उज्वल पुद्गलां को बंध पड़े, पुण्य प्राणीने उजला करे, पुण्य सोनाकी वेड़ी, पुण्यका फल मीठा, उसको

पुण्य तत्त्व कहिये। पुण्य नव प्रकारे बांधे—

१ अन्न पुण्ये—अहार देनेसे।

२ पाण पुण्ये—पाणी देनेसे।

३ लयन पुण्ये-जगह स्थानक वगैरह देनेसे।

४ सयन पुण्ये—सज्या, पाट, पाटला, बाजोटा, वगैरह देनेसे।

५ वत्थ (वस्त्र) पुण्ये—वस्त्र, कपड़ा देनेसे।

६ मन पुण्ये—शुभमन राखनेसे, दानरूप, शीलरूप, तपरूप, भावनारूप, दयारूप, आद देईने शुभ मन राखनेसे।

७ वचन पुण्ये—मुखसे शुभ वचन बोलनेसे व अच्छा वचन निकलनेसे।

८ काय पुण्ये—कायासे दयापालनेसे, कायासे सेवा चाकरी, विनय, वेयावच्च करनेसे।

९ नमस्कार पुण्ये -उत्तम गुणवन्त का नमस्कार करनेसे।

च्यार कर्मके उदय ४२ प्रकारे भोगवे। एक

योग, आठ कर्म करके रहित, जड़ लक्षण उसको अजीव तत्त्व कहिये। अजीवका भेद चवदा। धर्मास्तिकायका तीन भेद—१ खन्ध, २ देश, ३ प्रदेश। अधर्मास्तिकायका तीन भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश। आकाशास्तिकायका तीन भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश ये नव, (१०) दशमो काल, ये दश अजीव अरूपी जाणना। रूपी पुद्गलका च्यार भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश, ४ प्रमाणु पोगला, ये च्यार पुद्गलास्तिकायका हुआ। एवं यह कुल चवदा भेद अजीवका हुआ।

पुण्य तत्त्व।

पुण्य तत्त्व किसको कहिये? पुण्यकी प्रकृति शुभ, पुण्य बांधता दोहिलो; भोगवतां सोहिलो, सुख २ भोगवे, शुभ जोगसे बांधे, शुभ उज्वल पुद्गलां को बंध पड़े, पुण्य प्राणीने उजला करे, पुण्य सोनाकी बेड़ी, पुण्यका फल मीठा, उसको

पुण्य तत्व काहिये। पुण्य नव प्रकारे बांधे—

१ अन्न पुण्ये—अहार देनेसे।

२ पाण पुण्ये—पाणी देनेसे।

३ लयन पुण्ये-जगह स्थानक वगैरह देनेसे।

४ सयन पुण्ये—सज्या, पाट, पाटला, बाजोटा, वगैरह देनेसे।

५ वत्थ (वस्त्र) पुण्ये—वस्त्र, कपड़ा देनेसे।

६ मन पुण्ये—शुभमन राखनेसे, दानरूप, शीलरूप, तपरूप, भावनारूप, दयारूप, आद देईने शुभ मन राखनेसे।

७ वचन पुण्ये—मुखसे शुभ वचन बोलनेसे व अच्छा वचन निकलनेसे।

८ काय पुण्ये—कायासे दयापालनेसे, कायासे सेवा चाकरी, विनय, वैयावच्च करनेसे।

९ नमस्कार पुण्ये—उत्तम गुणवन्त को नमस्कार करनेसे।

च्यार कर्मके उदय ४२ प्रकारे भोगने (एक

योग; आठ कर्म करके रहित, जड़ लक्षण उसको अजीव तत्व कहिये। अजीवका भेद चवदा। धर्मास्तिकायका तीन भेद—१ स्कन्ध, २ देश, ३ प्रदेश। अधर्मास्तिकायका तीन भेद—१ स्कंध, २ देश, ३ प्रदेश। आकाशास्तिकायका तीन भेद—१ स्कंध, २ देश, ३ प्रदेश ये नव, (१०) दशमो काल, ये दश अजीव अरूपी जाणना। रूपी पुद्‌गलका च्यार भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश, ४ प्रमाणु पोगला, ये च्यार पुद्‌गलास्तिकायका हुआ। एवं यह कुल चवदा भेद अजीवका हुआ।

पुण्य तत्व।

पुण्य तत्व किसका कहिये? पुण्यकी प्रकृति शुभ, पुण्य बांधना दोहिलो; भोगवना सोहिलो, सुखे २ भोगवे, शुभ जोगसे बांधे, शुभ उज्जल पुद्‌गलों को बंध पड़े, पुण्य प्राणीने उजला करे, पुण्य सातारी वेदी, पुण्यका फल मीठा, उसको

पुण्य तत्व कहिये। पुण्य नव प्रकारे बांधे—

१ अन्न पुण्ये—अहार देनेसे।

२ पाण पुण्ये—पाणी देनेसे।

३ लयन पुण्ये-जगह स्थानक वगैरह देनेसे।

४ सयन पुण्ये—सज्या, पाट, पाटला, बाजोटा, वगैरह देनेसे।

५ वत्थ (वस्त्र) पुण्ये—वस्त्र, कपड़ा देनेसे।

६ मन पुण्ये—शुभमन राखनेसे, दानरूप, शीलरूप, तपरूप, भावनारूप, दयारूप, आद देईने शुभ मन राखनेसे।

७ वचन पुण्ये—मुखसे शुभ वचन बोलनेसे व अच्छा वचन निकलनेसे।

८ काय पुण्ये—कायासे दयापालनेसे, कायासे सेवा चाकरी, विनय, वेयावच्च करनेसे।

९ नमस्कार पुण्ये—उत्तम गुणवन्त को नमस्कार करनेसे।

च्यार कर्मके उदय ४२ प्रकारे भोगवे। एक

योग, आठ कर्म करके रहित, जड़ लक्षण उसको अजीव तत्व कहिये । अजीवका भेद चवदा । धर्मास्तिकायका तीन भेद—१ खन्ध, २ देश, ३ प्रदेश । अधर्मास्तिकायका तीन भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश । आकाशास्तिकायका तीन भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश ये नव, (१०) दशमो काल, ये दश अजीव अरूपी जाणना । रूपी पुद्गलका च्यार भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश, ४ प्रमाणु पोगला, ये च्यार पुद्गलास्तिकायका हुआ । एवं यह कुल चवदा भेद अजीवका दुआ ।

पुण्य तत्व ।

पुण्य तत्व किसको कहिये? पुण्यकी प्रकृति शुभ, पुण्य बांधता दोहिलो; भोगवतां सोहिलो, सुखे २ भोगवे, शुभ जोगसे बांधे, शुभ उज्वल पुद्गलां को बंध पड़े, पुण्य प्राणीने उजला करे, पुण्य सोनाकी बेड़ी, पुण्यका फल मीठा, उसको

पुण्य तत्त्व कहिये। पुण्य नव प्रकारे बांधे—

१ अन्न पुण्ये—अहार देनेसे।

२ पाण पुण्ये—पाणी देनेसे।

३ लयन पुण्ये-जगह स्थानक वगैरह देनेसे।

४ सयन पुण्ये—सज्या, पाट, पाटला, बाजोटा, वगैरह देनेसे।

५ वत्थ (वस्त्र) पुण्ये—वस्त्र, कपड़ा देनेसे।

६ मन पुण्ये—शुभमन राखनेसे, दानरूप, शीलरूप, तपरूप, भावनारूप, दयारूप, आद देईने शुभ मन राखनेसे।

७ वचन पुण्ये—मुखसे शुभ वचन बोलनेसे व अच्छा वचन निकलनेसे।

८ काय पुण्ये—कायासे दयापालनेसे, कायासे सेवा चाकरी, विनय, वैयावच्च करनेसे।

९ नमस्कार पुण्ये—उत्तम गुणवन्त को नमस्कार करनेसे।

च्यार कर्मके उदय ४२ प्रकारे भोगवे (एक

योग, आठ कर्म करके रहित, जड़ लक्षण उसको अजीव तत्व कहिये। अजीवका भेद चवदा। धर्मास्तिकायका तीन भेद—१ स्कन्ध, २ देश, ३ प्रदेश। अधर्मास्तिकायका तीन भेद—१ स्कंध, २ देश, ३ प्रदेश। आकाशास्तिकायका तीन भेद—१ स्कंध, २ देश, ३ प्रदेश ये नव, (१०) दशमो काल, ये दश अजीव अरूपी जाणना। रूपी पुद्गलका च्यार भेद—१ स्कंध, २ देश, ३ प्रदेश, ४ प्रमाणु पोगला, ये च्यार पुद्गलास्तिकायका हुआ। एवं यह कुल चवदा भेद अजीवका हुआ।

पुण्य तत्व।

पुण्य तत्व किसको कहिये? पुण्यकी प्रकृति शुभ, पुण्य बांधना दोहिलो; भोगवनो सोहिलो, सुखे २ भोगवे. शुभ जोगसे बांधे. शुभ उज्वल पुद्गला का बंध पड़े. पुण्य प्राणीने उजला करे, पुण्य मानाको बेड़ी. पुण्यका फल मीठा. उसको

पुण्य तत्व कहिये। पुण्य नव प्रकारे बांधे—

१ अन्न पुण्ये—अहार देनेसे।

२ पाण पुण्ये—पाणी देनेसे।

३ लयन पुण्ये-जगह स्थानक वगैरह देनेसे।

४ सयन पुण्ये—सज्या, पाट, पाटला, बाजोटा, वगैरह देनेसे।

५ वत्थ (वस्त्र) पुण्ये—वस्त्र, कपड़ा देनेसे।

६ मन पुण्ये—शुभमन राखनेसे, दानरूप, शीलरूप, तपरूप, भावनारूप, दयारूप, आद देईने शुभ मन राखनेसे।

७ वचन पुण्ये—मुखसे शुभ वचन बोलनेसे व अच्छा वचन निकलनेसे।

८ काय पुण्ये कायासे दयापालनेसे, कायासे सेवा चाकरी, विनय, वेयावच्च करनेसे।

६ नमस्कार पुण्ये उत्तम गुणवन्त को नमस्कार करनेसे।

च्यार कर्मके उदय ४२ प्रकारे भोगवे (एक

योग, आठ कर्म करके रहित, जड़ लक्षण उसको अजीव तत्व कहिये। अजीवका भेद चवदा। धर्मास्तिकायका तीन भेद—१ खन्ध, २ देश, ३ प्रदेश। अधर्मास्तिकायका तीन भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश। आकाशास्तिकायका तीन भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश ये नव, (१०) दशमो काल, ये दश अजीव अरूपी जाणना। रूपी पुद्गलका च्यार भेद—१ खंध, २ देश, ३ प्रदेश, ४ प्रमाणु पोगला, ये च्यार पुद्गलास्तिकायका हुआ। एवं यह कुल चवदा भेद अजीवका हुआ।

पुण्य तत्व।

पुण्य तत्व किसको कहिये? पुण्यकी प्रकृति शुभ, पुण्य बांधता दोहिलो; भोगवतां सोहिलो, सुखे २ भोगवे. शुभ जोगसे बांधे. शुभ उज्वल पुद्गलों का बंध पड़े. पुण्य प्राणीने उजला करे, पुण्य मानाकी बेड़ी, पुण्यका फल मीठा, उसको

पुण्य तत्त्व कहिये। पुण्य नव प्रकारे बांधे—

१ अन्न पुण्ये—अहार देनेसे।

२ पाण पुण्ये—पाणी देनेसे।

३ लयन पुण्ये-जगह स्थानक वगैरह देनेसे।

४ सयन पुण्ये—सज्या, पाट, पाटला, बाजोटा, वगैरह देनेसे।

५ वत्थ (वस्त्र) पुण्ये—वस्त्र, कपड़ा देनेसे।

६ मन पुण्ये—शुभमन राखनेसे, दानरूप, शीलरूप, तपरूप, भावनारूप, दयारूप, आद देईने शुभ मन राखनेसे।

७ वचन पुण्ये—मुखसे शुभ वचन बोलनेसे व अच्छा वचन निकलनेसे।

८ काय पुण्ये—कायासे दयापालनेसे, कायासे सेवा चाकरी, विनय, वैयावच्च करनेसे।

६ नमस्कार पुण्ये—उत्तम गुणवन्त को नमस्कार करनेसे।

च्यार कर्मके उदय ४२ प्रकारे भोगवे (एक

सो अड़तालीस प्रकृतिमें से शुभ शुभ)—
शातावेदनीयकी एक, आयुष्यकी तीन, नामकी सैंतीस, गौत्रकी एक, यह बयालीस प्रकृति।

पाप तत्व।

पापतत्व किसको कहिये ? पाप बांधता सोहिलो, भोगवतां दोहिलो, अशुभ योगसे बंधे, दुःखे २ भागवे, पापका फल कड़वा, पाप प्राणीने मेलो करे, उसको पापतत्व कहिये । पाप अठारह प्रकारे बांधे ।

१ प्राणातिपात—छव कायाके जीवोंको हिंसा करे ।

२ मृषावाद—असत्य (झूठ) बोले ।

३ अदत्तादान—अणदिधी वस्तु लेवे (चोरी करे) ।

४ मैथुन—कुकर्म (कुशील) सेवे ।

५ परिग्रह—द्रव्य (धन) राखे, ममता करे।

६ क्रोध—आप तपे, दूसराने तपावे. कोप करे।

७ मान—अहंकार (घमंड) करे।

८ माया—कपटाइ, ठगाइ करे।

९ लोभ—तृष्णा वधावे, मूर्च्छा (गृद्धिपणो) राखे।

१० राग—स्नेह राखे, प्रीति करे।

११ द्वेष—अणगमति वस्तु देखीने द्वेष करे।

१२ कलह—क्लेश करे।

१३ अभ्याख्यान—झूठा कलङ्क (आल) देवे।

१४ पैशुन्य—दूसरेकी चाड़ी, चुगली करे।

१५ परपरिवाद—दूसराका अवर्णवाद बोले।

१६ रति अरति—पांच इन्द्रियकी तेवीस विषय उसमेंसे मनगमतिसे राजी होवे। अणगमतिसे नाराजी होवे।

१७ माया मृषावाद—कपट सहित झूठ बोल. कपटाइमें कपटाइ करे।

१८ मिथ्यादर्शनशल्य—खोटी (झूठी) श्रद्धा का शल्य राखे।

बयांसी प्रकारे भोगवे, आठ कर्मके उदय (१४८ प्रकृतिमेंसे ८२ अशुभ अशुभ भोगवे) ज्ञानावरणीयकी पांच, दर्शनावरणीयकी नव, वेदनीयकी एक, मोहनीयकी छव्वीस (समकित, मिश्र टली) आयुष्यकी एक, नाम कर्मकी चोंतीस, गोत्र कर्मकी एक, अन्तराय कर्मकी पांच ये बयांसी।

आश्रव तत्व।

आश्रव किसको कहिये ? जीवरूपीयो तलाव, कर्मरूपीयो पाणी, पांच आश्रवद्वाररूप नाला (मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय, जोग) करी भरे उसको आश्रव तत्व कहिये। आश्रवका सामान्य प्रकार वीस भेद

१ मिथ्यात्व यान हृदय, कूड़ कुधर्म माने सो आश्रव।

२ अव्रत आस्रव याने व्रत पच्चखाण नहीं करे सो आस्रव ।

३ प्रमाद याने पांच प्रमाद सेवे सो आस्रव ।

४ कषाय याने पच्चीस कषाय सेवे सो आस्रव ।

५ अशुभ जोग प्रवर्तावे सो आस्रव ।

६ प्राणातिपात-जीवकी हिंसा करे सो आस्रव ।

७ मृषावाद—झूठ बोले सो आस्रव ।

८ अदत्तादान—चोरी करे सो आस्रव ।

९ मैथुन—कुशील सेवे सो आस्रव ।

१० परिग्रह—धन, कंचन, वगैरह राखे सो आस्रव ।

११ श्रोतेन्द्रिय मोकली मेले सो आस्रव ।

१२ चक्षुइन्द्रिय मोकली मेले सो आस्रव ।

१३ घ्राणेन्द्रिय मोकली मेले सो आस्रव ।

१४ रसेन्द्रिय मोकली मेले सो आस्रव ।

१५ स्पर्शेन्द्रिय मोकली मेले सो आस्रव ।

१६ मन मोकलो मेले सो आस्रव ।

१७ वचन मोकलो मेले सो आश्रव।
१८ काया मोकली मेले सो आश्रव।
१९ भंडउपगरण अजयणासे लेवे अजयणासे मुके (रखे) सो आश्रव।
२० सुई कुसग्ग मात्र अजयणा से लेवे अजयणा से रखे सो आश्रव।

ये सामान्य प्रकारे वीस भेद तथा विशेष प्रकारे बयालीस तथा सत्तावन भेद—५ इन्द्रिय का विषय, ४ कषाय, ३ अशुभ जोग, २५ क्रिया, ५ अव्रत, ये ४२ भेद तथा कोई कोई सत्तावन भेद पण कहते हैं बयांलीस तो उपर मुजब और १५ जोग ये ५७ सत्तावन हुआ।

संवर तत्व।

संवर किसको कहिये ? जीवरूपीतालाव, कर्म रूपीया पाणी, आश्रवरूप नालो संवररूपी पाल करके आवता कर्मा को रोके उसको संवर

संवरका सामान्य प्रकारे बीस भेद—

१ समकित संवर।

२ व्रत पच्चखाण करे सो संवर।

३ अप्रमाद संवर।

४ अकषाय संवर।

५ शुभ योग प्रवर्तावे सो संवर।

६ प्राणातिपात जीवकी हिंसा नहीं करे सो संवर।

७ मृषावाद—झूठ नहीं बोले सो संवर।

८ अदत्तादान—चोरी नहीं करे सो संवर।

९ मैथुन—कुशील नहीं सेवे सो संवर।

१० परिग्रह—ममता नहीं राखे सो संवर।

११ श्रोत्रेन्द्रिय वश करे सो संवर।

१२ चक्षुइन्द्रिय वश करे सो संवर।

१३ घ्राणेन्द्रिय वश करे सो संवर

१४ रसेन्द्रिय वश करे सो संवर

१५ स्पर्शेन्द्रिय वश करे सो संवर

१७ वचन मोकलो मेले सो आश्रव।
१८ काया मोकली मेले सो आश्रव।
१९ भंडउपगरण अजयणासे लेवे अजयणासे मुके (रखे) सो आश्रव।
२० सुई कुसग्ग मात्र अजयणा से लेवे अजयणा से रखे सो आश्रव।

ये सामान्य प्रकारे बीस भेद तथा विशेष प्रकारे बयालीस तथा सत्तावन भेद—५ इन्द्रिय का विषय, ४ कषाय, ३ अशुभ जोग, २५ किया, ५ अव्रत, ये ४२ भेद तथा कोई कोई सत्तावन भेद पण कहते हैं बयांलीस तो उपर मुजब और १५ जोग ये ५७ सत्तावन हुआ।

संवर तत्व।

संवर किसको कहिये? जीवरूपी तलाव, कर्मरूपी पाणी आश्रवरूप नाला, संवररूपी पाल करके आवतां कर्मां को रोके उसका संवर तत्व कहिये।

संवरका सामान्य प्रकारे बीस भेद—

१ समकित संवर।

२ व्रत पच्चखाण करे सो संवर।

३ अप्रमाद संवर।

४ अकषाय संवर।

५ शुभ जोग प्रवर्तावे सो संवर।

६ प्राणातिपात जीवकी हिंसा नहीं करे सो संवर।

७ मृषावाद—झूठ नहीं बोले सो संवर।

८ अदत्तादान—चोरी नहीं करे सो संवर।

९ मैथुन—कुशील नहीं सेवे सो संवर।

१० परिग्रह—ममता नहीं राखे सो संवर।

११ श्रोतेन्द्रिय वश करे सो संवर।

१२ चक्षुइन्द्रिय वश करे सो संवर।

१३ घ्राणेन्द्रिय वश करे सो संवर।

१४ रसेन्द्रिय वश करे सो संवर।

१५ स्पर्शेन्द्रिय वश करे सो संवर।

१६ मन वश करे सो संवर।

१७ वचन वश करे सो संवर।

१८ काया वश करे सो संवर।

१६ भंड उपगरण जयणासे लेवे जयणासे मुके (रखे) सो संवर।

२० सुई कुसग्ग मात्र जयणा से लेवे जयणासे रखे सो संवर।

विशेष प्रकारे सत्तावन भेद कहते हैं—५ सुमति, ३ गुप्ति, २२ परिसह, १० प्रकारे यतिधर्म, १२ भावना, ५ चारित्र ये सत्तावन।

॥ अथ निर्जरा तत्वके भेद लिख्यते ॥

निर्जरा तत्व किसको कहिये? जीवरूपी कपड़ा, कर्मरूपी मेल, ज्ञानरूपी पाणी, तप संयम रूपी साजी साबु, उससे धोय के मेल को निकाले जिसको निर्जरा तत्व कहिये।

निर्जरा तत्वके बारह भेद—अणसणमुणोयरिया वित्ती संखेवणं रसच्चाओ। काय किलेसो संलीणयाय बज्झो तवो होइ ॥ १ ॥

पादोपगमणके पांच भेद—शहरके अन्दर करे १, शहरके बहार करे २, कारण पडीयां करे ३, बिना कारण पडीयां करे ४, नियमा पराक्रम रहित करे, जिम वृक्षकी डाल टूटके पड़े ऐसे पड़े ५।

भत्त पच्चक्खाणके छव भेद—शहर के अन्दर करे १, शहरके बहार करे २, कारण पडीयां करे ३, बिना कारण पडीयां करे ४, नियमा पराक्रम रहित करे ५, सहित करे उठे बैठे हाले चाले ६।

इंगित मरणके सात भेद—शहरके अन्दर करे १, शहरके बहार करे २, कारण पडीयां करे ३, बिना कारण पडीयां करे ४, नोमा पराक्रम रहित करे ५, सहित करे उठे बैठे हाले चाले ६, धरतीकी मर्यादा करे ७। इति अनसण।

उणोदरीके दोय भेद—द्रव्य उणोदरी १, भाव उणोदरी २।

द्रव्य उणोदरी के दोय भेद—भंड उपगरण उणोदरी १, भत्तपाणी उणोदरी २।

भंड उपगरण उणोदरीके च्यार भेद—एकेवत्थे (वस्त्र) १ पादे (पात्र) २, प्रत्तकारी रखे ३, थोड़े मोलका हलकादिक ढांव रहित रखे ४।

१७, संखाद त्तिए १८, मोन चरिए १९, दिठ लाभे २० अदिठलाभे २१, पुठलाभे २२, अपुठलाभे २३, भिक्खलाभे २४, अभिक्खलाभे २५, अण्णगिलायए २६, उवणीए २७ परि-मित पिंडवाए २८, सुद्धेसणिए २९, संखादत्तिए ३०।

क्षेत्र भिक्षा चरी के ८ भेद—पेटी के आकार १, अर्द्ध पेटी के आकार २, गौमूत्रके आकार ३, पतंगिया के आकार ४, संखके आकार ५, सिंघाड़के आकार ६, जातां ७, आतां ८।

काल भिक्षा चरीके ४ भेद —पहिले पोहर (प्रहर) में गोचरी करके आहार पाणी लावे, पहिले पोहर में भुगतावे, तीन पोहर का त्याग करे १, पहिले पोहर का त्याग करे, दुजे पोहर में लावे दुजे पोहर में भुगतावे, तीजे चौथे पोहरका त्याग करे २, पहिले दुजे पोहर का त्याग करे तीजे पोहर में लावे, तीजे पोहर में भुगतावे, चौथे पोहर का त्याग करे ३, पहिले दुजे तीजे पोहर का त्याग करे, चौथे पोहर में लावे, चौथे पोहर में भुगतावे ४।

भाव भिक्षाचरीके १५ भेद- तीनं वयंकी स्त्री बाल १, युवा २, वृद्ध ३, तीन वय का पुरुष बाल १ युवा २ वृद्ध ३, अलंकृत ७, [illegible] ८, [illegible] ९, बैठा हो १०, खड़ा हो ११ सिर खुला हो १२, सिर ढका हो १३, [illegible] हो १४ [illegible] हो ॥ इति भिक्षाचरी ॥

२, माया ३, लोभ ४, इनकुं उदीरे नहीं उदय आया निष्फल करे इसकुं कषाय पड़ि संलेहणा कहिये २।

जोगपड़िसंलेहणा के तीन भेद—मन, वचन, काया का जोग, आश्रव सुं रोके, संवर में वर्तावे इसकुं जोग पड़िसंलेहणा कहीये ३। विवत सयणासेण पड़ि संलेहणा किसे कहीये ? उज्जाणे सुवा, आरामे सुवा, देवकुले सुवा, सभासुवा, पवासुवा, पाणिय गिहेसुवा, पाणिय साला सुवा इत्यादिक स्थानक स्त्री, पशु, पंडक रहित भोगवे तिसकुं विवतसयणा सण पड़ि संलेहणा कहीये ४ ॥ इति पड़िसंलेहणा ॥

अथ छप्रकार अभ्यंतर तप—

प्रायश्चित ५० भेद—दश बोलकरी दोष लगावे "कंद्रपेकरी १, प्रमादे करी २, अजाणेकरी ३, अकस्माते करी ४, आपदा पडीयां ५, संकट पड़ीया ६, क्षुधा तृपासं पीडाया थका ७, राग द्वेष करी ८, भय करी ६, पारख्या निमित्ते १०"

दशबोल करी आलोवतो दोष लगावे—

कांपता कांपता आलोवेतो १, अनुमान प्रमाण बांधके आलोवेतो २, देख्या दोष आलोवे अणदेख्या नहीं आलोवेतो ३, सूक्ष्म सूक्ष्म आलोवेतो ४, बादर बादर आलोवेतो ५, गण गणाट करता आलोवेता ६, लोग सुणता आलोवेतो ७, घणा

मनुष्यमें आलोवेतो ८, प्रायश्चितके अजाणपास आलोवेतो ९, प्रायश्चितीये पास आलोवेतो १० ॥

१८ दश बोल करी सहित होय ते आलोवे— जातिवंत १, कुलवंत २, विनयवंत ३, ज्ञानवंत ४, दर्शनवंत ५, चारित्रवंत ६, क्षमावंत ७, वैरागवंत ८, अमाई ९, अपछाणु तावे? १० ॥

जिसमें १० गुण होय उसपे आलोवे— आचारवंत १, अधारवंत २, विहारवंत ३, प्रायश्चितना जाणहो ४, लज्जा मुकावीने आलोवना करावे ५, शुद्ध करवा समर्थ हो ६, आलोया दोष प्रकाशे नहीं ७, दंडे दंड करी प्रायश्चित देवे ८, अपाय दंसी पिय धम्मे ९, दृढ धम्मे १०" ॥

दश प्रकारका प्रायश्चित—आलोयणा १, पडिकमणा २, तदुभया ३, विवेगे ४, विउसग्गे ५, तवे ६, छेदे ७, मूले ८, अणुट्ठा ९, पारंचिय १० ॥ इति प्रायश्चित ॥

विनय के ७ भेद—नाण विनय १, दंसण विनय २, चारित्र विनय ३, मन विनय ४, वचन विनय ५, काय विनय ६, लोगोवयार विनय ७ ।

नाण विनय के पांच भेद—मति १, श्रुति २, अवधि ३, मनपर्यव ४, केवल नाण विनय ५,

दंसण विनयके दोय भेद—सुश्रूषा विनय १, अनच्चासातना विनय २।

सुश्रूषा विनय के १० भेद—गुरु आवे तो उठ खड़ा होवे १, आसन आमन्त्रे २, आसन बिछायदे ३, सत्कार देवे ४, सन्मान देवे ५, वंदना नमस्कार करे ६, हाथ जोड़ीने खड़ा रहे ७, आवतांकूं सेंमा जाय ८, रहितांकी सेवा करे ९, जातां कुं पोहचावन जाय १०।

अणच्चा सायणा विनय के ४५ भेद—अरिहंताका विनय करे १, अरिहंत परूपीया धर्मका २, आचार्य का ३, उपाध्याय का ४, थेवरा का ५, कुलका ६, गणका ७, संघका ८, साधर्मीका ९, क्रिया पात्रका १०, मति ज्ञानका ११, श्रुत ज्ञानका १२, अवधिज्ञान का १३, मनपर्यव ज्ञानका १४, केवलज्ञानका १५, ए पन्नरेकी आसातना टाले, ए पन्नरे का विनय करे, पन्नरे को बहुमान दे, गुण मान करे ए ४५।

चारित्र विनय के ५ भेद—सामायिक चारित्रका विनय १, छेदोप स्थापनाय चारित्रका २, परिहार विशुद्ध चारित्रका ३, सूक्ष्म संपराय चारित्रका ४, यथाख्यात चारित्रका ५।

पहिला सामायिक चारित्रका २ भेद—इत्तरीया अने आउ इत्तरीय कहता थोड़े कालकूं, आउ कहतां जाव-ज्जीवको

इतरीयाके तीन भेद—जघन्य तो सात दिनको, मध्यम च्यार महीनेको, उत्कृष्टी ६ मासको। आवत्कीय सामायिक चारित्रकी स्थिति—जघन्य १ समयकी उत्कृष्टी देश उणी पूर्व कोड़ की १।

छेदोप स्थापनीय चारित्रके २ भेद—सअतिचार, निरतीचार। सअतिचार दोष सहित, निरतीचार दोष रहित।

छेदोप स्थापनीयकी स्थिति—जघन्य १ समयको उत्कृष्टी देशउणी कोड़ पूर्वकी २।

परिहार विशुद्ध चारित्रके २ भेद—अनुद्दाय १, अनुद्दाय २। अनुद कहतां, एक गुरु आठ शिष्य ए नव जणे गच्छ माँहि थी निकले। अनुद्दाय कहतां तपस्या करवाने विषे सावधान हुवा ६ मास ताईं ४ जणा तपस्या करे, ४ जणा वैयावच करे, एक गुरुदेव वखाण देवे। दूसरा छव मास जिन्होंने तपस्या करी सो तो वैयावच करे जिन्होंने वैयावच करी सो तप करे औनसा गुरु है सो वखाण करे, फिर तीसरे छ मास गुरु ही तप करे। आठों शिष्य वैयावच करे, अठारा महीना का तप कह्या छे।

पाठान्तरे—नव नव वर्षका नव जणा दीक्षा लेकर निकले २० वर्ष तक दीक्षा पर्याय पाले, २० वर्षका समुदाय

छांडोने नीकले। प्रथम छमासी में चार जणा तपस्या करे चार जणा वैयावच्च करे, एक जण वखाण बांचे, दूजी छमासीमें तपस्या करता था सो वैयावच्च करे और वैयावच्च करता था सो तप करे तीसरी छ मासीमें वखाण देने वाला तपस्या करे सात जणा वैयावच्च करे एक जणा वखाण बांचे। पारणे रे दिन आंबिल करे। उनालेमें जघन्य उपवास करे, मध्यम बेलो करे, उत्कृष्टो तेलो करे, शियालेमें जघन्य बेलो करे, मध्यम तेलो करे, उत्कृष्ट चोलो करे। चौमासामें जघन्य तेलो करे, मध्यम चोलो करे उत्कृष्ट पंचोलो करे।

परिहार विशुद्ध चारित्रकी स्थिति—जघन्य १ समयकी उत्कृष्टी उणतीस वर्ष उणी क्रोड़ पूर्व की।

सूक्ष्म संपराय के दो भेद—संक्लेश माणे १, विशुद्ध माणे २। संक्लेश माणे कहतां कषाय के भाव सहित, विशुद्ध माणे कहता कषायके भाव रहित।

सूक्ष्म संपरायकी स्थिति—जघन्य १ समयकी उत्कृष्टी अंतर मुहुर्त्तकी, संक्लेश उपसम श्रेणीका धणी, विशुद्ध माणे क्षपक श्रेणीका धणी।

यथाख्यात चारित्र के दोय भेद—छद्मस्थ १, केवली २। छदमस्थ के दोय भेद उपशांत कषाय वीतराग और क्षीण कषाय वीतराग इग्यार मे गुणस्थान की स्थिति जघन्य १

समयं की, उत्कृष्टी अन्तर मुहूर्त की। चारमें गुणठाणाकी स्थिति जघन्य उत्कृष्टी अन्तर मुहूर्त की। केवली तेरह में चवद में गुणठाणामें, तेरमें गुणठाणे की स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्टी देश उणी क्रोड़ पूर्वकी, चवद में गुणठाणे की स्थिति पांच ह्रस्व अक्षरकी, ऐ पांच चारित्रका विनय करे।

मन विनय के दोय भेद—अपसत्थ मन विनय १, पसत्थ मन विनय २।

अपसत्थ मन विनय के १२ भेद—जो मणे सावज्जे १, सकिरीए २, सकक्कसे ३, कडुए ४, निठ्ठुरे ५, फरुसे ६, अण्हय करे ७, छेद करे ८, भेद करे ९, परितावण करे १०, उद्दवण करे, ११, भुओ वघाइए १२। तहप्पगारे मणं नोपधारेज्जा। १२ भेद अपसत्थ मन विनयके हुवे।

पसत्थ मन विनय के १२ भेद—तं चेव पसत्थेणं णेयव्वं ॥ २५ ॥ एवचेव वइ विणओवि एएहिं पएहिं चेव णेयव्वो ॥ २६ ॥ इति वचन विनय ॥

काय विनय के २ भेद—अपसत्थ काय विणए १, पसत्थ काय विणए २।

अपसत्थ काय विनय के ७ भेद—अणाउत्तं गमणे १, अणाउत्तं ठाणे २ अणाउत्तं निसीयणे ३, अणाउत्तं तुयट्टणे ४, अणाउत्तं उल्लंघणे ५, अणाउत्तं पल्लंघणे ६,

णाउत्त संनिंदिय काय जोग जुंजणया ७। सेतं अपसत्थं काय विणए। सेकिंतं पसत्थकाय विणए एवं चेव पसत्थं णाणियव्वं सेतं पसत्थ काय विणए॥ इति काय विणय॥

लोगोवयार विनयके ७ भेद—अब्भास वत्तियं १, परछंदाणु वत्तियं २, कज्जहेउं ३, काय पडि किरिया ४, अत्त-गवेसणया ५, देसकालण्णुया ६, सव्वट्ठेसु अप्पडिलोमया ७॥ इति लोगोवयार विनय॥

वेयावच्च तप के १० भेद—आयरिय वेयावच्चे १, उवज्झाय वेयावच्चे २, थवदीविखत वेयावच्चे ३, गिलाण वेयावच्चे ४, तवस्सि वेयावच्चे ५, थेरे वेयावच्चे ६, साहम्मि वेयावच्चे ७, कुले वेयावच्चे ८, गणे वेयावच्चे ९, संघवेयावच्चे १०। इति वेयावच्च॥

सज्झाय तप के ५ भेद—वायणा १, पुच्छणा २, परिट्टणा ३, अणुपेहा ४, धम्म कहा ५॥ इतिसज्झाय॥

ध्यान तप के ४ भेद—आर्तध्यान १, रौद्रध्यान २, धर्मध्यान ३, शुक्लध्यान ४॥

आर्त्तध्यान के ४ भेद ८ पाए—अमनोगमका शब्द, रूप, गंध, रस स्पर्श उदय आया होय जिसका वियोग वंछे १। मनोगमका शब्द रूप गंध, रस, स्पर्श उदय आया होय जिसका संजोग वंछे २। अनन रोग आया होय जिसका

वियोग चंछे ३। पुनर मूछित काम भोगका अवियोग चंछे ४॥

आर्तध्यान के ४ लक्षण—कंदणीया १, सोयणीया २, तिप्पणीया ३, पिलवणीया ४, ए आर्तध्यान के लक्षण हुवे ॥

रौद्रध्यान के ४ पाए—हिंसाणु बंधी १, मोसाणु बंधी २, तेणाणु बंधी ३, सारक्खणाणु बंधी ४।

रौद्रध्यान के ४ लक्षण—उसण्ण दोसे १, बहुल दोसे २, अण्णाण दोसे ३, मरणंत दोसे ४।

धम्मेज्झाणे चउव्विहे चउपडयारे पण्णत्ते, तंजहा—अणा विजए १, अवाय विजए २, विपाग विजए ३, संठाण विजए ४। धम्मस्सणं ज्झाणस्सणं चत्तारी लक्खणा पण्णत्ता तंजहा—आणारुई १, निसग्गरुई २, सुत्तरुई ३, उवएस रुई ४,। धम्मस्सणं ज्झाणस्सणं चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता तंजहा—वायणा १, पुच्छणा २, परियट्टणा ३, धम्मकहा ४,। धम्मस्सणं झाणस्सणं चत्तारी अणुप्पेहा पण्णत्ता तंजहा—अणिच्चाणुप्पेहा १, असरणाणुप्पेहा २, संसाराणु

प्पेहा ३, एगंताणुप्पेहा ४, ए सूत्र कह्यो ॥

हिवे अर्थ कहे छे-धर्म ध्यान के ४ भेद—आज्ञा विजय १, अपाय विजय २, विपाक विजय ३, संठाण विजय ४।

धर्मध्यान नो पहिलो भेद—आज्ञा विजय कहतां वीतरागनी आज्ञा जे सम्यक सहित, १२ व्रत सहित, ११ पड़िमा श्रावक नो, पांच महाव्रत साधुना, भिखुनी १२ पड़िमा। शुभध्यान, शुभ जोग, ज्ञान दर्शन चारित्र, तप, छकायनी रक्षा करे, ए वीतरागनी आज्ञा आराधवी। तिहां समय मात्रनो प्रमाद न करवो, चतुर्विध तीर्थना गुण कीर्त्तन करवा ए धर्मध्यान नो पहिलो भेद छे।

हिवे धर्मध्यान नो बीजो भेद—अपायविजय कहतां संसार मांहि जीव केहथी दुख पामेछै तेहनो विचार चिन्तवनो। मिथ्यात १, अव्रत २, कषाय ३, प्रमाद ४, अशुभ जोग ५, तथा अठारे पाप स्थानक, छ कायनी हिंसा, सात कुव्यसन, ए दुखना कारण एहवो आश्रव जाणी छांडीने संवर मारग आदरे था, तेहथी जीव दुख न पामे, ए धर्मध्यान नो बीजो भेद।

हिवे धर्म ध्याननो तीजो भेद कहे छै—विपाक विजय कहतां जीव सुख दुख भोगवे छे [illegible]

तेहनों विचार चिन्तयवो, तेहनो एह विचार—जीव जे धारना करे पूर्वे जेहवा शुभा शुभ ज्ञानावरणीय कर्म उपार्ज्याछे ते शुभाशुभ ना कर्मना उदय थी जीव जेहवा सुख दुःख अनुभवे, ते अनुभवतां थकां कोई ऊपर राग द्वेष न आणे, समता भाव आणे, मन वचन कायाना शुभ जोग सहित जिनधर्मने विषे प्रवर्त्ते, जिम निराबाध परम सुख पामे॥ ए धर्म ध्याननो तीजो भेद॥

हिवे धर्म ध्याननो चोथो भेद कहे छे—

संठाण विजय कहतां तीन लोकना आकार नो स्वरूप चिन्तववो, तेहनो एह स्वरूप-लोक सुपइठने आकार छे, जीव अजीव संपूर्ण भर्यो छे, तथा असंख्याता वाण-व्यतरां ना नगर छे, तथा असंख्याता ज्योतिषीना विमाण छे, असंख्याती राजधानी छे, तिहां अढाई द्वीप मांहि तीर्थंकर जघन्य २०, उत्कृष्टा १६० तथा १७०, केवली जघन्य २ कोड़ि, उत्कृष्टा ९ कोड़ि, साधु जघन्य २ हजार कोड़ि, उत्कृष्टा ९ हजार कोड़ि, साधु होय तेहने वंदामि। तथा तीर्छालोक मांही असंख्याता श्रावक श्राविका तिर्यंच छे, तेहना गुण ग्राम करुं, ते तीर्छालोक थकी असंख्यात गुणा अधिक उर्ध्वलोक छे, तिहां १२ देवलोक, ९ नवग्रैवेयक, ५ अनुत्तर विमाण, थई ने ८४ लाख ९७ हजार २३ विमान छे। ते ऊपर सिद्धशिला छ। ते सिद्धशिला केहवी छ? ८ जोजन वाधमें मोटी छे,

ढलतो ढलती छेहड़े माखी को पांख समान पातली रही छै, उंधा छत्रके आकार छै, ४५ लाख जोजनरी लाम्बी चौड़ी छै, १ क्रोड़, ४२ लाख ३० हजार २ सो उणचास जोजन १ गाउ १७६६ धनुष पूणोछव आंगल जाम्हरी परधी छै, तेहनो वर्न केहवो छ, ! केहवो संख, क्षीर समुद्रनो पाणी, मुचकुंदना फूल, अमृत मथा हुवा, त्यार कोसमाहीं थी एक कोस लीजिए, एक कोसके छव भाग कीजे, तेहना छठा भाग माहीं अनंता सिद्ध भगवान विराजे छ, तेहने वंदामि।

ते ऊर्ध्वलोक थी कांइक विशेष अधिको अधोलोक छै, तिहां ८४ लाख नर्कका वासा छै, ७ कोड़ि ७२ लाख भवन [illegible] छै, एहवा तीन लोकना सर्व स्थानक सम्यक् [illegible] सर्व जाव अनत अनंतीवार जनम मरण करी [illegible] इम जाणी सम्यक् सहित सूत्र चारित्रनी आराधना करी [illegible] अजर अमर पद पामें। ए धर्म ध्याननो चौथो [illegible]

हिवे धर्मध्यान ना ४ लक्षण [illegible]

पहिलो लक्षण आणारुई कहतां वीतरागनी आज्ञा [illegible] करवानो रुचि उपजे। एह धर्मध्यान नो पहिलो लक्षण।

हिवे धर्मध्यान नो बीजो लक्षण [illegible]

निसग्ग रुइ कहता जीवने सुभाव [illegible] ज्ञाने करी सूत्र चारित्र धर्म करवानी [illegible] बीजो लक्षण।

अङ्गीकार करवानी रुचि उपजे तेहने उपदेश रुचि कहीये, तथा उपाउ रुचि कहीये ॥ ए धर्मध्यान नो चौथो लक्षण कह्यो ॥

हिवे धर्मध्यानना ४ आलंबण कहे छे—

वायणा १, पुछणा २ परियट्टणा ३, धम्मकहा ४। धर्मध्यान नो पहिलो आलंबन वायणा ते केहने कहीये? विनय सहित ज्ञान तथा निर्जराने हेते सूत्र अथवा ज्ञाण गुरुवादिक समीपे तथा अर्थनी वांचणी लीजे तेहने वायणा कहीये ॥ ए धर्म ध्यानना पहिलो आलंबन ॥ १ ॥

हिवे धर्म ध्यान नो बीजो आलम्बन—

पुछणा, ते केहने कहीये? अपूर्व ज्ञान पामवाने अर्थ यथायोग्य विनय सहित गुरुआदिक ने प्रश्न पूछीजे तेहने पुछणा कहीये ॥ ए धर्म ध्यान नो बीजो आलंबन २ ॥

हिवे धर्म ध्यानना तीजो आलम्बन—

परियट्टणा, ते केहने कहीये? पूर्वे जे जिन भाषित सूत्र अर्थ भण्या छे ते अस्खलित करवाने अर्थे तथा निर्जरा के हेतु (कारण) शुद्ध उपयोग सहित सूत्र अर्थनी वारंवार चिन्तवणा करे तेहने परियट्टणा कहीये ॥ ए धर्म ध्यान नो तीजो आलंबन ३ ॥

हिवे धर्म ध्यानना चौथा आलम्बन—

धम्मकहा, ते केहने कहीये? [illegible] जे तत्व हेतुए करी पाम्या छे, ते भाव हेतु [illegible] सहन विचार निश्चय करीने, [illegible]

अङ्गीकार करवानी रुचि उपजे तेहने उपदेश रुचि कहीये, तथा उपाड रुचि कहीये ॥ ए धर्मध्यान नो चौथो लक्षण कह्यो ॥

हिवे धर्मध्यानना ४ आलांवण कहे छै—

वायणा १, पुछणा २ परियट्टणा ३, धम्मकहा ४। धर्मध्यान नो पहिलो आलंबण वायणा ते केहने कहीये? विनय सहित ज्ञान तथा निर्जराने हेते सूत्र अथवा ज्ञाण गुरुवादिक समीपे तथा अर्थनी वांचणी लीजे तेहने वायणा कहीये ॥ ए धर्म ध्यानको पहिलो आलंबन ॥ १ ॥

हिवे धर्म ध्यान नो वीजो आलम्बन—

पुछणा, ते केहने कहीये? अपूर्व ज्ञान पावाने अर्थ यथायोग्य विनय सहित गुरुआदिक ने प्रश्न पूछीजे तेहने पुछणा कहीये ॥ ए धर्म ध्यान् नो बीजो आलंबन २ ॥

हिवे धर्म ध्यानको तीजो आलम्बन—

परियट्टणा, ते केहने कहीये? पूर्वे जे जिन भाषित सूत्र अर्थ भण्या छे ते अस्खलित करवाने अर्थे तथा निर्जरा के हेतु (कारण) शुद्ध उपयोग सहित सूत्र अर्थनी बरावर चिन्तवणा करे तेहने परियट्टणा कहीये ॥ ए धर्म ध्यान नो तीजो आलंबन् ३ ॥

हिवे धर्म ध्यानको चौथो आलम्बन—

धर्म कथा, ते केहने कहीये? वीतरागे जे भाव जेहवा परूप्या छे, ते भाव तेहवा पोते लइने, गहन विचार निश्चय करीने, शंका

हिवे धर्मध्याननी ४ अणुप्पेहा कहे छे—
एगत्ताणुप्पेहा केहने कहीये ? जीव द्रव्य अने अजीव द्रव्य तेहनो स्वभाव रूप जाणवा अर्थ सूत्रनो अर्थ विस्तार चिन्तवे तेहने एगत्ताणुप्पेहा कहीये ॥ ए धर्म ध्याननी पहिली अनुप्पेहा १ ॥

हिवे धर्मध्यानी बीजी अणुप्पेहा—
अनिच्चाणुप्पेहा ते केहने कहीये ? जीव असंख्यात प्रदेशी अरूपी सदा उपयोगी एहवी म्हारी एक आत्मा छे, जेह भणी वारंवार अर्थ रूप अने पोगला १ मीलसा २ वीलसा ३ पुद्गल ते वर्ण पर्जव छे एह स्वभाव छे तेहवो स्वभाव रहे नहीं, एह धर्म-ध्यान नी बीजी अनुप्पेहा २ ॥

हिवे धर्मध्याननी तीजी अणुप्पेहा—
असरणाणुप्पेहा, ते केहने कहीये ? अभावने विषे अनु पर भाव ने विषे अग पहुचतां जीवने एक सन्यक् शुद्ध पूर्व जिन धर्म विना जनम जरा मरणने दुख निवारवा देवादिक समर्थ नथी, इम जाणीने जिन धर्मना सरणा म्हे जिन परम सुख उपजे। ए तीजी अनुप्पेहा ३ ॥

हिवे चोथी अणुप्पेहा—ते केहने कहीये ? स्वार्थ रूपी संसार समुद्र माहे जनम जरा मरण विजोग संजोग शरीरी मानसी दुख कषाय मिथ्यात तृष्णादिक बहुत जल कल्लोलनी लहर करे, व्यापारि चोरांस लाडकने विषे परिभ्र—

भण करता अनंत जीवना जिन धर्म रूपी द्वीपामो आधार छे, तथा संजम रूपी नावा से तिहां समुपच रूपी निजाम नावा नो खेवणहार (खेवणहार) छे महवी नावा रूपी जीव सिद्ध रूपी नगरने विषे पहुंचे, तिहां अनन्त अतोल अमल सिद्धा सुख पामै। एह धर्म ध्यानकी चोथी अनुप्रेक्षा। ए धर्मध्यान ना गुण जाणी सदा धर्मध्यान ध्याइए॥ इति धर्मध्यान का ४ लक्षण:॥

शुक्ल ध्यान के लक्षण—सुक उझाणे चउव्विहे चउ-प्पडोयारे पण्णत्ते तंजहा-पुहुत्तवियक्के सवियारी १, एगत्तवियक्के अवियारी २, सुहुम किरिए अप्पडिवाई ३, समुच्छिन्न किरिय अणियट्टी ४।

शुक्ल ध्यान के च्यार लक्षण—विवेगे १, विउ-स्सग्गे २, अव्वहे ३, असंमोहे ४।

शुक्ल ध्यान के ४ आलम्बन—खंती १, मुत्ती २, अज्जवे ३, मद्दवे ४।

शुक्ल ध्यान की ४ अणुप्पेहा—अवायाणुप्पेहा १, असुभाणुप्पेहा २, अणन्तवित्तियाणुप्पेहा ३, विप्परिणामाणुप्पेहा ४॥ इतिध्यान॥

विउसग्गतप के २ भेद—द्रव्यविउसग्ग १, भाव-विउसग्ग २।

द्रव्य विउसग्ग के ४ भेद—शरीरविउसग्ग १, गणविउसग्ग २, उपधीविउसग्ग ३, भत्तपाणविउसग्ग ४।

भावविउसग्ग के ३ भेद—कषायविउसग्ग १, संसारविउसग्ग २, कर्मविउसग्ग ३।

कषायविउसग्ग के ४ भेद—कोहे १, माणे २, माया ३, लोभे ४।

संसारविउसग्ग के ४ भेद—नेरीए १, तिरिए २, मणुए ३, देवे ४।

कर्मविउसग्ग के ८ भेद—ज्ञानावरणीय १, दर्शनावरणीय २, वेदनीय ३, मोहनीय ४, आयुष्य ५, नाम ६, गोत्र ७, अंतरायकर्म विउसग्ग ८ ॥ इतिविउसग्ग ॥

॥ इति निर्जरा तत्व समाप्तम् ॥

बंधतत्व।

बंध किसको कहते हैं ? अनेक चीजोंमें एकपने का ज्ञान करनेवाले तथा आत्माके प्रदेश और कर्मके पुद्गल एकसाथ मिले, दूध नीरके माफिक व लोह पिण्ड अग्निके माफिक लोलिभूत होकर बंधे।

जीव आठ कर्मसे बंध्यो हुयो है, जीव और कर्म लोलिभूत है, जैसें दूध और पानी लोलिभूत है, हंसराज पक्षीकी चोंच (चांच) खाटी है, दूधमें घाल्यां दुध न्यारो करदे पाणी न्यारो कर दे, उस माफिक जीव रूप हंसराज ज्ञान रूपी चोंच करीने जीव जुदो करदे कर्म जुदा करदे।

वंधका तत्व च्यार भेद।

पयई सहावो वुत्तो, ठिइ कालावहारणं।
अणुभागो रसोणेया, पएसो दलसंचयो ॥ १ ॥

१ प्रकृतिबंध—आठ कर्मका स्वभाव।

२ स्थितिबंध—आठ कर्मकी स्थितिके काल का मान (प्रमाण)।

३ अनुभागबंध—आठ कर्मको तीव्र मंदादि रस।

४ प्रदेशबंध कर्म पुद्गल के दल आत्मा के साथ बंधे सो।

इन च्यार बंधका स्वरूप मोदकके दृष्टान्त पर है। जैसे कोई मोदक बहुत प्रकारके

द्रव्यके संयोगसे उत्पन्न हुआ, वायु, पित्त, कफने जीस स्वरूप करके हणे, उसको स्वभाव कहिये। २ वोही लाडु, पक्ष, मास, दोय मास तक उसी स्वरूपमें रहे उसको स्थिति बंध कहिये। ३ वोही लाडु, तिखो कड़वो, कषायलो, खाटो, मीठो, होवे उसको रसबंध कहिये। ४ वोही लाडु थोड़ा भाखरका बांध्या हुवा छोटा होय (थोड़ा दलका निपज्या हुवा छोटा होय) ज्यादा दलका निपज्या हुवा मोटा होय उसको प्रदेशबंध कहिये।

च्यार प्रकारके बंधोंका कारण क्या है?

प्रकृतिबंध और प्रदेशबंध योगसे होते हैं। स्थितिबंध और अनुभागबंध कषायसे होते हैं।

ये बंध जाण कर, बंधको तोडना चाहियें, बंधको तोड़नेसे निराबाध परम सुख पामे।

मोक्षतत्व।

मोक्षतत्व जैसे सकल आत्माके प्रदेशासे

सकल कर्मका छुटना, सकल बंधनसे छुटना, सकल कार्यकी सिद्धि होवे, मोक्षगति पामे, उसको मोक्ष कहिये। मोक्षगति च्यार बोलसे प्राप्त होवे—१ ज्ञान, २ दर्शन, ३ चारित्र ४, तप।

मोक्षके नव द्वार।

गाथा–संतपयपरुवणया, दव्वप्पमाणं च खित्त फुसणा य। कालो य अंतरं भागो, भावि अप्पा बहु चेव॥ १ ॥ नर गइ पणिंदि तस्स भव, सन्नि अहक्खा य। खइय समत्त मुक्खोणहार केवल दंसण नाणे न सेसेसु॥ २ ॥

१ सतुपद परूपणा—मोक्षगति पूर्वकालमें थी, वर्तमान कालमें हे, आवता कालमें होवेगा, इति अस्ति हे परन्तु आकाशके फूलके माफिक नास्ति नहीं।

२ द्रव्यद्वार—सिद्ध अनन्ता हे, अभवी जीवसे अनन्त गुणा अधिक हे, एक वनस्पतिकाय का

जीव वर्ज कर. दुजा २३ दण्डक के जीवोंसे सिद्धके जीव अनन्ता हे।

३ क्षेत्रद्वार—सिद्धशिला प्रमाणे है, वह सिद्ध शिला ४५ लाख जोजनकी लांबी पहोली (चवड़ी) है. मध्यमें आठ जोजनकी जाड़ी है. अनुक्रमसे किनारे माखीकी पांख सें भी बहुत पतली है. सोना सरीखी. शङ्ख, चन्द्र, अङ्क, रत्न सपेद रुपाका पट, मोतीका हार सरीखी, क्षीर सागरके पाणीसे भी बहोत निर्मल है, उसकी परिधि १,४२,३०२४६ जोजन, १ गाउ, १७६६ धनुष्य, पुणी छव आंगल झाझेरी हैं, सिद्धके रहनेका स्थान सिद्धशिला पर एक जोजनके छेला गाउका छट्टा भागमें हे (याने ३३३ धनुष्य ३२ आंगुल प्रमाण इतने क्षेत्रमें सिद्ध भगवंत रहे हुवे है)।

४ स्फशना द्वार—सिद्ध क्षेत्रसे कुछ अधिक सिद्धकी स्फशना हे।

५ कालद्वार—एक सिद्ध आश्री आदि है पण अन्त नहीं, सर्व सिद्ध आश्री आदि नहीं और अन्त भी नहीं ।

६ भागद्वार—सर्व जीवसे सिद्धके जीव अनन्तमें भाग है ; लोकके असंख्यातमें भाग है।

७ भावद्वार—सिद्धमें चायिक भाव; केवल-ज्ञान, केवलदर्शन और चायिक समकित और प्रणामिक भाव जो सिद्धपणा समझना ।

८ आंतराद्वार—सिद्ध भगवान संसारमें आवे नहीं, एक सिद्ध जहां अनन्त सिद्ध है और अनन्त सिद्ध वहां एक सिद्ध है, इस वास्ते सिद्धमें आंतरो नहीं ।

९ अल्प बहुत्वद्वार—सबसे थोड़ा नपुंसक सिद्धा, उससे स्त्री संख्यात गुणी सिद्धी, उससे पुरुष संख्यात गुणा सिद्धा, एक समयमें नपुंसक १० सिद्ध होवे, स्त्री २० सिद्ध होवे, पुरुष १०८ सिद्ध होवे ।

जो मोक्षमें जावे वो—१ भवसिद्धिक, २ बादर, ३ त्रस, ४ सन्नी, ५ पर्याप्ता, ६ वज्र ऋषभनाराचसंघयणवाला, ७ मनुष्यगतिवाला, ८ क्षायिक सम्यक्त्ववाला, ९ अप्रमादी, १० अवेदी, ११ अकषाइ, १२ यथाख्यातचारित्रवाला, १३ स्नातकनिग्रन्थी, १४ परमशुक्ललेशी, १५ पण्डित वार्यवान, १६ शुक्लध्यानी, १७ केवलज्ञानी, १८ केवलदर्शनी, १९ चरमशरीरी, ये १९ बोलवाला जीव मोक्षमें जावे; जघन्य दोय हाथकी उत्कृष्टी ५०० धनुष्यकी अवगाहना वाला जीव मोक्षमें जावे; ज० नव वर्षका उ० क्रोड पूर्वका आयुष्य वाला कर्म भूमिका होवे वो मोक्षमें जावे, मोक्ष याने सर्व कर्मसे आत्मा मुक्त हुवा. याने आत्मा अरूपी भावको प्राप्त हुवा. कर्मसे न्यारा हुवा. एक समयमें लोकके अग्रभागमें पहोंच्या, वहां अलोकसे अड़कर्के रहा पण अलोकमें जाय सके नहीं. क्योंके वहां धर्मास्तिकाय नही. (याने

३ काय—छव कायमेंसे त्रस कायको मोक्ष है, पांच कायको नहीं ।

४ भव्य—भवी जीवको मोक्ष है, अभवी जीवको मोक्ष नहीं ।

५ सन्नी—सन्नीसे मोक्ष है, असन्नीसे मोक्ष नहीं। ६ चारित्र—पांच चारित्रमें से यथाख्यातचारित्रसे मोक्ष है, शेष (बाकी) च्यारसे मोक्ष नहीं ।

७ समकित—समकित पांच-१ उपशम समकित, २ सास्वादन, ३ क्षयोपशम, ४ वेदक, ५ क्षायिक, ये पांच समकितमेंसे क्षायिक समकित से मोक्ष है, च्यार समकितसे नहीं ।

८ आहार—अणाहारिकको मोक्ष है, आहारिकको नहीं ।

९ ज्ञान—पांच ज्ञानमेंसे केवलज्ञानसे मोक्ष है, च्यार ज्ञानसे नहीं ।

१० दर्शन—च्यार दर्शनमेंसे केवलदर्शनसे मोक्ष है तीनसे नहीं। ये दस बोल करके सिद्ध शाश्वता है।

२ द्रव्यद्वार—सिद्ध अनन्त हैं।

३ चेत्रद्वार—लोकाकाशके असंख्यातमें भाग सब सिद्ध रहते हैं।

४ स्पर्शनाद्वार—लोकके अग्रभाग फरसकर रह्या है।

५ कालद्वार—एक सिद्ध आश्री आदि है अन्त नहीं, सब सिद्ध आश्री आदि नहीं अंत नहीं।

६ आंतराद्वार—सिद्धाके मांहो मांहीं आन्तरो नहीं है, सब सिद्ध सरीखा है, एक सिद्ध वहां अनन्ता सिद्ध है।

७ भागद्वार—सिद्ध कितने भागमें हैं ? सब जीव संसारमें है उसके अनन्तमें भागमें सिद्ध है, सिद्धसे सबजीव (२४ दण्डकरा जीव) अनन्त गुणा है।

८ भावद्वार—भाव पांच है, उसमेंसे क्षायक भाव तथा परिणामिक भाव प्रवर्ते है, जो परिणामिक है वो लोकमें भवी है वो भवी ही ज रहे परंतु अभवी होवे नहीं, अभव्य वो अभवी ही ज रहे परंतु भवी होवे नहीं; और जीवरो अजीव होवे नहीं ऐसो परिणामिक भाव वो सिद्ध पणो जाणनो।

९ नवमो अल्प बहुत्वद्वार—सर्वसे थोड़ा नपुंसक सिद्ध, उससे स्त्री संख्यात गुणी अधिकी, उससे पुरुष संख्यात गुणा अधिक सिद्ध हुवा।

(१५) पंदरहमें बोले आत्मा आठ--१ द्रव्य आत्मा, २ कषाय आत्मा, ३ जोग आत्मा, ४ उपयोग आत्मा, ५ ज्ञान आत्मा. ६ दर्शन आत्मा, ७ चारित्र आत्मा. ८ वीर्य आत्मा।

(१६) सोलह में बोले दण्डक चौवीस—सात नारकी का एक दण्डक. दश भवनपतिका दश दण्डक. उनके नाम (१ असुर कुमार. २ नाग कुमार. ३ सुवर्ण कुमार. ४ विद्युत कुमार,

भावार्थ—जम्बूवृक्ष को फला हुआ देखकर छ पुरुषों को उसका फल खानेकी इच्छा हुई. इसमें जो पहिला कृष्ण लेश्या वाला था उसको मूलसे वृक्षको उखाड कर फल खानेकी इच्छा हुई। दूजा नीललेश्या वाले को वृक्षकी बडी-बडी शाखाको तोडकर फल खानेकी इच्छा हुई। तीजा कापोत लेश्या वाले को छोटी छोटी शाखा को तोडकर फल खानेकी इच्छा हुई। चौथा तेजोलेश्या वाले को फलका गुच्छा तोडकर फल खानेकी इच्छा हुई। पांचवाँ पद्म लेश्या वाले को पका फल ही तोडकर खानेकी इच्छा हुई। छट्ठा शुक्लेश्या वालेको वृक्षको कोई भी प्रकार की हरकत नुकसानी किया विना ही भूमि पर पडा हुआ फल खाने की इच्छा हुई। इस मुजब लेश्या के अनुसार जीवोंका स्वभाव जान लेना।

कौन कौन लेश्यावाले जीव किस गतिमें जाता है उसका स्वरूप—

गाथा—किण्हाए जाइ निरए, नीलाए था-वरो भवे। कापोताए तीरीए. तेयाए माणुसो भवे ॥२॥ पउमाए देवलोए, सासयट्ठाणं च सु-कललेसाए। इय लेसा भाव फल. पन्नत्ता वीयरागे हिं ॥ ३ ॥

भावार्थ---कृष्णलेश्यावाला नरकमे जाता है नीललेश्यावाला

स्थावरकायमें जाता है, कापोत लेश्यावाला तिर्यंचमें जाता है, तेजो लेश्यावाला मनुष्य गतिमें जाता है, पद्मलेश्यावाला देवगति में जाता है, और शुक्ललेश्यावाला जीव मोक्षमें जाता है।

छ लेश्यावाले जीवोंका लक्षण—

कृष्ण लेश्यावंत का लक्षण—

अतिरौद्रः सदा क्रोधी, मत्सरी धर्मवर्जितः।
निर्दयो वैरसंयुक्तः कृष्णलेश्याधिको नरः॥१॥

भावार्थ—अत्यन्त क्रूर परिणामी, निरंतर क्रोध करनेवाला, दूसरे के गुणका द्वेषी, धर्म रहित, निर्दयी, जीवोंके साथ वैर भाव रखने वाला, पांच आश्रवको सेवने वाला इत्यादि लक्षण वाला जीव कृष्णलेश्यावंत जानना ॥ १ ॥

नीललेश्यावंत का लक्षण—

आलसो मन्दबुद्धिश्च स्त्रीलुब्धः परवंचकः।
कातरश्च सदा मानी, नीललेश्याधिको नरः॥२॥

भावार्थ—आलसु, मंदबुद्धिवाला, स्त्रीलंपट, दूसरे को ठगने वाला, कायर, सदा अभिमानी, तप रहित, प्रमादी, इत्यादि लक्षण वाला जीव नील लेश्यावन्त जानना ॥ २ ॥

कापोत लेश्यावन्तका लक्षण—

शोकाकुलः सदा रुष्टः, परनिन्दात्मशंसकः।

संग्रामे प्रार्थते मृत्युं, कापोतक उदाहृतः ॥ ३ ॥

भावार्थ—सदा क्रोधसे व्याकुलरहे, सदा रोष, परनिन्दक और आत्मप्रशंसक, सदा संग्राममें मृत्युको इच्छने वाला, लडाई करने में तत्पर, मिथ्यादृष्टि, झूठ बोलने वाला, कपटी इत्यादि लक्षणवाला जीव कापोत लेश्यावन्त जानना ॥ ३ ॥

तेजो लेश्यावन्त का लक्षण—

विद्यावान् करुणायुक्तः, कार्याकार्यविचारकः ।
लाभालाभे सदा प्रीतिस्तेजोलेश्याधिको नरः ॥४॥

भावार्थ—विद्यावान्, गुणवान्, कार्याकार्य के विचार दक्ष, लाभमें और अलाभमें समान भाव रखने वाला, मन वचन और काया का योग अच्छा प्रवर्त्तावे, विनयवान् इत्यादि लक्षणवाला जीव तेजोलेश्यावन्त जानना ॥ ४ ॥

पद्म लेश्याका लक्षण—

क्षमावांश्च सदा त्यागी, देवार्चनरतोद्यमी ।
शुचीभूतः सदानन्दी, पद्मलेश्याधिको नरः ॥ ५ ॥

भावार्थ—क्षमावान्, सदा भावत्यागी, अर्थात् ममत्वभाव रहित, दयावान्, सदा शुद्ध देवगुरुकी भक्ति वाला, आलस प्रमाद रहित, पवित्र मन वाला, सदा आनन्दी स्वभाव वाला, इन्द्रिय दमन करनेवाला, थोड़ा बोले, इत्यादि लक्षणवाला जीव पद्मलेश्यावन्त जानना ॥ ५ ॥

संग्रामे प्रार्थते मृत्युं, कापोतक उदाहृतः॥ ३ ॥

भावार्थ—सदा शोक से व्याकुल रहे, सदा रोषे, कलहप्रिय, परनिन्दक और आत्मप्रशंसक, सदा संग्राममें मृत्युको इच्छने वाला, लड़ाई करने में तत्पर, मिथ्यादृष्टि, झूठ बोलने वाला, कपटी इत्यादि लक्षणवालो जीव कापोत लेश्यावन्त जानना ॥ ३ ॥

तेजो लेश्यावन्त का लक्षण—

विद्यावान् करुणायुक्तः कार्याकार्यविचारकः।
लाभालाभे सदा प्रीतिस्तेजोलेश्याधिको नरः ॥४॥

भावार्थ—विद्यावान, गुणवान्, कार्याकार्य के विचार दक्ष, लाभमें और अलाभमें समान भाव रखने वाला, मन वचन और काया का योग इच्छा प्रवर्तावे, विनयवान् इत्यादि लक्षणवाला जीव तेजोलेश्यावन्त जानना ॥ ४ ॥

पद्म लेश्याका लक्षण—

क्षमावांश्च सदा त्यागी, देवार्चनरतोयमी।
शुचीभूतः सदानन्दी, पद्मलेश्याधिको नरः॥ ५॥

भावार्थ—क्षमावान्, सदा भावत्यागी, अर्थात् ममत्वभाव रहित, दयावान्, सदा शुद्ध देवगुरुकी भक्ति वाला, आलस (प्रमाद) रहित, पवित्र मन वाला, सदा आनंदी स्वभाव वाला, इन्द्रिय दमन करनेवाला, थोड़ा बोले, इत्यादि लक्षणवाला जीव पद्मलेश्यावन्त जानना ॥ ५ ॥

स्थावरकायमें जाता है, कापोत लेश्यावाला तिर्यंचमें जाता है, तेजो लेश्यावाला मनुष्य गतिमें जाता है, पद्मलेश्यावाला देवगति में जाता है, और शुक्ललेश्यावाला जीव मोक्षमें जाता है ॥

छः लेश्यावाले जीवोंका लक्षण—

कृष्ण लेश्यावंत का लक्षण—

अतिरौद्रः सदा क्रोधी, मत्सरी धर्मवर्जितः।
निर्दयो वैरसंयुक्तः कृष्णलेश्याधिको नरः॥१॥

भावार्थ—अत्यन्त क्रूर परिणामी, निरंतर क्रोध करनेवाला, दूसरे के गुणका द्वेषी, धर्म रहित, निर्दयी, जीवोंके साथ वैर भाव रखने वाला, पांच आश्रवको सेवन वाला इत्यादि लक्षण वाला जीव कृष्णलेश्यावंत जानना ॥ १ ॥

नीललेश्यावंत का लक्षण—

अलसो मन्दबुद्धिश्च स्त्रीलुब्धः परवंचकः।
कातरश्च सदा मानी, नीललेश्याधिको नरः॥२॥

भावार्थ—आलसु, मंदबुद्धिवाला, स्त्रीलंपट, दूसरे को ठगने वाला, कायर, सदा अभिमानी, नय रहित, प्रमादी, इत्यादि लक्षण वाला जीव नील लेश्यावन्त जानना ॥ २ ॥

कापोत लेश्यावन्तका लक्षण—

शोकाकुलः सदा रुष्टः परनिन्दात्मशंसकः।

स्थावर कायमें जाता है, कापोत लेश्यावाला तिर्यंचमें जाता है, तेजो लेश्यावाला मनुष्य गतिमें जाता है, पद्मलेश्यावाला देवगतिमें जाता है; और शुक्ललेश्यावाला जीव मोक्षमें जाता है।

छः लेश्यावाले जीवोंका लक्षण—

कृष्ण लेश्यावंत का लक्षण—

अतिरौद्रः सदा क्रोधी, मत्सरी धर्मवर्जितः।
निर्दयो वैरसंयुक्तः कृष्णलेश्याधिको नरः॥१॥

भावार्थ—अत्यन्त क्रूर परिणामी, निरंतर क्रोध करनेवाला, दूसरे के गुणका द्वेषी, धर्म रहित, निर्दयी, जीवोंके साथ वैर भाव रखने वाला, पांच आश्रवका सेवने वाला इत्यादि लक्षण वाला जीव कृष्णलेश्यावंत जानना ॥ १ ॥

नीललेश्यावंत का लक्षण—

अलसो मन्दबुद्धिश्च, स्त्रीलुब्धः परवंचकः।
कातरश्च सदा मानी, नीललेश्याधिको नरः॥२॥

भावार्थ—आलसु, मंदबुद्धिवाला, स्त्रीलंपट, दूसरे को ठगने वाला, कायर, सदा अभिमानी, तप रहित, प्रमादी, इत्यादि लक्षण वाला जीव नील लेश्यावन्त जानना ॥ २ ॥

कापोत लेश्यावन्तका लक्षण—

शोकाकुलः सदा रुष्टः, परनिन्दात्मशंसकः।

संग्रामे प्राय ने मृत्युं, कापोतनरः उदाहृतः ॥ ३ ॥

भावार्थ—[illegible] दरिद्र और [illegible] संग्राममें मृत्युको इच्छने वाला, [illegible] करनेमें तत्पर, मिथ्यादृष्टि, झूठ बोलने वाला, कपटी इत्यादि लक्षणवाला जीव कापोतलेश्यावन्त जानना ॥ ३ ॥

तेजो लेश्यावन्त का लक्षण—

विद्यावान् करुणायुक्तः, कार्याकार्यविचारकः ।
लाभालाभे सदा प्रीतस्तेजोलेश्याधिको नरः ॥४॥

भावार्थ—विद्यावान्, गुणवान्, कार्याकार्य के विचार दक्ष, लाभमें और अलाभमें समान भाव रखने वाला, मन वचन और काया का योग अच्छा प्रवर्तावे, विनयवान् इत्यादि लक्षणवाला जीव तेजोलेश्यावन्त जानना ॥ ४ ॥

पद्म लेश्याका लक्षण—

क्षमावांश्च सदा त्यागी, देवार्चनरतो यमी ।
शुचीभूतः सदानन्दी, पद्मलेश्याधिको नरः ॥ ५ ॥

भावार्थ—क्षमावान्, सदा भावत्यागी, अर्थात् ममत्वभाव रहित, दयावान् सदा शुद्ध देवगुरुकी भक्ति वाला, आलस प्रमाद रहित, पवित्र मन वाला, सदा आनन्दी स्वभाव वाला इन्द्रिय दमन करनेवाला, थोड़ा बोले, इत्यादि लक्षणवाला जीव पद्मलेश्यावन्त जानना ॥ ५ ॥

शुक्ल लेश्यावन्त का लक्षण—

रागद्वेषविनिर्मुक्तः, शोकनिन्दाविवर्जितः ।
परमात्मना संपन्नः, शुक्ललेश्यो भवेन्नरः ॥ ६ ॥

भावार्थ—रागद्वेष करके रहित, शोक और परनिंदा से रहित, परमात्मा स्वरूपके ध्यानवाला, परमात्म परिणती वाला, सम्पूर्ण निर्लेप स्वभावी, धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान का ध्यान करने वाला, पाच सुमति तीन गुप्तिका पालनेवाला, इत्यादि लक्षण वाला जीव शुक्ल लेश्यावन्त जानना ॥ ६ ॥

(१८) अठारमें बोले दृष्टि तीन-१ सम्यग्दृष्टि, २ मिथ्यादृष्टि, ३ सम्यग्मिथ्यादृष्टि (मिश्र दृष्टि) ।

(१९) उगणीसमें बोले ध्यान चार-१ आर्तध्यान, २ रौद्रध्यान, ३ धर्मध्यान, ४ शुक्लध्यान ।

च्यार ध्यानका भेद ४८ ।

१ आर्तध्यानका आठ भेद—४ पाया, ४ लक्षण ।

च्यार पाया कहते हैं—

४ पाया कहते हैं—

१ आणा-विजए—श्री वीतराग की आज्ञा चिन्तवे।

२ अवाय विजए—कर्म आने (आवण) का ठिकाणा चिंतवे।

३ विवाग विजए—कर्मका विपाक चिंतवे।

४ संठाण विजए—१४ राजलोकका स्वरूप चिंतवे।

४ लक्षण कहते हैं—

१ आणारूई—आज्ञाकी रुची करे।

२ निसग्गरूई—जाति स्मरणके जोगसे धर्म की रुची करे।

३ उपएसरूई—उपदेश सुणकर धर्मकी रुची करे।

४ सुत्तरूई—सूत्र सुणकर धर्मकी रुची करे।

४ आलम्बन कहते हैं—

१ वायणा—सूत्र की वांचना देवे और सीख

४ पाया कहते हैं—

१ हिंसानुबंधी—हिंसा करके राजी होवे।

२ मोसाणुबन्धी—झूठ बोलीने राजी होवे।

३ तेणाणुबन्धी—चोरी करके राजी होवे।

४ सारक्खणाणु बन्धी—दूसरेने बन्धीखाने नांखकर राजी होवे।

४ लक्षण कहते हैं—

१ उसण्ण दोसे—थोड़ी बातको घणो द्वेष राखे।

२ बहुल दोसे—थोड़ी बातरो घणो खेद राखे।

३ अण्णाण दोसे—अज्ञानके वश द्वेष घणो राखे।

४ आमरणांत दोसे—मरे जहांतक द्वेष छोड़े नहीं।

३ धर्मध्यानका १६ भेद—४ पाया, ४लक्षण, ४ आलंबन, ४ अणुप्पेहा।

४ पाया कहते हैं—

१ आणा विजए—श्री वीतराग की आज्ञा चिन्तवे।

२ आवाय विजए—कर्म आने (आवण) का ठिकाणा चिंतवे।

३ विवाग विजए—कर्मका विपाक चिंतवे।

४ संठाण विजए—१४ राजलोकका स्वरुप चिंतवे।

४ लक्षण कहते हैं—

१ आणारूई—आज्ञाकी रुची करे।

२ निसग्गरूई—जाति स्मरणके जोगसे धर्म की रुची करे।

३ उपएसरूई—उपदेश सुणकर धर्मकी रुची करे।

४ सुत्तरूई—सूत्र सुणकर धर्मकी रुची करे।

४ आलम्बन कहते हैं—

१ वायणा—सूत्र की वांचना देवे और सीखे

२ पडि पूछणा—सिद्धांत का प्रश्न पूछे ।
३ परियट्टणा—आरंवार सूत्र भणे (वार-वार सूत्र भणे)
४ धमकथा—वखाण बांचे सुणे ।
४ अणुप्पेहा कहते है—
१ एगचाणुप्पेहा—ऐसा चिंतवे की हे जीव! तूं एकलो आयो एकलो जावसी ।
२ अणीचाणुप्पेहा—ऐसा चिंतवेकी हे जीव ! संसारिक पदार्थ सब अनित्य है ।
३ असरणाणुप्पेहा—ऐसा चिंतवे की हे जीव ! धर्म विना तूझे कोई सरणा नहीं ।
४ संसाराणुप्पेहा—ऐसा चिंतवेकी हे जीव ! जितने जीव हैं वह सर्व आप आपके कर्म करके परिभ्रमण करते हैं ।
४ शुक्ल ध्यानका १६ भेद-४ पाया, ४ लक्षण, ४ आलम्बन, ४ अणुप्पेहा ।
४ पाया कहते हैं—

१ पुहुत्त वियक्के अविहारी-एक जीवको और अपणा स्वरूपको घणां जायगा चिंतवे (उत्पात, व्यय, ध्रुव इतनो काल, इतनी स्थीति इत्यादि)

२ एगत वियक्के अविहारी--एक जीव स्वरूपने चिंतवे।

३ सुहुम किरिये अनिटी-सुक्ष्म क्रियासे नवर्ते।

४ समुच्छिन्न किरिये अपडवाइ-जोगादिक निरोध करे।

४ लक्षण कहते हैं --

१ अव्वए--भय संज्ञा जीते।

२ असंमोहे--देवतादिकका चरित्रसे मुरझावे नहीं।

३ विवेग—कर्मजालसे विवेग करे।

४ विउसग्ग-कर्मजालसे न्यारो होवे।

४ आलम्बन कहते हैं---

२ पडि पूछणा—सिद्धांत का प्रश्न पूछे।
३ परियट्टणा—वारंवार सूत्र गणे (वारंवार सूत्र भणे)
४ धर्मकथा—वखाण वांचे सुणे।
४ अणुप्पेहा कहते हैं—
१ एगत्ताणुप्पेहा—ऐसा चिंतवे की हे जीव! तूं एकलो आयो एकलो जावसी।
२ अणीचाणुप्पेहा—ऐसा चिंतवेकी हे जीव! संसारिक पदार्थ सब अनित्य है।
३ असरणाणुप्पेहा—ऐसा चिंतवे की हे जीव! धर्म विना तूझे कोई सरणो नहीं।
४ संसाराणुप्पेहा—ऐसा चिंतवेकी हे जीव! जितने जीव हैं यह सर्व आप आपके कर्म करके परिभ्रमण करते हैं।
४ शुक्ल ध्यानका १६ भेद-४ पाया, ४ लक्षण, ४ आलम्बन, ४ अणुप्पेहा।
४ पाया कहते हैं—

१ पुहुत्त वियक्के अविचारी-एक जीवको और अपणा स्वरूपको घणी जायगा चिंतवे (उत्पात. व्यय. ध्रुव इतनो काल. इतनी स्थीति इत्यादि)

२ एगत वियक्के अविचारी--एक जीव स्वरूपने चिंतवे ।

३ सुहुम किरिये अनिट्टी-सुक्ष्म क्रियासे नवर्ते ।

४ समुच्छिन्न किरिये अपडवाई-जोगादिक निरोध करे ।

४ लक्षण कहते हैं --

१ अव्वए--भय संका नहीं ।

२ असंमोहे--देवादिकना करिसे मुं-झावे नहीं ।

३ विवेग सबजालने विवेग करे ।

४ विउस्सग्ग-सबजालने त्याग करे ।

४ आलम्बन कहते हैं---

१ खंति—क्षमा करे ।
२ मुत्ति—निर्लोभ होवे ।
३ अज्जवे—सरल होवे ।
४ मद्दवे—कोमल होवे ।

४ अणुप्पेहा कहते हैं—
१ अणाणुप्पेहा—संसारको अन्यत्वपणो चिंतवे ।
२ विप्परिणामाणुप्पेहा—पुद्गलको अन्यत्व-पणो चिंतवे ।
३ असुभाणुप्पेहा—कर्मका विपाक अशुभ चिंतवे ।
४ अवायाणुप्पेहा—जीव को अखंडित चिंतवे ।

(२०) बीसमें बोले षट् द्रव्यका ३० भेद, द्रव्य छः उनके नाम-१ धर्मास्तिकाय. २ अध-र्मास्तिकाय. ३ आकाशास्तिकाय. ४ काल द्रव्य ५ जीवास्तिकाय. ६ पुद्गलास्तिकाय ।

धर्मास्तिकायका पांच भेद—

१ द्रव्य थकी--एक द्रव्य, २ क्षेत्र थकी-आखालोकप्रमाणे, ३ काल थकी-आदिअंतरहित. ४ भाव थकी-अरूपी: वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं; ५ गुण थकी-चलण गुण. पाणीमें माछलाको दृष्टान्त. जैसे पाणीके आधार माछला चाले, इसी तरह जीव अजीव (घड़ी विगैरह) दोनुं धर्मास्तिकायके आधार चाले।

अधर्मास्ति कायका पांच भेद-

१ द्रव्य थकी-एक द्रव्य, २ क्षेत्र थकी-आखा लोक प्रमाणे, ३ काल थकी- आदिअन्त रहित. ४ भाव थकी-अरूपी. वर्ण नहीं. गन्ध नहीं. रस नहीं. स्पर्श नहीं; ५ गुणथकी-स्थिर गुण. थाका पन्थीने छायांको दृष्टान्त. जैसे थाका पन्थीने छायाके आधार तिसी माफिक जीव अजीवने अधर्मास्तिकायको आधार।

आकाशास्ति कायका पांच भेद

१ द्रव्यथकी-एक द्रव्य, २ क्षेत्र थकी-लोकालोक प्रमाणे, ३ काल थकी-आदिअंत रहित, ४ भाव थकी-अरूपी, वर्ण नहीं, गन्ध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं, ५ गुण थकी-पोलाड़ गुण आकाशमें विकाश भीतमें खूंटीको दृष्टांत, दूधमें पतासाको दृष्टांत।

काल द्रव्यका पांच भेद-

१ द्रव्यथकी,-अनंता द्रव्य, २ क्षेत्र थकी-अढाई द्वीप प्रमाणे, ३ कालथकी-आदिअंत रहित, ४ भावथकी-अरूपी, वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं स्पर्श नहीं; ५ गुणथकी-वर्तन गुण नयाने जुनो करे जुनाने खपावे, कपड़े कंचीरो दृष्टांत।

जीवास्ति कायका पांच भेद-

१ द्रव्य थकी-जीव अनंता, २ क्षेत्र थकी-

(जिसका दोय टुकड़ा नहीं होयगा)
स्कन्ध किसको कहते हैं ?
अनेक परमाणुओं के बन्ध को स्कन्ध कहते हैं।
पुद्गल द्रव्य कितने और उनकी स्थिति कहां है ?
पुद्गल अनन्तानन्त हैं और वे समस्त लोकाकाश में भरे हुए हैं।
३ धर्म द्रव्य किसको कहते हैं ?
गतिरूप परिणमें जीव और पुद्गलको जो गमनमें सहकारी हो, उसको धर्मद्रव्य कहते हैं। जैसे—मछली के लिए जल। धर्म खण्डरूप है किंवा अखण्डरूप है और इनकी स्थिति कहां है ? धर्म एक अखण्ड द्रव्य है और वह समस्त लोकाकाशमें व्याप्त हैं।
४ अधर्म द्रव्य किसको कहते हैं ?
गति पूर्वक स्थिति रूप परिणमें जीव और पुद्गलको जो स्थिति में सहकारी हो, उस

(जिसका दोय टुकड़ा नहीं होय।)

स्कन्ध किसको कहते हैं ?

अनेक परमाणुओं के बन्ध को स्कन्ध कहते हैं।

पुद्गल द्रव्य कितने और उनकी स्थिति कहां है ?

पुद्गल अनन्तानन्त है और वे समस्त लोकाकाश में भरे हुए हैं।

३ धर्म द्रव्य किसको कहते हैं ?

गतिरूप परिणमें जीव और पुद्गलको जो गमनमें सहकारी हो, उसको धर्मद्रव्य कहते हैं। जैसे—मछली के लिए जल। धर्म खण्डरूप है किंवा अखण्डरूप है और इनकी स्थिति कहां है ? धर्म एक अखण्ड द्रव्य है और यह समस्त लोकाकाशमें व्याप्त है।

४ अधर्म द्रव्य किसको कहते हैं ?

गति पूर्वक स्थिति रूप परिणमें जीव और पुद्गलको जो स्थिति में सहकारी हो, उस

जीवद्रव्य अनन्तानन्त हैं और वे समस्त लोकाकाशमें भरे हुए हैं।

एक जीव कितना बड़ा है ?

एक जीव प्रदेशोंकी अपेक्षा लोकाकाशके बराबर है, परंतु संकोच विस्तारके कारण अपने अपने शरीरके प्रमाण है। और मुक्तजीव अंतिम शरीर प्रमाण है।

लोकाकाशके बराबर कौनसा जीव है ?

मोक्ष जानेसे पहिले समुद्घात करनेवाला जीव लोकाकाशके बराबर होता है।

३ पुद्गल द्रव्य किसको कहते हैं ?

जिसमें स्पर्श, रस, गंध, और वर्ण पाये जाय।

पुद्गल द्रव्यके कितने भेद हैं ?

दोय भेद है—एक परमाणु दूसरा स्कन्ध।

परमाणु किसको कहते हैं ?

सबसे छोटे पुद्गलको परमाणु कहते हैं

दोय हैं--एक निश्चयकाल, दुसरा, व्यवहार काल।

निश्चय काल किसको कहते हैं ?

काल द्रव्यको निश्चयकाल कहते हैं।

व्यवहारकाल किसको कहते हैं ?

कालद्रव्यकी घड़ी, दिन, मास आदि पर्यायों को व्यवहार काल कहते हैं।

कालद्रव्यके कितने भेद रूप हैं और उनकी स्थिति कहां है ? लोकाकाशके जितने प्रदेश हैं उतने ही कालद्रव्य हैं और लोकाकाशके एक एक प्रदेशपर एक एक कालद्रव्य (कालाणु) स्थिति हैं।

अस्तिकाय–

अस्तिकाय किसको कहते हैं ?

बहुप्रदेशी द्रव्यको अस्तिकाय कहते हैं।

अस्तिकाय कितने हैं ?

पांच हैं --जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, और

दोय हैं--एक निश्चयकाल, दुसरा, व्यवहार काल।

निश्चय काल किसको कहते हैं ?

काल द्रव्यको निश्चयकाल कहते हैं।

व्यवहारकाल किसको कहते हैं ?

कालद्रव्यकी घड़ी, दिन, मास आदि पर्यायों को व्यवहार काल कहते हैं।

कालद्रव्यके कितने भेद रूप हैं और उनकी स्थिति कहां है ? लोकाकाशके जितने प्रदेश हैं उतने ही कालद्रव्य हैं और लोकाकाशके एक एक प्रदेशपर एक एक कालद्रव्य (कालाणु) स्थित हैं।

अस्तिकाय–

अस्तिकाय किसको कहते हैं ?

बहुप्रदेशी द्रव्यको अस्तिकाय कहते हैं।

अस्तिकाय कितने हैं ?

पांच हैं जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, और

लोकसे बाहरके आकाश को अलोकाकाश कहते हैं।

लोक–

लोककी मोटाई, उचाई, चौड़ाई कितनी है?

लोककी मोटाई उत्तर और दक्षिण दिशामें सब जगह सात राजू है. चौड़ाईपूर्व और पश्चिम दिशामें मूलमें (नीचे जड़में) सात राजू है। ऊपर क्रमसे घटकर सात राजूकी ऊँचाई पर चौड़ाई एक राजू है। फिर क्रमसे बढ़कर साढ़े दश राजूकी ऊँचाई पर चौड़ाई पांच राजू है। फिर क्रमसे घटकर चौदह राजूकी ऊँचाईपर एक राजू चौड़ाई है और ऊर्ध्व और अधोदिशामें ऊँचाई चौदह राजू है।

११ द्वार–

छव (षट) द्रव्यपर कर्मग्रन्थमें इग्यारह द्वार चले वो कहते हैं—

इग्यारा द्वारका नाम—१ प्रणामी, २ जीव ३ मुत्ता (मूर्ति), ४ सपएसा (सर्वप्रदेशी), एगा (एक), ६ खित्ते (क्षेत्र), ७ क्रिया, णिच्चं (नित्य), ९ कारण, १० कर्त्ता, ११ स गइ इयर पवेसा (सब गति)।

(१) प्रणामी कहेता निश्चयमें छवहा द्रव प्रणामी है। (प्रणम्या है, व्याप्या है) व्यवहा में जीव और पुद्गल दोय द्रव्य प्रणामी (आखालोकमें प्रणम्या है), बाकी चार, अप्र णामी है।

(२) जीव कहेता एक तो जीव है बाकी पांच द्रव्य अजीव है।

(३) मुत्ता कहेता एक पुद्गल तो मूर्तिक है बाकी पांच द्रव्य अमूर्तिक है।

(४) सपएसे कहेता पांच द्रव्य तो सप्रदेशी है और एक काल द्रव्य अप्रदेशी है।

(५) एगे कहता धर्मास्ति, अधर्मास्ति-

आकाशास्ति ये तीन द्रव्य तो एक एक है, और जीव, पुद्गल, काल ये तीन द्रव्य अनेक हैं याने अनन्ता है।

(६) खित्ते कहेता आकाशास्तिकाय तो क्षेत्री है, बाकी पांच द्रव्य अक्षेत्री है।

(७) क्रिया कहेता निश्चयमें छव ही द्रव्य सक्रिय (याने क्रिया करके सहित) है, अपनी अपनी क्रिया करे, व्यवहारमें जीव और पुद्गल क्रिय हैं (क्रिया करे) च्यार द्रव्य अक्रिय है।

(८) णिच्चं कहेता निश्चयमें छव ही द्रव्य नित्य, व्यवहारमें जीव और पुद्गल दोय द्रव्य अनित्य बाकी च्यार द्रव्य नित्य।

(९) कारण कहेता जीवके पांच ही द्रव्य कारण है. जीव पांचों के अकारण है (जीव द्रव्य अकारण, बाकी पांच द्रव्य कारण) वा पांच द्रव्य अकारण. एक जीव द्रव्य कारण भी संभव है।

आकाशास्ति ये तीन द्रव्य तो एक एक है, और जीव, पुद्गल, काल ये तीन द्रव्य अनेक हैं याने अनन्ता है।

(६) खित्त कहेता आकाशास्तिकाय तो क्षेत्री है, बाकी पांच द्रव्य अक्षेत्री है।

(७) किया कहेता निश्चयमें छव ही द्रव्य सक्रिय (याने क्रिया करके सहित) है, अपनी अपनी क्रिया करे, व्यवहारमें जीव और पुद्गल क्रिय हैं (क्रिया करे) च्यार द्रव्य अक्रिय है।

(८) णिच्चं कहेता निश्चयमें छव ही द्रव्य नित्य, व्यवहारमें जीव और पुद्गल दोय द्रव्य अनित्य बाकी च्यार द्रव्य नित्य।

(९) कारण कहेता जीवके पांच ही द्रव्य कारण है. जीव पांचों के अकारण है (जीव द्रव्य अकारण, बाकी पांच द्रव्य कारण) वा पांच द्रव्य अकारण. एक जीव द्रव्य कारण भी संभवे है।

आकाशास्ति ये तीन द्रव्य तो एक एक है, और जीव, पुद्गल, काल ये तीन द्रव्य अनेक हैं याने अनन्ता है।

(६) खित्त कहेता आकाशास्तिकाय तो क्षेत्री है, बाकी पांच द्रव्य अक्षेत्री है।

(७) क्रिया कहेता निश्चयमें छव ही द्रव्य सक्रिय (याने क्रिया करके सहित) है, अपनी अपनी क्रिया करे, व्यवहारमें जीव और पुद्गल क्रिय हैं (क्रिया करे) च्यार द्रव्य अक्रिय है।

(८) णिच्चं कहेता निश्चयमें छव ही द्रव्य नित्य, व्यवहारमें जीव और पुद्गल दोय द्रव्य अनित्य बाकी च्यार द्रव्य नित्य।

(९) कारण कहेता जीवके पांच ही द्रव्य कारण है. जीव पांचों के अकारण है (जीव द्रव्य अकारण, बाकी पांच द्रव्य कारण) वा पांच द्रव्य अकारण एक जीव द्रव्य कारण भी संभवे है।

(१०) कर्ता कहेता निश्चयमें छवें ही द्रव्य अपने २ स्वरूपका कर्ता है, व्यवहार में जीवद्रव्य कर्ता है, पांच द्रव्य अकर्ता है।

(११) सव्व गई इयर पवेसा कहता आकाशास्तिकाय तो सर्व गति, ५ द्रव्य असर्व गति; आकाशास्ति काय रूप भाजनमें (पांच द्रव्य समावे (आकाश द्रव्य सर्व दूर व्याप रहा है और पांच द्रव्यने आकाश रूप भाजन में प्रवेश किया है)

२१ इकोसवें बोले राशि दोय—जीवराशि, अजीव राशि।

संसारी जीवका विशेष प्रकारे ५६३ भेद है

नारकी का	१४	भेद।
तिर्यंच का	४८	भेद।
मनुष्यका	३०३	भेद।
देवता का	१९८	भेद।

ए पांच सौ तेसठ भेद हुआ। इसका वि-

स्तार से कहते हैं

नारकीका चउदे भेद—

७ नारकी का अप्रजापता, और प्रजापता ए चउदे।

नारकी का नाम और गोत्र

१ घम्मा. १ रत्नप्रभा-काले रत्न सरीखी।
२ वंसा. २ सक्काप्रभा-मुरड है।
३ सिला. ३ वालुकाप्रभा-वालु है।
४ अंजणा. ४ पंकप्रभा-लोही मांसको कादो है।
५ रिट्ठा, ५ धूम प्रभा-धूवो है।
६ मग्गा. ६ तमः प्रभा-अन्धकार है।
७ मागवई. ७ तमस्तमा प्रभा-अन्धकार से अन्धकार याने धणो अन्धकार है।

तिर्यचका अड्तालीस भेद—

१ सुक्ष्म पृथ्वीकाय. २ बादर पृथ्वीकाय.
३ सुक्ष्म अपकाय. ४ बादर अपकाय. ५ सुक्ष्म

तेउकाय, ६ बादर तेउकाय, ७ सूक्ष्म वाउकाय ८ बादर वाउकाय, ९ सूक्ष्म वनस्पति, १० प्रत्येक वनस्पति, ११ साधारण वनस्पति, १२ बे-इन्द्रिय, १३ तेइन्द्रिय, १४ चौइन्द्रिय, १५ असन्नी (समूर्छिम) जलचर, १६ सन्नी (गर्भज) जलचर, १७ असन्नी थलचर, १८ सन्नी थलचर, १९ असन्नी उरपरिसर्प, २० सन्नी उरपरिसर्प २१ असन्नी भुजपरि सर्प, २२ सन्नी भुजपरि सर्प, २३ असन्नी खेचर, २४ सन्नी खेचर,

इन सबका प्रर्याता और अपर्याता यह दो दो भेद मिलकर ४८ भेद हुए।

तिर्यंच पंचेन्द्रिय—

१ जलचर केने कहीये ? जो जलमें चले उसको जलचर कहीजे जैसे—मच्छ, कच्छ, काछ्या, डेडका इत्यादिक इनका कुल १२॥ लाख क्रोड़ है।

थलचर केने कहिये? जो जमीन उपर चाले

उसको थलचर कहिये इनका च्यार भेद—

१ एक खुरा—घोड़ा, गधा खच्चर इत्यादिक।

२ दोय खुरा—उंट, गाय, भैंस, वलद, वकरा हरण, ससीया, इत्यादिक।

३ गण्डीपद (गण्डी पया)-हाथी, गैंडा इत्यादिक।

४ श्वान पद (सणपया) (जो पंजे नखवाला होवे) जैसे–वाघ, कुत्ता, वीली, शियाल, जरख, रींछ, वंदर, सिंह, चीता, इत्यादि इनका कुल १० लाख क्रोड है।

उरपरि केने कहीये? जो पेटसे चाले उसको उरपरि सर्प कहिजे. जैसे–सर्प, अजगर, अशालीयो—(दोय घड़ीमें ४८ कोस (गउ) लांवो हुवे. चक्रवर्तीकी राजधानी नीचे. अथवा नगरके खाल हेठ उपजे, उसको भस्म नामा दाह हुवे तो ४८ गउ की माटी खायजावे. जमीन धोथी होजाय. चक्रवर्ती की सेन्या धोथी जमीन में

उतर जाय, ऐसी पोलाड़े करदेवे उसको असालीयो कहीजे। चक्रवर्तिरि सेन्यारो विध्वंस होवेके (काल) समयहीं असालीओ उपजे)। महुरग एक हजार जोजनको लांबो सर्प अढाई द्वीप बाहर है उसको महुरग कहीजे, इनका कुल १० लाख क्रोड़ है।

भुजपरि केने कहिये ? जो भुजासे चाले उसको भुजपरि केहीजे जेसे- कोल, नवलीयो, उंदरा, गीलारी, चनण गोह, पाटड़ा गोह इत्यादिकः इनका कुल ६ लाख क्रोड़ है।

खेचर केने कहीये ? जो आकाशमें उड़े। इनका च्यार भेद-

१ चर्म पंखी---चमड़े जेसी पांख होवे. ये अढाई द्वीप मांहे तथा बाहर दोनूं जागा है।

२ रोमय पंखी--सुवाली पांखका पंखी. जेसे मोर. कबूतर, कागला, मेना, सुवा, पोपट, बुगला, कायल, चील, मकरा, तीतर, बाज

इत्यादिक ये अढाई द्विप मांहे तथा बाहीर दोनुं ठीकाणे है।

३ समुद्ग पंखी--इनकी पांख डाभ माफक बीड़ोड़ी रेवे ये पक्षी अढाई द्वीप बहार है।

४ वीतत पंखी-इनकी पांख सदाइ फाट्योड़ी रेवे, ये पक्षी अढाई द्वीप बहार है: इनका कुल १२ लाख कोड है।

मनुष्य के ३०३ भेद।

पन्द्रह कर्मभूमि तीस अकर्मभूमि, और छप्पन अन्तरद्वीप. यह १०१ गर्भज मनुष्यका पर्याप्ता. और १०१ अपर्याप्ता ये २०२। और १०१ समुर्च्छिम मनुष्यका अपर्याप्ता ये ३०३ भेद हुवा।

गभज मनुष्यका विस्तार=

१५ कमभूमि — ५ भरत ५ इरवत ५ महाविदेह ये पनरे कमभूमि मनुष्यका क्षेत्र कहां है

एक लाख योजनका जम्बूद्वीप है, उसमें से १ भरत और १ ईरवत १ महाविदेह ये ३ जम्बूद्वीपमें हैं ; उसके चारों तरफ दोय लाख जोजनका लवणसमुद्र है, उसके चारों तरफ च्यार लाख जोजनको धातकी खंड है. उसमें २ भरत २ इरवत २ महाविदेह ये छव क्षेत्र हैं ; उसके चारों तरफ आठ लाख जोजनको कालोदधि समुद्र है : उसके चौतरफ आठ लाख जोजनका अर्ध पुष्कर द्वीप है, उसमें २ भरत २ इरवत २ महाविदेह ये छव क्षेत्र हैं, ये पंदरह क्षेत्र। पंदरह कर्मभूमि किसको कहते हैं? जहां राजा राणी की रीत है, देणो देव, लेणों लेव, कर्यांग कर्यांरी परणे, साधु साध्वीका व्यवहार है, तथा ७२ कला पुरुषोंकी और ६४ कला स्त्रियोंकी १०० प्रकार का शिल्प कर्म जहा पर यह सब विद्यमान हो तथा त्रेसठ शलाका पुरुष सहित, असी तरवारकी कमाई, मसी लेखनकी कमाई, कसी किसानकी कमाई,

करके पेट भरे, खेत, सेत, उर्वीखेत। खेत कहेता ग्वेञ्या धान नीपजे: सेत कहेता सींच्यां धान नीपजे: उवी खेत कहेता अड़क धान उपजे, धान चार प्रकार को-सीरो, डोडो, उम्बी, फली: सिरो (सीटो) बाजरीरो, मक्कीयेरो, आद देइने अनेक भेद। डोडो, अफीमरो, धतुरेको आद देई अनेक भेद। उम्बी जवारकी, चांवलांकी आदि देई अनेक भेद। फली मोठारी, गवाररी आद देईने अनेक भेद।

३० अकर्मभूमि मनुष्य---५ हेमवय, ५ हीरण्यवय, ५ हरीवास, ५ रम्यकवास, ५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरु ये तीस।

१ हेमवय, १हिरण्यवय, १ हरिवास, १ रम्यकवास १ देवकुरु, १ उत्तरकुरु ये छव क्षेत्र जम्बूद्वीप में हैं।

२ हेमवय, २ हिरण्यवय, २ हरिवास, २ रम्यकवास, २ देवकुरु, २ उत्तर कुरु ये बारह क्षेत्र धातकी खण्डमें हैं

एक लाख योजनका जम्बूद्वीप है, उसमें से १ भरत और १ ईरवत १ महाविदेह ये ३ जम्बूद्वीपमें हैं ; उसके चारों तरफ दोय लाख जोजन का लवणसमुद्र है, उसके चारों तरफ च्यार लाख जोजनको धातकी खंड है. उसमें २ भरत २ इरवत २ महाविदेह ये छव खेत्र हैं ; उसके चारों तरफ आठ लाख जोजनको कालोदधि समुद्र है : उसके चौतरफ आठ लाख जोजनको अर्ध पुष्कर द्वीप है. उसमें २ भरत २ इरवत २ महाविदेह ये छव खेत्र हैं, ये पंदरह खेत्र। पंद्रह कर्मभूमि किसको कहते हैं? जहां राजा राणी की रीत है, देणो देंव, लेणो लेव, कर्यांग कर्यांरी करणी, साधु साध्वीका व्यवहार है, तथा ७२ कला पुरुषोंकी और ६४ कला स्त्रियोंकी १०० प्रकार का शिल्प कर्म जहां पर यह सब विद्यमान हो तथा त्रेसट शलाका पुरुष सहित असी तरवारकी कमाई, मसी मषनकी कमाई, कसी किसानकी कमाई,

करके पेट भरे, खेत, सेत, उर्वीखेत। खेत कहेता ग्वेड्या धान नीपजे; सेत कहेता सींच्यां धान नीपजे; उर्वी खेत कहेता अड़क धान उपजे, धान चार प्रकार को-सीरो, डोडो, उम्बी, फली; सिरो (सीटो) बाजरोरो, मक्कीयेरो, आद देइने अनेक भेद। डोडो, अफीमरो, धतुरेको आद देई अनेक भेद। उम्बी जवारकी, चांवलांकी आदि देई अनेक भेद। फली मोठारी, गवाररी आद देइने अनेक भेद।

३० अकर्मभूमि मनुष्य---५ हेमवय, ५ हीरणय-वय, ५ हरीवास, ५ रम्यकवास, ५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरु ये तीस।

१ हेमवय, १हिरणयवय, १ हरिवास, १ रम्यकवास १ देवकुरु, १ उत्तरकुरु ये छव क्षेत्र जम्बूद्वीप में हैं।

२ हेमवय, २ हिरणयवय, २ हरिवास, २ रम्यक वास, २ देवकुरु, २ उत्तर कुरु ये बारह क्षेत्र धातकी खण्डमें हैं

एक लाख योजनका जंम्बूद्वीप है, उसमें से १ भरत और १ ईरवत १ महाविदेह ये ३ जम्बू द्वीपमें हैं ; उसके चारों तरफ दोय लाख जोजन का लवणसमुद्र है, उसके चारों तरफ च्यार लाख जोजनको धातकी खंड है, उसमें २ भरत २ इरवत २ महाविदेह ये छव क्षेत्र हैं ; उसके चारों तरफ आठ लाख जोजनको कालोदधि समुद्र है ; उसके चोतरफ आठ लाख जोजनको अर्ध पुष्कर द्वीप है, उसमें २ भरत २ इरवत २ महाविदेह ये छव क्षेत्र हैं, ये पंदरह क्षेत्र। पंदरह कर्मभूमि किसको कहते हैं? जहां राजा राणी की रीत है, देणों देवे, लेणों लेवे, कवांरा कवांरी परणे, साधु साध्वीका व्यवहार है, तथा ७२ कला पुरुषोंकी और ६४ कला स्त्रियोंकी १०० प्रकार का शिल्प कर्म जहां पर यह सब विद्यमान हो तथा त्रेसठ शलाका पुरुष सहित, असी तरवारकी कमाई, मसी लेखनकी कमाई, कसी किसानकी कमाई,

करके पेट भरे, खेत, सेत, उवीखेत। खेत कहेता खेड्या धान नीपजे: सेत कहेता सींच्यां धान नीपजे: उवी खे त कहेता अड़क धान उपजे, धान चार प्रकार को-सीरो, डोडो, उम्बी, फली: सिरो (सीटो) बाजरीरो. मक्कीयेरो. आद देइने अनेक भेद। डोडो. अफीमरो. धतुरेको आद देई अनेक भेद। उम्बी जवारकी.चांवलांकी आदि देई अनेक भेद। फली मोठारी.गवाररी आद देईने अनेक भेद।

३० अकर्मभूमि मनुष्य---५ हेमवय. ५ हीरण्यवय. ५ हरीवास. ५ रम्यकवास, ५ देवकुरु. ५ उत्तरकुरु ये तीस।

१ हेमवय. १हिरण्यवय. १ हरिवास, १ रम्यकवास १ देवकुरु. १ उत्तरकुरु ये छव क्षेत्र जम्बूद्वीप में हैं।

२ हेमवय. २ हिरण्यवय. २ हरिवास. २ रम्यकवास. २ देवकुरु. २ उत्तर कुरु ये बारह क्षेत्र धातकी खण्डमें हैं

उतर जाय, ऐसी पोलाड़ करदेवे उसको असालीया कहीजे। चक्रवर्तरि सेन्यारो विध्वंस होणेके (काल) समय ही असालीयो उपजे। महुरग एक हजार जोजनको लांबो सर्प अढाई द्वीप बाहर है उसको महुरग कहीजे, इनका कुल १० लाख क्रोड़ है।

भुजपरि केने कहिये ? जो भुजासे चाले उसको भुजपरि केहीजे जैसे- कोल, नवलीयो, उंदरा, गीलारी, बनरा गोह, पाटड़ी गोह इत्यादिक; इनका कुल ६ लाख क्रोड़ है।

खेचर केने कहीये ? जो आकाश में उड़े। इनका च्यार भेद-

१ चर्म पंखी---चमड़े जैसी पांख होवे, ये अढाई द्वीप मांहे तथा बाहर दोनं जागा है।

२ रोमय पंखी--सुवाली पांखका पंखी. जैसे मोर, कबूतर, कागला, मेना, सुवा, पोपट, बुगला, कायल, चील, मकरा, तीतर, बाज

करके पेट भरे, खेत, सेत, उवीखेत। खेत कहेता खेड्या धान नीपजे; सेत कहेता सींच्यां धान नीपजे; उवी खेत कहेता अड़क धान उपजे, धान चार प्रकार को-सीरो, डोडो, उम्बी, फली; सिरो (सीटो) बाजरीरो, मकीयेरो, आद देइने अनेक भेद। डोडो, अफीमरो, धतुरेको आद देई अनेक भेद। उम्बी जवारकी, चांवलांकी आदि देई अनेक भेद। फली मोठारी, गवाररी आद देईने अनेक भेद।

३० अकर्मभूमि मनुष्य---५ हेमवय, ५ हीरण्यवय, ५ हरीवास, ५ रम्यकवास, ५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरु ये तीस।

१ हेमवय, १ हिरण्यवय, १ हरिवास, १ रम्यकवास १ देवकुरु, १ उत्तरकुरु ये छव क्षेत्र जम्बूद्वीप में हैं।

२ हेमवय, २ हिरण्यवय, २ हरिवास, २ रम्यक वास, २ देवकुरु, २ उत्तर कुरु ये बारह क्षेत्र धातकी खण्डमें हैं

२ हेमवय, २ हिरण्णवय, २ हरिवास, २ रम्यकवास, २ देवकुरु, २ उत्तरकुरु ये बारह खंड अर्द्ध पुष्कर द्वीपमें हैं।

अकर्मभूमि किसको कहते हैं ? जहां राजा नहीं, राणा नहीं, कर्षण करणी करणी नहीं, देणा देवे नहीं, लेणा लेवे नहीं, साधु साध्वीका व्यवहार नहीं, ६३ शलाका पुरुष रहित, (२४ तिर्थंकर १२ चक्रवर्त्ति ९ बलदेव ९ वासुदेव ९ प्रतिवासुदेव) विहरमाण, राजा-प्रजा विरोह करके रहित, असी नहीं, मसी नहीं, कसी नहीं. जिनको दस प्रकारके कल्प वृक्ष वांछा पूरा करे उनके नाम---

मत्तंगया भिंगा तुडियंगा दीव जोइ चित्तंगा।
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भोजन का दातार।

३ तुडियंगा कहेता ४९ उगणपचास प्रकारका वाजिंत्र, नाटक का दातार।

४ दिव कहेता रत्न जड़ावका दिवांके दातार।

५ जोई कहेता सूर्य्यकी ज्योति समान ज्योति के दातार।

६ चित्तगा कहेता चित्राम सहित फूलकी माला का दातार।

७ चित्तरसा कहेता चित्तने गमे ऐसा अनेक प्रकारका भोजनादिकका दातार।

८ मणवेगा कहेता रत्न जड़तका आभुषण (गहणा) का दातार।

९ गीहगारा कहेता (४२) बयांलीस भोमिया महेलका दातार।

१० अणियगणाउ कहेता अनेक जातका रत्न जड़तका नाकरे वायरासे उड़े एसा वस्त्रका दातार।

छप्पन अन्तरद्वीपके मनुष्य, छप्पन अन्तर द्वीपमें हैं। अब छप्पन अन्तर द्वीप कहते है--- जम्बूद्वीपके भरत क्षेत्र की मर्यादाको करणहार चुल हिमवंत नामे पर्वत है, पीलो सुवर्णमय हैं सो जोजन को ऊंचो, पचीस जोजन को जमीन में उंडो, एक हजार बावन जोजन. बारह कलाको पहोलो (चवड़ो) है, २४९३२ जोजन लम्बो है इसकी बांह ५३५० जोजन और पनरह कलाकी है, इसकी जीवा २४९३२ जोजन पुणकला की है इसकी धनुष्य पीठीका २५२३० जोजन और च्यार कलाकी है, उसके पूर्व पश्चिमके छेड़े दोय दोय डाढा निकली हुई हैं, एक एक डाढा चारासीसे चोरासीसे जोजन झाझेरी लम्बी है, एक एक डाढा उपर सात सात अन्तरद्वीप हैं. वो किस तरहसे है ? जम्बूद्वीपकी जगतीसे ३०० जोजन जावे तब ३०० जोजनका लम्बा चौड़ा पहेला अन्तरद्वीप आवे १. वहांसे ४०० जोजन जावे

जब ४०० जोजनको लम्बो चोड़ो दुजो अन्तर द्वीप आवे २, वहांसे ५०० जोजन जावे जब ५०० जोजन को लम्बो चोड़ो तीजो अन्तर द्वीप आवे ३. वहांसे ६०० जोजन जावे जब ६०० जोजनको लम्बो चोड़ो चोथो अन्तर द्वीप आवे ४। वहांसे ७०० जोजन जावे जब ७०० जोजन को लम्बो चोड़ो पांचमो अन्तर द्वीप आवे ५, वहांसे ८०० जोजन जावे जब ८०० जोजनको लम्बो चोड़ो छट्ठो अन्तर द्वीप आवे ६, वहांसे ६०० जोजन जावे जब ६०० जोजन को लम्बो चोड़ो सातमो अन्तरद्वीप आवे ७. इस तरह एक एक डाढ़ापर सात सात अन्तरद्वीप है. उसको च्यारसुं गुणा करता २८ अठावीन अन्तरद्वीप हुवा: ये २८ चुलहिमवंत पवनके दोनों छेड़े की च्यार डाढा उपर है। इसी तरह इरवत क्षेत्रकी मर्यादाको करणहार शिखरी नामे पवन है. वो चुल हेमवंत पवनके माफिक है. इस शिखरी पवनके पूर्व पश्चिम

के छेड़े अठावीस अन्तरद्वीप है। इन दोनों पर्वतके छेड़े ५६ अन्तरद्वीप जाणना। (इनका पूर्ण स्वरूप जीवाभिगम सूत्र से जानना)

समुच्छिम मनुष्यका १०१ भेद, चवदा स्थानमें १०१ समुच्छिम मनुष्य उपजे सो कहते हैं—

(१) उच्चारेसुवा कहेता वड़ी नीति (विष्टा) में उपजे।
(२) पासवणेसुवा कहेता लघु नीति (पेसाब) में उपजे।
(३) खेलेसुवा कहेना खंखार कफमें उपजे।
(४) संघाणेसुवा कहेना नाकका श्लेष्म (सेड़ा) में उपजे।
(५) वंतेसुवा कहेना वमनमें (उल्टीमें) उपजे।
(६) पित्तेसुवा कहेना पित्तमें उपजे।

(७) पूए सुवा कहेता राध (रसी) में उपजे।

(८) सोणीये सुवा कहेता रुधिर (लोही) में उपजे।

(९) सुक्के सुवा कहेता वीर्यमें उपजे।

(१०) सुक्क पोग्गल पड़िसाड़ीये सुवा कहेता सुका हुआ वीर्यका पुद्गल पीछा आला होणे से उपजे।

(११) विगयजीवकलेवरेसुवा (मृत कलेवरे सुवा) कहेता जीव रहित शरीर में उपजे (कलेवर में उपजे)

(१२) इत्थी पुरुष संजोगे सुवा कहेता स्त्री पुरुषका संजोगसे उपजे।

(१३) नगर निधमणेसुवा कहेता नगरका खाल, गटर मोरी वगेरहमें उपजे।

(१४) सव्वे असुई ठाणे सुवा कहेता सब अशुची स्थान में उपजे।

इति ३०३ मनुष्यका भेद समाप्त।

देवताके १९८ (एकसो अठाणवें) भेद-

१० भुवनपति, १५ परमाधामी, १६ वाणव्यन्तर १० तिर्यक्जृंभिका, १० ज्योतिषी, ३ किल्विषी, १२ देवलोक, ९ नव लोकांतिक, ९ नवग्रैवेयक, ५ अनुत्तर विमाण ये ९९ जातिका पर्याप्ता अपर्याप्ता ये १९८ भेद हुए।

१० भुवनपति (इनका नाम सोलमा बोलसे जाणना)

१५ परमाधामीका नाम—१ अम्बे, २ अम्बरसे ३ शामे (भे), ४ सबले, ५ रुद्र, ६ महारुद्र, ७ काले, ८ महाकाले, ९ असिपत्र, १० धनुपपत्ते ११ कुम्भ, १२ वालु, १३ वेयरणी, १४ खरस्वरे, १५ महाघोष।

१६ वाणव्यन्तरका नाम १ पिशाच, २ भूत, ३ जक्ष, ४ राक्षस, ५ किन्नर ६ किंपुरुष, ७ महोरग, ८ गन्धर्व ९ आणपन्नी, १० पाण-

पन्नी, ११ इसीवाइ, १२ भुइवाई, १३ कंदोय, १४ महाकन्दीय, १५ कोहण्ड, १६ पयङ्गदेव ।

१० तिर्यग् जृम्भिकका नाम—१ अन्न जृम्भिक, २ पाण जृम्भिक, ३ लयण जृंभिक, ४ सयण जृंभिक ५ वस्त्र जृम्भिक, ६ फूल जृंभिक, ७ फल जृम्भिक, ८ फलफूल जृम्भिक, ९ बीज जृम्भिक, १० अवियत जृम्भिक ।

१० ज्योतिषी का नाम—१ चन्द्रमा, २ सूर्य, ३ ग्रह, ४ नक्षत्र, ५ तारा, ये पांच अढाईद्वीप में चल हैं और पांच अढाईद्वीप बाहिर स्थिर है ।

३ किल्विषीका ना—१ त्रण पल्यरी स्थितिवाला, २ त्रण सागरकी स्थिति वाला, ३ तेरह सागरकी स्थिति वाला । तीन पल्यवाले ज्योतिषी देवोंके ऊपर हैं परन्तु प्रथम द्वितीय स्वर्ग के नीचे हैं । तीन सागर वाले प्रथम द्वितीय स्वर्गके ऊपर हैं किंतु तृतीय चतुर्थ

स्वर्गके नीचे हैं। तेरह सागरकी स्थितिवाले किल्विषी देव पांचवें स्वर्गके ऊपर हैं छट्ठे स्वर्गके नीचे हैं।

१२ बारह देवलोकका नाम—१ सुधर्म, २ ईशान ३ सनत कुमार, ४ माहेंद्र, ५ ब्रह्म, ६ लांतक ७ महाशुक्र, ८ सहस्रार, ६ आणत, १० प्राणत, ११ आरण, १२ अचुय (अच्युत)।

६ नवलोकांतिकका नाम-

सारस्स माइच्च, वह्नि वरुणा गजतोया। तुसीया अव्वाबाहा, अग्गीचा चेव रिट्ठा य ॥ १ ॥

१ सारस्सय (सारस्वत) २ माइच्च [आदित्य], ३ वह्नि, [वह्नि]. ४ वरुण, ५ गजतोया, ६ तुसीया, ७ अव्याबाधा ८ अग्गिचा, ९ रिट्ठा।

९ नव ग्रैवेयकका नाम-

१ भद्र, २ सुभद्र ३ सुजाय ४ सुमाणसे ५ पियदंसण ६ सुदंसण, ७ अमोह, ८ सुपडिबद्ध, ९ जसोधर।

५ पांच अनुत्तर विमाणका नाम:-

१ विजय, २ विजयंत, ३ जयंत, ४ अपराजित, सर्वार्थ सिद्ध।

अजीव राशिका ५६० भेद ॥

धम्मा धम्मागासा, तिय तिय भेया तहेव अद्धाय।
ए ए चउ सुविदव्वे, खिते काले य भाव गुणे ॥१॥

अजीव अरूपीका ३० और अजीवरूपीका ५३० ये कुल ५६० भेद।

अजीव अरूपीका ३० भेद—

(३) धर्मास्तिकायका खंध, देश, प्रदेश ये तीन।
(३) अधर्मास्तिकाय का खंध, देश, प्रदेश।
(३) आकाशास्तिकाय का खंध, देश, प्रदेश।
(१) कालद्रव्यका एक भेद।

(५) धर्मास्तिकाय का पांच भेद-१ द्रव्य, २ क्षेत्र, ३ काल, ४ भाव, ५ गुण।

५ अधर्मास्ति कायका पांच भेद-१ द्रव्य, २ क्षेत्र, ३ काल, ४ भाव, ५ गुण ।

५ काल द्रव्यका पांच भेद-१ द्रव्य, २ क्षेत्र, ३ काल, ४ भाव, ५ गुण ।*

अजीव रूपीका ५३० भेद ॥

संठाण वण्णरस य गंधे, फासे अ तिन्नि सयक्कमसो ।
छयालीसं भया, चुलसीय सयं सरूवीणं ॥ १ ॥

१०० संठाण ५—परिमंडल, वट, त्रंस, चोरस, आयत एक एक का भेद २०×५ = १००

१०० वर्ण ५—कालो, नीलो, रातो, पीलो, धोलो एक एक रंगका भेद २०×५ = १०० ।

१०० रस ५—तीखो, कड़वो, कषायलो, खट्टो, मीठो, एक एक का भेद २०×५—१०० ।

४६ गंध २—सुगन्ध, दुर्गन्ध एक एक का भेद २३×२ = ४६ ।

*नोट - इसका विस्तार बीसमा बोलसे जाणना ।

१=४ स्पर्श =—खरखरो, सुंवालो; भारी, हलको; शीत, उष्ण; चीकणो, लुखो, एक एक का भेद २३×=१=४ ।

विशेष विस्तार से ५३० भेद रूपीका ॥

पांच वर्ण, दोय गन्ध, पांच रस, आठ स्पर्श पांच संठाण ये पच्चीस बोलमें जितने जितने बोल पावे वो गिननेसे सर्व मिल कर ५३० भेद होते हैं ।

पांच वर्ण—१ कालो, २ नीलो, ३ रातो, ४ पीलो, ५ धोलो, एक एक वर्णमें वीस वीस भेद पावे —दोय गन्ध, पांच रस, आठ स्पर्श पांच संठाण, ये वीस पंचा सो ।

दोय गन्ध -१ सुगन्ध, २ दुर्गंध एक एक गंधमें तेवीस तेवीस बोल पावे, पांच वर्ण, पांच

रस, आठ स्फर्श, पांच संठाण, ये तेवीस दु ची-यांलीस जाणना।

पांच रस—१ तीखो २ कड़वा ३ कषायलो ४ खाटो, मीठो, एक एक रसमें वीस वीस भेद लाधे, पांच वर्ण, दोय गंध, आठ स्फर्श, पांच संठाण ये वीस पंचा सो।

आठ स्फर्श—१ खरदरो, २ सुंवालो, ३ हलको, ४ भारी, ५ ठंडो, ६ उनो, ७ लुखो, ८ चोपड्यो, एक एक स्फर्शमें तेवीस तेवीस भेद लाधे, पांच वर्ण, दोय गन्ध, पांच रस, छव स्फर्श, पांच संठाण ये तेवीस अट्ठा एक सो चोरासी; जहां खरदराकी पुछा हो तो खरदरो और सुंवालो ये दोय वर्जणा; इसी तरह हलकाकी पुछा होय तो: हलका और भारी ये दोय वर्जणा; इसी तरह ठंडाकी पुछा होव जव ठंडो और उनो ये दोय वर्जणा; इसी तरह चीकणा का पुछा होव जव चीकणो और लुखो ये दोय

वर्जणा: इस माफिक जिस बोलकी पुच्छा होय वो तथा उसका प्रतिपक्ष ये दोय वर्जणा।

इति जीवराशि अजीवराशि का भेद समाप्त ॥

बावीसमें बोले श्रावकजीका बारह व्रत-

१ पहिला व्रतमें श्रावकजी त्रसजीव हणनेका त्याग करे (हालता चालता जीव विना अपराधे मारे नहीं) और स्थावरकी मर्यादा करे।

२ दूजे व्रतमें श्रावकजी मोटको झूठ बोले नहीं।

३ तीजे व्रतमें श्रावकजी मोटकी चोरी करे नहीं।

४ चोथे व्रतमें श्रावकजी पराई स्त्रीका त्याग करे और आपणी स्त्रीकी मर्यादा करे।

५ पाचमें व्रतमें श्रावकजी परिग्रहकी मर्यादा करे।

६ छट्ठा व्रतमें श्रावकजी छव दिशाकी मर्यादा करे (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, उंची, नीची)।

७ सातमें व्रतमें श्रावकजी छवीस बोलकी मर्यादा करे. और पन्दरह कर्मादानका त्याग करे।

२६ बोलकी मर्यादा करे उनका नाम-

१ उल्लणिया विहं-शरीरपुछणेका अंगोछा ।

२ दंतणविहं-दांतण ।

३ फल विहं-वृक्षका फल ।

४ अभंगण विहं-शरीर पर चोपड़नेकी या लेप करनेकी वस्तु तेल प्रमुख ।

५ उवट्टण विहं-मर्दन करनेको वस्तु पीठी प्रमुख।

६ मंज्मण विहं-स्नान करनेका पाणी प्रमुख ।

७ वत्थ विहं-वस्त्र, कपड़ा ।

८ विलेवण विहं-चन्दनादिक ।

९ पुप्फ विहं-फुल ।

१० आभरणं विहं-गहणा, दागीना ।

११ धुप विहं-धुप ।

१२ पेज विहं-उकाली दवा वगेरह पीणेकी वस्तु।

१३ भक्खण विहं-सुंखड़ी बदाम. पिस्ता वगेरह मेवो ।

१४ उदण विहं-चावल [भात] ।

१५ सुप विहं-रांधी हुई दाल ।

१६ विगय विहं-घी, तेल, दूध, दही, मीठा गुड़, खांड, सक्कर, मिश्री वगेरह ।

१७ साग विहं-सीलोत्रीका पत्ता हरा साग ।

१८ माहुर विहं-बेलका फल ।

१९ जीमण विहं-जो वस्तु जीमणोमें आवे उसकी विधि गिणनी ।

२० पाणी विहं-पाणी ।

२१ मुखवास विहं-सुपारी, लौंग इलायची वगेरह मुख साफ करनेकी वस्तु ।

२२ वाहनि विहं पन्नी-पगमें पेहरनेकी जीनस पगरखी प्रमुख ।

२३ वाहण विहं-सवारी घोड़ा गाड़ी, ऊंट वगेरह ।

२४ सयण विहं-सुखकी सेजा बिछावन आदि

२५ सचित्त विहं सचित्त वस्तु पान आदी।

२६ दव्य विहं [illegible]

[illegible]

पन्दरह कर्मादान का नाम ।

१ ईंगाल कम्मे—कोयला कराय के बेचने का व्यापार करे नहीं. पजावा भट्टीका कर्म करावे नहीं ।

२ वण कम्मे—वनका झाड़ (वृक्ष) कटाणे का ठेका लेने देणेका व्यापारका त्याग करें ।

३ साड़ी कम्मे—गाड़ा. गाड़ी. एका. चरखा. पींजरा वगैरह बनवाकर बेचणे के व्यापार का त्याग करे ।

४ भाड़ी कम्मे—गाड्यां. एका. साइकल. मोटर टेक्सी. ऊँट. बैल वगैरह भाड़े फेरे नहीं तथा घर. हाट हवेली व्यापार के निमित्त भाड़ा कमाने के वास्ते तथा ईन्धन के वास्ते बनावे नहीं कोई के पत्थरकी खान आदि की खान खुदावे नहीं ।

५ फोड़ी कम्मे—पृथ्वी का पेट, कूवा, बावड़ी आदि ठेका लेकर फोड़ावे नहीं तथा व्यापार के निमित्त करावे नहीं।

६ दंतवाणिज्भे—हाथी का दांत, उल्लु का नख, मृग का सींग चमड़ा इत्यादिक का व्यापार श्रावक न करे।

७ लक्खवाणिज्भे—लाख, नील, साजी, सोरा, सोहागा, मेनसील इत्यादिक को व्यापार श्रावक न करे।

८ रसवाणिज्भे—रस, मदिरा, घी, मधु (सहत) इत्यादिका व्यापार न करे।

९ विसवाणिज्भे—विष (जहर का अफीम, संखीयो, हरताल, गांजा) का व्यापार श्रावक न करे।

१० केसवाणिज्भे—चंवर, केस प्रमुखको व्यापार श्रावक न करे।

११ जंतपिलणया कम्मे—तिल, सरसु, अलसी

घाणीमें पिलायकर, तेल निकलायकर, बेचनेका व्यापार करे नहीं। तथा घाणयां, कल्यांको व्यापार न करे।

१२ निल्लंच्छण कम्मे—टोघड़ा घोड़ा आदि खसी कराय कर बेचणेको व्यापार न करे।

१३ दवग्गि दावणया कम्मे—वनमें, खेतमें आग लगावे नहीं, खेत की बाड फूंकावे नहीं।

१४ सरदह तलाव परिसोसणया कम्मे—सरवर कुण्ड, तलाव को पाणी सुकावे नहीं, ऐसा व्यापार करे नहीं।

१५ असइ जण पोसणया कम्मे—हिंसक जीव श्वान, बिल्ली, नीनर, कुकड़ाने आपका आजीविकाके वास्ते पाले नहीं, तथा रंड्यादिक ने न पोषे, तथा उनको कुशील सेवणाचार को पइसा आप न लेवे, हिंसाकारक पाप कारक के साथ [illegible] सम पड़कर व्यापारका व्यापार नहीं करे

८ आठमा व्रतमें श्रावकजी अनर्थदण्डका त्याग करे।

९ नवमा व्रतमें श्रावकजी शुद्ध सामायिक करे (सामायिक को नियम राखे)।

१० दशमा व्रतमें देसावगासिक पोषो करे, संवर करे, चवदे नियम चितारे।

चउदे नियम के नाम।

१ सचित्त—याने कच्चा पाणी, कच्चा दाना, कच्ची हरी (लिलोत्री) वगेरह सचित्त (जीवयुक्त) अनेक वस्तु समझना, जिसकी गिणति तथा वजन साथ मर्यादा अपनी इच्छा अनुसार करे।

२ द्रव्य—याने जितनी वस्तु अपने मुंहमें लेनेमें आवे सा उनकी गिणती रखकर मर्यादा करे।

३ विगय—याने दूध दही घृत तेल, गुड़

(मीठे) की गिनती तथा वजन साथ मर्यादा करे।

४ पन्नी—याने जुते, तलिये, मौजे, खड़ाउ इत्यादिक पेरमें पहरने की मर्यादा करना याने गिणती से रखकर उपरायेंतका त्याग करे, संगटेकी जयणा संगटेरो दोष नहीं।

५ तंम्बोल—याने लोंग, सुपारी, इलायची, पान, जायफल, जावंत्री वगेरह मुखवासकी मर्यादा करे।

६ वत्थ—वस्त्र पहरने, ओढने की मर्यादा गिणती से करे।

७ कुसुम--याने फूल, अतर, तेल इत्यादिक जो सूंघनेमें आवे उसकी मर्यादा करे।

८ वाहन--याने गाड़ी, रथ, वग्घी, तांगा, एका, बेली, हाथी, घोड़ा, पालखी, म्याना, रेलगाड़ी, टक्सी (मोटर) रिक्सा, वाइसीकल, मोटर साइकल, डुंगी, न्याव, वोट,

हवाईजहाज विगेरह तिरती, फिरती, च-
लती सब प्रकार की सवारी की मर्यादा
करे।

(९) सयण—याने गादी, तकिया, गलेचा,
छप्परपिलंग, मांचा, खुरसी, मकान वगैरे
जो बेठनेके तथा सोनेके लिये काम आवे
उसकी मर्यादा करे।

१० विलेपण—याने केसर, कुंकुम, चन्दन, तैल,
पीठी, लेप, साबण, सुरमो वगेरे शरीरके
विलेपन करनेकी मर्यादा करे।

११ दिशी—याने पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर,
उंची, नीची यह छव दिशीमें जाणेकी
मर्यादा करे।

१२ अवंभ--याने कुशील (स्त्री सेवन) की रातकी
मर्यादा करे दिनका त्याग करे।

१३ नाहावण--याने स्नान, मज्जन करनेकी म-
र्यादा करे।

१४ भत्तेसु--याने आहार, पाणी करनेकी मर्यादा करे।

॥ छवकायके आरम्भकी मर्यादा करे ॥

१ पृथ्वीकाय--याने मुरड, मट्टी, खडी, गेरूं हिरमच, निमक वगेरे सचित्त पृथ्वीकायके आरम्भकी मर्यादा करे।

२ अप्पकाय-याने सब जातके सचित्त (कच्चा) पाणी पीने तथा वर्तनेकी मर्यादा करे तथा पलींडेकी मर्यादा करे।

३ तेउकाय--याने अग्निका आरम्भ चुला, भट्टी, चिराग रोसनी हुक्का, बीडी, चीलम, चुरट वगेरेकी मर्यादा करे या त्याग करे।

४ वाउकाय--याने पंखीसे पंखासे, कपड़ेसे, वीजणेसे पत्ता, वगेरासे हवा लेनेकी मर्यादा करे।

५ वनस्पति काय-याने हरी, लिलोत्री, फूल, फल, भाजी, साग, तरकारी, छाल, जड़ वगेरे

सचित्त वनस्पति कायकी मर्यादा करे या त्याग करे।

६ त्रसकाय-याने बेइन्द्रिय, तेइंद्रिय, चौरेन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय वगेरह हालता चालता प्राणीने जाएकर मारनेका पच्चक्खाण करे।

तीन प्रकारके व्यापारको मर्यादा—

१ असी-याने शस्त्र, छुरी, कटारी, चक्कु, ढाल, तलवार, बन्दुक कतरणी कैंची वगेरह शस्त्रोंकी मर्यादा करे गिणतासे उपरायंत का त्याग करे।

२ मसी-याने कलम, फांउनटेन पेन, पेनसल, कागज, पत्र, खत, वही वगेरा लिखनेके सामानकी मर्यादा करे।

३ कसी-याने करसाणीका काम खेत, वगीचा, कुंड, बावडी वगेरे की मर्यादा या त्याग करे।

ये सब मिलकर २३ तेवीस बोल हुवे इन

वोलोंकी मर्यादा श्रावक श्राविकाओंको नि-
त्य प्रति (हमेशा) सुवह करना चाहिये और
पिछा शामको याद करलेना चाहिये. कम-
लागे सो निर्जरा खाते ; ऐसा करनेसे सव
दिनमें राई जितना पाप लगता है, और मेरु
जितना पाप टल जाता है. ऐसी मर्यादा
करनेसे महा फलके लाभकी प्राप्ति होती
है, नरक, तिर्यंच की गति टल जाती है
और सद्गति प्राप्त होती है।

११ इग्यारमें व्रतमें श्रावकजी प्रति पूर्ण पोषो
करे।

१२ वारमा व्रतमें श्रावकजी सुजतो दान देवे
याने सुजता आहार पाणीका लेणेवालाने
असुजतो वेरावे नहीं।

पुनः देशविरति के वारह व्रत निश्चय और
व्यवहार से क्रमशः दिखलाते है—

१ प्राणातिपात-विरमण व्रत।

दूसरे जीव को अपने समान जानकर उसकी रक्षा करनी, उसे दुःख न देना--मारना नहीं, वह व्यवहार से प्राणातिपात-विरमण अर्थात् अहिंसाव्रत है। अपनी आत्मा कर्म के वश होकर दुःखी होती है ऐसा जानकर उसे कर्म बन्धनसे छोड़ाना और आत्म-गुणों की रक्षा कर उनकी वृद्धि करनी यह निश्चिय से प्राणातिपातविरमण व्रत कहा जाता है।

२ मृषावाद-विरमण व्रत।

असत्य-झूठ वचन न बोलना यह व्यवहार से मृषावाद-विरमण व्रत है। कोई भी पौद्गलिक चीज को अपनी कहनी, जीव को अजीव या अजीव को जीव कहना, सिद्धांतों का झूठ अर्थ करना यह सब निश्चय-मृषावाद हैं. इन सबों का त्याग को निश्चयमृषावाद-विरमण व्रत

करते हैं। अदत्तादान-आदिक व्रतों को तोड़ने से केवल चारित्र का ही भङ्ग होता है परन्तु इस व्रत का खण्डन करने से तो समकित, ज्ञान और चारित्र ये तीनों का नाश होता है। इसी से सिद्धान्त में कहा गया है कि जो साधु चतुर्थव्रत का खण्डन करता है वह प्रायश्चित्त लेकर शुद्ध हो सकता है. लेकिन जो साधु सिद्धान्त-सूत्रों के अर्थ का मृषा उपदेश देकर इस व्रत को तोड़ता है उसकी शुद्धि आलोचना-प्रायश्चित्त से भी नहीं हो सकती। कारण यह है कि जो अन्य व्रतों का खण्डन करता है उससे केवल अपनी ही आत्मा को मलिन करता है, किन्तु जो सिद्धांतों का मृषा-उपदेश देता है वह दूसरे जीवों की आत्मा को भी मलिन करता है। इस लिये भव्यप्राणियों को उचित है कि वे ऐसे मिथ्यो-पदेश देनेवाले. जो इस दुःषम काल में दुःख गर्भित या मोह-गर्भित वैराग्य को प्राप्त कर

तृष्णा-नदी में बहते हुए नजर आते हैं, उसके सङ्ग से अपने को बचावें।

३ अदत्तादान-विरमण व्रत ।

परकीय चीज को उसके मालिक की बिना आज्ञा लेना—अर्थात् चोरी, धूर्तता, बदमासी या चालाकी से दूसरे की चीज का ग्रहण करना अदत्तादान है और उसके त्याग को व्यवहार से अदत्तादान-विरमण व्रत कहते हैं। निश्चय से अदत्तादान-विरमण व्रत यह होता है कि पांचों इन्द्रियों के तेईस विषयों, आठ कर्मों की वर्गणायें आदि पर-आत्म-भिन्न वस्तुओं के ग्रहण करने की इच्छा तक न करनी। यहां पर कोई प्रश्न कर सकता है कि इंद्रियों के विषयों को और कर्मों को ग्रहण करने की इच्छा करता ही कौन है? इसका उत्तर यह है कि जो पुरुष वीतराग प्रभुके वचनों को ठीक ठीक नहीं समझता और पुण्य के हेतु-भूत शुभ-क्रियायें करता

रहता है, आत्म-स्वरूप को बिना जाने पुण्य की इच्छा प्रायः बहुत लोगों को हुआ करती है, और वे पुण्य कर्म में, जिसके ४२ भेद हैं, शीघ्र प्रवृत्ति भी करते हैं, यह पुण्य की इच्छा करना ही निश्चय अदत्तादान है। इसके त्याग को अर्थात् निष्काम-धर्म को निश्चय से अदत्तादान विरमण व्रत कहते हैं।

४ मैथुन-विरमण व्रत।

दूसरे की स्त्री का त्याग करना पुरुष के लिये, और पर-पुरुष का त्याग करना स्त्री के लिये मैथुन विरमण व्रत है। साधु को सर्वथा स्त्री का त्याग होता है और गृहस्थ को अपनी स्त्री को छोड़कर अन्य स्त्री का। इस त्याग को व्यवहार से मैथुन-विरमण व्रत कहते हैं। और विषयों के अभिलाषों का—तृष्णा का त्याग करना, निश्चय से मैथुन विरमण व्रत कहलाता है। आत्मा स्वगुण ज्ञान-आदिक का

भोगी है, न कि पर वस्तु पौद्गलिक वर्णादिक का। पुद्गल-स्कंध अनंत जीवों की ऐंठ है, ऐसे निश्चय-ज्ञान से अन्तरङ्गलोलुपता का त्याग न होकर केवल वाह्य विषयों के ही त्याग करने पर भी मैथुन- कर्म लगते हैं।

५ परिग्रह परिणाम व्रत।

धन, धान्य, दास, दासी, चतुष्पद पशु घर, जमीन, वस्त्र और आमरण के संग्रह को परिग्रह कहते हैं। साधु के लिये इन सब चीजों का सर्वथा त्याग होता है और गृहस्थों को इन चीजों का इच्छा-परिमाण होता है अर्थात् जिस की जितनी इच्छा हो उससे ज्यादा का त्याग होता है। उस त्याग को व्यवहार-परिग्रहपरि-माण व्रत कहते हैं। राग, द्वेष, अज्ञान, ज्ञाना-वरणीय आदि आठों कर्म, शरीर, इन्द्रियां आदि आत्म-भिन्न वस्तु को पराई जानकर छोड़ना-

अर्थात् परवस्तु में मूर्च्छा-ममता का त्याग करना यह निश्चय परिग्रह परिमाण व्रत है।

६ दिशा-परिमाण व्रत।

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, उर्ध्व और अधः (नीचे) कि दिशाओं में गमन-आगमन के लिये अमुक हद बांधकर बाकी का त्याग करना-जैसा कि पूर्व दिशा में सो कोश तक मैं गमन आगमन करूंगा, इससे आगे नहीं-इसको व्यवहार दिशा-परिमाण व्रत कहते हैं। चारों गति में भ्रमण करना यह कर्मो का फल है, ऐसा जान कर उससे उदासीन होना और सिद्ध-अवस्था की उपादेयता स्वीकारना, निश्चय दिशा-परिमाण व्रत कहलाता है।

७ भोग-उपभोग-परिमाण व्रत

भोजन आदि जो एक ही वार भोगने में आते हैं उनको भोग, और वस्त्र वगैरः जो अनेक

वार उपभोग में आते हैं उन्हें उपभोग कहते हैं, उनका परिमाण करना अर्थात् इच्छा के अनुसार छूट रखकर वाकी का त्याग करना यह व्यवहार से भोग उपभोग परिमाण व्रत कहलाता है। यद्यपि व्यवहार से कर्मों का कर्ता और भोक्ता जीव है, तथापि निश्चय से कर्ता और भोक्ता कर्म ही हैं, परन्तु आत्मा अज्ञानवश अनादि से परभावों का भोगी होता हुआ पर वस्तुओं का ग्राहक और रक्षक भी हुआ अर्थात् आत्मा की ज्ञायकता, ग्राहकता, भोजकता और रक्षकता विगड़ने से उसकी कर्तृता भी विगड़ी। यही कारण है कि वह पर-भाव-रक्षी होता हुआ आठों कर्मों का भी कर्ता हुआ है, किन्तु वास्तव में वह अपने स्वभाव का ही कर्ता है, परंतु उपकरणों के आवृत होने से वह स्वकार्य नहीं कर सकता है. और विभावों का कर्ता है, अज्ञानवश जीव को उपयोग मिला है. परंतु वह भिन्न है।

आत्मा ही जिन गुणों का कर्ता और भोक्ता है ऐसे स्वरूपानुपरागी परिणाम को निश्चय से भोगोपभोग-परिमाण व्रत कहते हैं।

८ अनर्थदण्ड—विरमण व्रत।

विना ही प्रयोजन के अपने को पाप-कार्यों में लगाना -हिंसादि करना-अनर्थदण्ड है। जैसे कोई आदमी हाथ में छड़ी लेकर सैर करने को बगीचा में जाता है, चलते चलते अपनी लड़की को घुमाता हुआ वृक्ष की पत्ती को विना ही प्रयोजन तोड़ता है. जिससे पत्ती के जीवों को तो दुःख यावत् मरण होता है और इससे उस आदमी का कुछ भी काम नहीं निकलता। ऐसे व्यर्थ पापों को छोड़ना व्यवहार अनर्थदण्ड-विरमण व्रत है। जीव मिथ्यात्व. अविरति, कषाय. योग आदि से शुभाशुभ कर्मों का बन्ध करता है जो कि सुख दुःख का कारण होता है. उन

कर्मों के कारणों से अपने को बचाना ही निश्चय से अनथदण्ड विरमण व्रत है।

९ सामायिक व्रत।

मन, वचन और काया के आरम्भों को छोड़कर एकांत में नियमानुसार बैठना या पुस्तकादि पढ़ना अथवा जप करना व्यवहार सामायिक है। अपने ज्ञान, दर्शन और चारित्र गुण की विचारणा करना और सर्व जीवों की सत्ता एक समान जानकर सर्व जीवों के साथ समभाव रखना निश्चय सामायिक व्रत है।

१० देशावकाशिक व्रत।

मन, वचन और काया के योगों को दूरकर एक स्थान में बैठकर धर्म ध्यान करना व्यवहार देशावकाशिक व्रत है। श्रुतज्ञान से छओं द्रव्यों को जानकर पांच द्रव्यों का त्यागकर ज्ञानवंत जीव का ही ध्यान करना निश्चय-देशावकाशिक व्रत है।

११ पौषध व्रत ।

चार या आठ प्रहर तक सब सावद्य कर्मों का त्याग कर समता परिणाम से स्वाध्याय में प्रवृत्ति करना व्यवहार पौषध और अपने आत्मा को ज्ञान-ध्यान से पुष्ट करना निश्चय पौषध व्रत कहलाता है ।

१२ अतिथिसंविभाग व्रत।

पौषध के पारने के समाप्ति के समय या सर्वदा साधु को या साधर्मिकभाई को यथाशक्ति भोजनादि दान देना व्यवहार से अतिथिसंविभाग व्रत है । स्वजीव को, शिष्य को या गृहस्थ को ज्ञान देना पढ़ाना, सिद्धांतों का श्रवण करना और कराना निश्चय से अतिथिसंविभाग व्रत है ।

ये बारह व्रत कहे गये । जो जीव इन व्रतों को समकित के साथ निश्चय और व्यवहार से

धारण करे, उसे जीवको पंचम गुणस्थानक का अधिकारी या देशविरति श्रावक कहते हैं। देश अर्थात् अंश से विरति-त्याग-देश-विरति का अर्थ है। सर्व प्रकार के त्याग को सर्व-विरति कहते हैं। यह सर्व-विरति साधु को होती है। साधु के पांच महाव्रतों में इन बारह व्रतोंका समावेश हो जाता है। व्यवहार और निश्चय मे पूर्वोक्त व्रतोंका पालन करना और ज्ञान ध्यान वर तथा निर्जरा में आत्म-परिणाम को स्थिर करना ही निश्चय-चारित्र है। इस निश्चय-चारित्रके दो मार्ग हैं—१ उत्सर्ग २ अपवाद। उत्कृष्ट तीव्र परिणाम का रहना उत्सर्ग मार्ग है और उस उत्सर्ग को मजबूत करने के लिये जो कारणों या निमित्तों की सेवना की जाय वह अपवाद-मार्ग है। कहा है कि

"संघरणंमि असुद्धं दोण्हवि गिण्हंत-देंतयाण हियं
आउर-दिट्ठन्तेणं, तं चेव हियं असंथरणे ॥"

अर्थात जब तक साधक-भावको बाधा न पहुंचे तब तक निषेध का सेवन न करना चाहिये और साधक-परिणाम न रह सकता हो तब निषेध का आचरण करे। आत्मा-गुण की दृढ़ता के लिये जो किया जाय वह अपवाद मार्ग है।

तेवीसमें बोले साधुजीका पांच महाव्रत

१ पहेला महाव्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे जीव की हिंसा करे नहीं, करावे नहीं करताने भलो जाणे नहीः मन वचन काया करीः तीन करण, तीन जोगसे।

२ दूसरा महाव्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे झूठ बोले नहीं, बोलावे नहीं, बोलताने भलो जाणे नहीं : मन, वचन काया करी तीन करण तीन जोगसे।

३ तीसरा महाव्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं करावे नहीं, करता ने

भलो जाणे नहीं ; मन वचन काया करी; तीन करण तीन जोगसे।

४ चोथा महाव्रत में साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नहीं; सेवावे नहीं; सेवता ने भलो जाणे नहीं; मन वचन काया करी; तीन करण; तीन जोगसे।

५ पांचवां महाव्रतमें साधुजी महाराज सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं रखावे नहीं; राखताने भलो जाणे नहीं; मन वचन काया करी; तीन करण, तीन जोगसे।

चोवीसमें बोले भांगा ४९ को जाणपणो:—

आंक / भांगा	११/९	१२/९	१३/३	२१/९	२२/९	२३/३	३१/३	३२/३	३३/१
करण / जोग	१/१	१/२	१/३	२/१	२/२	२/३	३/१	३/२	३/३

भांगा ९ वां १८ वां २१ वां ३० वां ३९ वां ४२ वां ४५ वां ४८ वां ४९ वां नफा।

११ आंक एक इग्यारह को-भांगा उपजे नव

एक करण एक जोग सुं कहेणा-१ करूं नहीं मनसा, २ करुं नहीं वायसा, ३ करुं नहीं कायसा ४ कराउं नहीं मनसा, ५ कराउं नहीं वायसा, ६ कराउं नहीं कायसा, ७ अणुमोदुं नहीं मनसा, ८ अणुमोदुं नहीं वायसा, ९ अणुमोदुं नहीं कायसा।

१२ आंक एक बारहको-भांगा उपजे नव; एक करण दोय जोग सें कहणा-१ करूं नहीं मनसा कायसा, २ करुं नहीं मनसा कायसा, ३ करूं नहीं वायसा कायसा, ४ कराउं नहीं मनसा वायसा, ५ कराउं नहीं मनसा कायसा, ६ कराउं नहीं वायसा कायसा, ७ अणुमोदुं नहीं मनसा वायसा, ८ अणुमोदुं नहीं मनसा कायसा, ९ अणुमोदुं नहीं वायसा कायसा।

१३ आंक एक तेरह को-भांगा उपजे तीन एक करण तीन जोग से कहेणा-१ करुं नहीं मनसा वायसा कायसा, २ कराउं नहीं मनसा

वायसा कायसा, ३ अणमोदुं नहीं मनसा वायसा कायसा। [illegible]

२१ आंक एक इकवीसको भांगा उपजे नव, दोय करण एक जोगसे कहेणा—१ करुं नहीं कराउं नहीं मनसा, २ करुं नहीं कराउं नहीं वायसा, ३ करुं नहीं कराउं नहीं कायसा, ४ करुं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा, ५ करुं नहीं अणुमोदुं नहीं वायसा, ६ करूं नहीं अणमोदुं नहीं कायसा, ७ कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा, ८ कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं वायसा, ९ कराउं नहीं अणमोदुं नहीं कायसा।

(२२) आंक एक बावीस को-भांगा उपजे नव; दोय करण दोय जोगसे कहेणा-१ करूं नहीं कराउं नहीं मनसा वायसा, २ करूं नहीं कराउं नहीं मनसा कायसा, ३ करूं नहीं कराउं नहीं वायसा कायसा, ४ करूं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा वायसा, ५ करूं नहीं अणुमोदुं

नहीं मनसा कायसा, ६ करूं नहीं अणुमोदुं नहीं वायसा कायसा, ७ कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा वायसा, ८ कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा कायसा, ९ कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं वायसा कायसा।

२३ आंक एक तेवीस को-भांगा उपजे तीन, दोय करण तीन जोगसे कहेणा-१ करूं नहीं कराउं नहीं मनसा वायसा कायसा, २ करूं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा वायसा कायसा, ३ कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा वायसा कायसा।

३१ आंक एक एकतीस को-भांगा उपजे तीनः तीन करण एक जोगसे कहेणा-१ करूं नहीं कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा, २ करूं नहीं कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं वायसा, ३ करूं नहीं कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं कायसा।

३२ आंक एक बत्तीस को-भांगा उपजे तीन.

तीन करण दोय जोगसे कहेणा-१ करुं नहीं कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा वायसा; २ करुं नहीं कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा कायसा; ३ करुं नहीं कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं वायसा कायसा।

३३ आंक एक तेत्रीस को-भांगो उपजे एक, तीन करण; तीन जोगसे कहेणा-१ करुं नहीं कराउं नहीं अणुमोदुं नहीं मनसा वायसा, कायसा।

१-११ का (१) करण १ योग से कहना चाहिए और भङ्ग ६ होते हैं। जैसेकि करूं नहीं मनसा १, करूं नहीं वयसा २, करुं नहीं कायसा ३, कराऊं नहीं मनसा ४, कराऊं नहीं वयसा ५, कराऊं नहीं कायसा ६, अनुमोदूं नहीं मनसा ७, अनुमोदूं नहीं वयसा ८, अनुमोदूं नहीं कायसा ६।

इन नव भाङ्गों की ८१ सेरियें (रप्या)

(भेद) होती हैं; जिस में प्रत्याख्यान करने वाले की नव सेरी वन्ध होजाती है। ७२ खुली रहती हैं इस का वोध यन्त्र से कीजिये।

करु नहीं मनसा	...	१	०	०	०	०	०	०	०	०
करु नहीं वयसा	..	०	१	०	०	०	०	०	०	०
करुं नहीं कायसा	...	०	०	१	०	०	०	०	०	०
कराउं नहीं मनसा	..	०	०	०	१	०	०	०	०	०
कराऊं नहीं वयसा	...	०	०	०	०	१	०	०	०	०
कराऊं नहीं कायसा	...	०	०	०	०	०	१	०	०	०
अनुमादूं नहीं मनसा	...	०	०	०	०	०	०	१	०	०
अनुमादूं नहीं वयसा	...	०	०	०		०	०	०	१	०
अनुमादूं नहीं कायसा	..	०	०	०	०	०	०	०	०	१

प्रत्येक २ भाङ्ग में एक सेरी वन्ध होती है, आठ सेरीये खुली रहती हैं और सर्व=१ सेरियों में नव तो रुक जाती हैं, ७२ खुली रहती हैं, अपितु जो नव सेरीयें रुक जाती हैं वे यह हैं:—

१ । ११ । २१ । ३१ । ४१ । ५१ । ६१ । ७१ । ८१ ॥ खुली ७२ जैसेकि-२ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ६ । १० । ० । १२ । १३ । १४ । १५ । १६ । १७ । १८ । १६ । २० । ० । २२ । २३ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २६ । ३० । ० । ३२ । ३३ । ३४ । ३५ । ३६ । ३७ । ३८ । ३६ । ४० । ० । ४२ । ४३ । ४४ । ४५ । ४६ । ४७ । ४८ । ४६ । ५० । ० । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ । ५८ । ५६ । ६० । ० । ६२ । ६३ । ६४ । ६५ । ६६ । ६७ । ६८ । ६६ । ७० । ० । ७२ । ७३ । ७४ । ७५ । ७६ । ७७ । ७८ । ७६।८०।०। इस प्रकार ७२ सेरी खुली रहती है । ६—नव रुक जाती हैं। पृष्ठ १४४ के यंत्र में देखो

यह एकादश अङ्क का विवर्ण किया गया ।

किन्तु-द्वादशवें अङ्क का विवरण पूर्ण हुआ है अपितु नव भाङ्ग इस प्रकार उच्चारने चाहिये। यथा—

अङ्क १२ का भाङ्ग ६-१ करण २ योग से कहने चाहिए, करूं नहीं मनसा वयसा १, करूं नहीं मनसा कायसा २, करूं नहीं वयसा कायसा ३, कराऊं नहीं मनसा वयसा ४, कराऊं नहीं मनसा कायसा ५, कराऊं नहीं वयसा कायसा ६, अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा ७, अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा ८, अनुमोदूं नहीं वयसा कायसा ६। एवं ६॥

३-अङ्क एक १३ का भाङ्ग ३—एक १ करण ३ योग से कहना चाहिए। करूं नहीं मनसा वयसा कायसा १, कराऊं नहीं मनसा वयसा कायसा २, अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा कायसा ३, एवं ३. भांगे त्रयोदशवें अङ्कों के भाङ्गों की २७ सेरीयें [मार्ग] हैं जिस में नव

तो रुक जाती है १८ खुली रहती हैं और एक भाङ्गे में तीन सेरीयें रुकती है ६ खुली रहती हैं जैसे कि—

१।२।३।१३।१४।१५।२५।२६।२७। एवं ६ रुकी। खुली सेरी १८ हैं जैसेकि—

०।०।०।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।०।०।०।१६।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४।०।०।०॥

यह सर्व १८ सेरी खुली रहती हैं इस प्रकार त्रयोदशवें अङ्क का विवर्ण पूर्ण हुआ और यह सर्व विवर्ण यन्त्र से देखिये।

करण १	योग ३	से १	से २	से ३	से ४	से ५	से ६	से ७	से ८	से ९
करूं नहीं	मनसा वयसा कायसा	१	१	१	०	०	०	०	०	०
कराऊं नहीं	मनसा वयसा कायसा	०	०	०	१	१	१	०	०	०
अनुमोदूं नहीं	मनसा वयसा कायसा	०	०	०	०	०	०	१	१	१

४—अङ्क एक २१ का भाङ्गे ६-दो करण एक योगसे कहने चाहिए जैसेकि करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा १, करूं नहीं कराऊं नहीं वयसा २,करूं नहीं कराऊं नहीं कायसा ३, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा ४, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा ५. करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ६. कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा ७. कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा ८. कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ६ ॥ एवं ६ ॥

एकविंशति के अङ्क के ६ भङ्ग हैं. ८१ सेरीयें हैं जिसमें एक भाङ्गे की ६ सेरीयों में २ रुक जाती हैं. ७ खुली रहती हैं, सर्व भङ्गों की १८ सेरी रुक जाती हैं ६३ खुली रहती हैं जिसमें १८ रुकी सेरीयें यह हैं –

१ ३ ११।१४।२१ २४।२८ ३४।३८ ४४।४८ ५४।५८ ६१ ६८।७१।७८।८१ एवं १८

सुली. सेरीये ६३ यह हैं—

० । २ । ३ । ० । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । ० । १२ । १३ ।
० । १५ । १६ । १७ । १८ । १९ । २० । ० । । २२ । २३ । ० ।
२५ । २६ । २७ । ० । २९ । ३० । ३१ । ३२ । ३३ । ० । ३५ ।
३६ । ३७ । ० । ३९ । ४० । ४१ । ४२ । ४३ । ० । ४५ । ४६ ।
४७ । ० । ४९ । ५० । ५१ । ५२ । ५३ । ० । ५५ । ५६ । ५७ । ० ।
५९ । ६० । ० । ६२ । ६३ । ६४ । ६५ । ६६ । ६७ । ० । ६९ ।
७० । ० । ७२ । ७३ । ७४ । ७५ । ७६ । ७७ । ० । ७९ । ८० । ० ॥

एवं ६३ । यह सर्व विवर्ण यन्त्र से देखिये ॥

करूं नहीं कराऊं नहीं	मनसा	१	०	०	१	०	०	०	०	०
करूं नहीं कराऊं नहीं	वयसा	०	१	०	०	१	०	०	०	०
करूं नहीं कराऊं नहीं	कायसा	०	०	१	०	०	१	०	०	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा	१	०	०	०	०	०	१	०	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा	०	१	०	०	०	०	०	१	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	कायसा	०	०	१	०	०	०	०	०	१
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा	०	०	०	१	०	०	१	०	०
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा	०	०	०	०	१	०	०	१	०
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	कायसा	०	०	०	०	०	१	०	०	१

खुली. सेरीये ६३ यह हैं—

०।२।३।०।५।६।७।८।९।१०। ०।१२।१३।
०।१५।१६।१७।१८।१९।२०।०। । २२। २३ ।०।
२५ ।२६।२७।०। २९।३०। ३१।३२। ३३।०।३५।
३६।३७।०।३९।४०।४१।४२।४३ ।०।४५।४६।
४७।०।४९।५०।५१।५२।५३।०।५५।५६।५७।०।
५९।६०।०।६२।६३। ६४।६५।६६। ६७।०। ६९।
७०।०।७२।७३।७४।७५।७६।७७।०।७९ ।८०।०॥

एवं ६३। यह सर्व विवर्ण यन्त्र से देखिये॥

करूं नहीं कराऊं नहीं	मनसा	१	०	०	१	०	०	०	०	०
करूं नहीं कराऊं नहीं	वयसा	०	१	०	०	१	०	०	०	०
करूं नहीं कराऊं नहीं	कायसा	०	०	१	०	०	१	०	०	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा	१	०	०	०	०	०	१	०	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा	०	१	०	०	०	०	०	१	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	कायसा	०	०	१	०	०	०	०	०	१
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा	०	०	०	१	०	०	१	०	०
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा	०	०	०	०	१	०	०	१	०
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	कायसा	०	०	०	०	०	१	०	०	१

इस प्रकार २१ वें अङ्क के भाङ्गों का विवरण पूर्ण हुआ।

५—अङ्क एक २२ का भाङ्ग ६। दो करण दो योग से कहने चाहिए। करूं नहीं कराउं नहीं मनसा वयसा १, करू नहीं कराउं नहीं मनसा कायसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं वयसा कायसा ३, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा ४, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा ५, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा कायसा ६, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा ७, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा ८, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा कायसा ६। एवं॥

२२ वें अङ्क के ६ भङ्ग—नव सेरी हैं। सर्वसेरीयें ८१ हैं, किन्तु एक भङ्ग की नव सेरीयों में से ४ रुकी और ५ खुली रहती हैं इस गणना के अनुसार नव भाङ्गों की ३६ सेरीयें रुक जाती हैं, ४५ खुली रहती हैं। अतः ३६ रुकी सेरीयें यह हैं--

१।२।४।५।१०। १२ ।१३। १५।२०। २१।२३।२४। २८।२६।३४।३५।३७।३६।४३।४५।४७। ४८।५३। ५४।५८।५६।६१।६२।६७।६६।७०।।७२।७७।७८। ८०।८१। इस प्रकार यह ३६ सेरीयें रुकी हैं और ४५ खुली सेरीयें निम्न लिखितानुसार हैं।

०।०।३।०।०।६। ७।८।६।०। ११।०।०। १४।०।१६।१७।१८। १६।०।०। २२।०।०। २५। २६।२७।००।००।३०।३१। ३२। ३३।०।०। ३६। ०।३८।०।४०। ४१। ४२।०।४४।०। ४६।०।०। ४६।५०।५१।५२।०।०।५५।५६।५७।०।०। ६०। ०।०।६३।६४।६५।६६।०।६८।०।०।७१।०।७३। ७४।७५।७६।००।७६।०० ॥ एवं ४५ खुली सेरियें हैं और इसका विवर्ण यन्त्र से देखो—

करू नहीं कराऊं नहीं	मनसा वय	१	१	०	१	१	०	०	०	०
करू नहीं कराऊं नहीं	मनसा काय	१	०	१	१	०	१	०	०	०
करू नहीं कराऊं नहीं	वयसा काय	०	१	१	०	१	१	०	०	०
करू नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वय	१	१	०	०	०	०	१	१	०
करू नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा काय	१	०	१	०	०	०	१	०	१
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा काय	०	१	१	०	०	०	०	१	१
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वय	०	०	०	१	१	०	१	१	०
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा काय	०	०	०	१	०	१	१	०	१
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा काय	०	०	०	०	१	१	०	१	१

इस प्रकार २२ वें अङ्क का विवर्ण पूर्ण हुआ।

६-अङ्क एक २३ का दो करण ३ योग से कहना चाहिए। करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वयसा कायसा १, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा कायसा २, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा कायसा ३

२३ वें अङ्क के ३ भाङ्गे हैं सेरीयें नव [९] हैं। सर्व सेरीयें २७ हैं एक भाङ्गे की सेरीयें ९ हैं उन में ६ रुकी हैं ३ खुली हैं, सर्व भाङ्गों की १८ सेरीयें रुकी हैं, ९ खुली हैं।

रुकी हुई सेरीयें १८ यह हैं-

१। २। ३। ४। ५। ६। १०। ११। १२। १६। १७। १८। २२। २३। २४। २५। २६। २७। एवं १८॥ और खुली सेरीयें ९ यह हैं-

०। ०। ०। ०। ०। ०। ७। ८। ९। ०। ०। ०। १३। १४। १५। ०। ०। ०। १९। २०। २१। ०। ०। ०। ०। ०। ०। एवं ९ सेरियें खुली हैं। देखो यन्त्रमें पूर्ण प्रकारसे।

दो करण	तीनयोग	से १	से २	से ३	से ४	से ५	से ६	से ७	से ८	से ९
करूं नहीं कराऊं नहीं	मनसा वयसा कायसा	१	१	१	१	१	१	०	०	०
करूं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वयसा कायसा	१	१	१	०	०	०	१	१	१
कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वयसा कायसा	०	०	०	१	१	१	१	१	१

इस प्रकार २३ वें अंक का विवरण पूर्ण हुआ।

७—अङ्क एक ३१ का भाङ्ग-३। तीन करण एक योग से कहना। करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा १, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ३। एवं ३॥

३१ वें अङ्क के ३ भङ्ग हैं सर्व सेरियें २७ हैं एक भङ्ग की ६ सेरियें हैं उन्हों में रुकी हुई सेरी ३ हैं, खुली सेरियें ६ हैं, सर्व भङ्गों की रुकी हुई सेरियें ६ हैं। खुली सेरियें १८ हैं। अपितु रुकी हुई सेरियें नव ६ यह हैं। यथा—

१। ४। ७। ११। १४। १७। २१। २४। २७। एवं ६॥ खुली सेरी १८ यह हैं—

०। २। ३। ०। ५। ६। ०। ८। ६।१०। ०। १२। १३। ०। १५। १६। ०। १८। १६। २०। ०। २२। २३। ०। २५। २६। ०। एवं १८ खुली सरीयें हैं॥ देखो यन्त्र में पूर्ण विस्तार से

करण १	जोग १	से. १	से. २	से. ३	से. ४	से. ५	से. ६	से. ७	से. ८	से. ९
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा	१	०	०	१	०	०	१	०	०
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा	०	१	०	०	१	०	०	१	०
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	कायसा	०	०	१	०	०	१	०	०	१

इस प्रकार ३१ वें अङ्क का विवरण पूर्ण हो गया है।

८—अङ्क १।२२ का भाङ्गे-३। तीन करण दो २ योग से कहना चाहिए। करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वयसा १, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा २, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वयसा कायसा ३। एवं ३॥

३२ वे अङ्क के तीन भङ्ग हैं सेरीयें २७ हैं अपितु एक भांगेकी सेरीयें नव हैं उनमें ६ रुकी हुई हैं सर्व भङ्गों की १८ रुकी है ६ खुली हैं अतः रुकी हुई १८ सेरीयें यह हैं—

१।२।४।५।७।८।१०।१२।१३। १५।१६।१८।२०।२१ २३।२४।२६। २७। एवं १८॥ खुली सेरीयें ६ यह हैं-

००।३। ०० ।६।००।६।०।११। ००। १४ ।०।१७ ।०।१६।००।२२। ००।२५।००। यह नव भंगीयें खुली हैं।

इनका यन्त्र में विस्तार से देखो।

११

करण ३	योग २	से. १	से. २	से. ३	से. ४	से. ५	से. ६	से. ७	से. ८	से. ९
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वयसा	१	१	०	१	१	०	१	१	०
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा कायसा	१	०	१	१	०	१	१	०	१
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	वयसा कायसा	०	१	१	०	१	१	०	१	१

इस प्रकार ३२ वें अङ्क का विवर्ण पूर्ण हुआ ।

६—अङ्क ३३ का भङ्ग-१। तीन करण तीन योग से कहना चाहिए। करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं. मनसा वयसा कायसा। एवं १॥

३३ वें अङ्क का भङ्ग एक ही है सेरीयं ६ हैं: सब ही रुकी हुई हैं. खुली कोइ भी नहीं है. जैसे कि—

१।२।३।४।५।६।७।८।६।

इन्हीं में खुली सेरी कोई भी नहीं है

देखो यन्त्र में

करण ३	योग ३	सं १	सं २	सं ३	सं ४	सं ५	सं ६	सं ७	सं ८	सं ९
करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं	मनसा वयसा कायसा	१	१	१	१	१	१	१	१	१

पाठान्तर ।

सबसे थोडा २३ तेवीसवें २५ पचीसवें बोल वाला । तेथकी २२ बाइसवें २४ चोइसवें बोल-वाला असंख्यात गुणा । तेथकी १३ (तेरमें) बोल वाला असंख्यात गुणा । तेथकी १६ उगणीसवें बोल वाला विशेषाहिया । तेथकी ४ चोथे १२ बारहवें बोल वाला अनन्त गुणा । तेथकी ८ आठवें १७ सतरवें बोल वाला विशेषाहिया । तेथकी १ पहेले २ दुजे ३ तीजे ५ पांचवें ६ छट्ठे ७ सातवें १० दसवें ११ ग्यारवें १६ सोलवें बोल वाला विशेषाहिया । तेथकी ६ नवमें १५ पनरवें १८ अठारवें बोल वाला विशेषाहिया । तेथकी १४ चवदवें २० वीसवें २१ इकवीसवें बोल वाला अनन्त गुणा ।

॥ इति पचीस बोलका थोकडा समाप्तम् ॥

प्रश्नोत्तर।

नाम	गति	जात	काय	इन्द्रिय	पर्याय	प्राण	वेद
नारकी	नरक	पञ्चेन्द्रिय	त्रस	पांचोंही	पांच, मन, भाषा भेली	दसोंही	नपुंसक
देवता	देव	„	„	„	„	„	भवनपतिसे दूजा देवलोक तक वेद पावे दोय, तीजा देवलोकसे आव सर्वार्थसिद्ध तक वेद पावे एक पुरुष।
एकेन्द्रिय (५ स्थावर)	तिर्यंच	एकेन्द्रिय	स्थावर आप आपरी	एक स्पर्शेन्द्रिय	च्यार मन, भाषा टली	च्यार स्पर्श इन्द्रिय काय, स्वासो-सास, आयुष्य	नपुंसक
बेइन्द्रिय	„	बेन्द्रिय	त्रस	दोय स्पर्श, रस	पांच मन टल्यो	छव	„
तेइन्द्रिय	„	तेन्द्रिय	„	तीन स्पर्श, रस, घ्राण	„	सात	„

अथ पच्चीस क्रियाका नाम तथा भावार्थ।

१ काइया क्रियाका २ भेद-१ अणुवरय काइया-पापसे नहीं निवर्तने से लागे। २ दुपउत्त काइया-इन्द्रियोंके इष्ट अनिष्ट विषय से नहीं निवर्तने से लागे। या अजतनासे प्रवर्तावे घणा कालसे काया वोसराया बिना, पाछला रख्या हुवा कायाका पुद्गल उसकी क्रिया लागे।

२ अहिगरणीया (अधिकरण) क्रियाका दो भेद—१ संजोजनाहिगरणिया-खड्ग मूशल हथियार कसि कुदाला इत्यादि संग्रह करे उनकी क्रिया लागे। २ निव्वत्तणाहिगरणिया-शस्त्र हथियार वगेरा नया बनावे तथा मरम्मत करावे उनकी क्रिया लागे।

३ पाउसिया क्रियाका दो भेद—

१ जीव पाउसिया-जीवपर द्वेष करनेसे

लागे तथा मत्सर परीणाम राखे उसकी क्रिया लागे ।

२ अजीव पाउसिया-अजीवपर द्वेष करे तथा मत्सर परीणाम राखे उसकी क्रिया लागे ।

४ परितावणिया क्रियाका दो भेद-

१ सहत्थ परितावणिया-आप तपे तथा दूसरा ने तपावे उसकी क्रिया लागे ।

२ परहत्थ परितावणीया—दूसरा का हाथसे आपने तथा दूसराने तपावे (परितापणा उपजावे) उसकी क्रिया लागे ।

५ पाणाइ वाइया क्रिया का दो भेद—

१ सहत्थ पाणाइ वाइया—खुद के हाथ से खुद का तथा दूसरे का प्राण हरे उसकी क्रिया लागे ।

२ परहत्थ पाणाइ वाइया-दूसरे के हाथसे खुदका तथा दूसरे का प्राण हरावे उसकी क्रिया लागे. जीवरी हिंसा करे ।

६ अपच्चखाणिया का दो भेद—१ जीव अपच्च-खाणिया २ अजीव अपच्चखाणिया—व्रत पच्चखाण किंचित मात्र पण नहीं करे चोथे गुणस्थान तक लागे।

७ आरम्भिया क्रियाका दो भेद—१ जीव आ-रम्भिया-जीवको आरम्भ वधावे। २ अजीव आरम्भिया-अजीवको आरम्भ वधावे। खेती बाग, बगीचा, मील, कल दूकान, मकान, वगेरा को आरम्भ वधावे उसकी क्रिया लागे।

८ परिग्गहिया क्रियाका दो भेद—

१ जीव परिग्गहिया-घोड़ा, उंठ, बेल, हाथी, दास, दासी, वगेरा को परिग्रह वधावे उसका क्रिया लागे।

२ अजीव परिग्गहिया-धन, आभूषण, कपड़ा मकान वगेराको परिग्रह वधावे उसकी क्रिया लागे।

९ माया वत्तियाका दो भेद—

१ आय भाव वंकणया-अपनी आत्माके वास्ते ठगाई करे व अपनी आत्मा का खोटा भाव छिपावे खोटा आचरण आचारे खोटा लेख लिखे।

२ परभाव वंकणया-परायाके वास्ते ठगाई करे, करावे, खोटा आचरण करे तथा करावे, खोटा लेख लिखे तथा लिखावे।

१० मिथ्या दंसण वत्तियाका दो भेद—

१ उणा इरित मिथ्यादंसण-ओछा, अधिका सदहे तथा परुपे उसको किया लागे।

२ तवाइरित मिथ्यादंसण-विपरीत सदहे तथा परुपे उसको किया लागे।

११ दिट्ठिया कियाका दो भेद—

१ जीव दिट्ठिया-घोड़ा, हाथी, वगेरहने देख कर रागवे या विमराव तो किया लागे।

२ अजीव दिट्ठिया-चित्रामादि आभूषण देख-

कर सरावे या विसरावे तो किया लागे।

१२ पुट्टिया किया का दो भेद-

१ जीव पुट्टिया। २ अजीव पुट्टिया।
जीव अजीव के ऊपर राग द्वेष लाकर
हाथ फेरे तथा खोटा भावसे प्रश्न करे
(सवाल करे)

१३ पाडुचिया कियाका दो भेद-

१ जीव पाडुचिया-जीव का खोटो यच्छे तथा
उसपर इर्षा करे उसकी किया लागे।

२ अजीव पाडुचिया—द्वेष बुद्धिसे अजीवपर
खोटी चिन्तवना करे उसको किया लागे।
बाहिर वस्तुके निमित्त से लागे जैसे-शोभा,
पानग, घर, हाट, इत्यादिकसे अथवा सा-
मान्यनामें राग द्वेष करने से तथा दूसरे
की सम्पदा देखकर इर्षा करनेम।

१४ सामंतावणिवाईया कियाका दो भेद -

१ जाव सामंता णिवाईया २ अजीव सा-

मंतो वणिवाईया-जीव अजीव का समुदाय इकठा करना उसको क्रिया लागे। अपना भला पदार्थ देखकर लोगों आगे प्रशंसा करे याने पोमावतो फिरे तथा अपनी वस्तुने दुसरो सरावे तो राजी हुवे तथा विसरावे तो विराजा हुवे तथा नाटक, मेला, तमाशा, मनुष्यको फांसी देता (चोर मारता) देखे उसको क्रिया लागे।

१५ साहत्थिया क्रियाका दो भेद—

१ जीव साहत्थिया—जीवने खुदरे हाथ से पकड़ कर हणे (मारे) उसको क्रिया लागे।

२ अजीव साहत्थिया—तलवार, बन्दुक, आदि पकड़ कर हणे (मारे) उसको क्रिया लागे।

१६ नेसत्थिया क्रिया उसका दो भेद—

१ जीव नेसत्थिया—जीव में जीव नांखनेसे जैसे वनस्पतिमें पाणी घाले अथवा [illegible]

१ माया वत्तिया-कपटाइसे राग धरे उसकी क्रिया लागे।

२ लोभ वत्तिया-लोभसे राग धरे उसकी क्रिया लागे।

२२ दोष वत्तियाका दो भेद—

१ कोहे—क्रोधसे क्रिया लागे।

२ माणे-मानसे क्रिया लागे।

२३ पउग्ग क्रियाका तीन भेद-१ मण पउग्ग। २ वय पउग्ग। ३ काया पउग्ग। मन वचन कायाका जोगसे कर्म ग्रहण करे याने शुभ अशुभ प्रवर्तावे।

२४ सामुदाणिया क्रियाका तीन भेद-१ अणंतर सामुदाणिया-कालमें छेटी पड़े। २ परंपर सामुदाणिया-काल में छेटी नहीं पड़े। ३ तदुभय सामुदाणिया-कालमें छेटी पड़ जावे और कालमें छेटी नहीं पड़े दोनों साथ। प्रयाग क्रिया द्वारा ग्रहण किया कर्म

सामुदाणीसे-खींच्या उन कर्मों का भेद च्यार तरह से करे-१ प्रकृति पणे,-२ स्थिति पणे, ३ अनुभाग पणे, ४ प्रदेश पणे, दृष्टान्त जैसे-मेदाको आलोय कर लोधो वणायो जव तो प्रयोग क्रिया लागे और पीछे लो-धाने लेकर पेठो, निमकी, खाजा इत्यादिक नाना प्रकार पणे वणाया जव सामुदाणी क्रिया लागे।

(पहेलेके समय भेद करे तव अनन्तर क्रिया, दूजे समय तीजे समय भेद करे तव परंपर क्रिया)।

२५-इरियावहिया क्रिया-वीतरागी तथा केवली ने पहेले समय में लागे दूजे समय वेदे तीजे समय निर्भरे। ◎

इति पचीस क्रिया समाप्तम्।

◎(नोट)—इरियावहिया क्रिया शुभ, बाकी चावीस क्रिया शुभ अशुभ दोनों ही है।

अंतिम मंगलिकश्लोक—

शिवमस्तु सर्वजगतः,
परहित निरता भवन्तु भूतगणाः ।
दोषाः प्रयान्तु नाशं,
सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥

दोहा—

अक्षरपद हीणो अधिक, भूलचूक कहीं होय ।
अरिहंत आतम साखसे, मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥

इस पच्चीस बोलके थोकड़े में किसी जगह आगम सूत्र विरुद्ध आगया हो या दृष्टि दोपसे प्रूफ सुधारने में काना मात्रा न्यूनाधिक हो गया हो तो सज्जन सुधार कर पढने की कृपा करें और हमे सूचना दें जिससे दूसरी आवृत्ति में सुधार दिया जाय यही प्रसिद्ध कर्त्ताकी विनति है ॥ इति शुभं भवतु ॥